षूव तमासा

(खूब तमाशा)

रचयिता

गोपाल मिश्र

(रचनाकाल सन् 1689 के आस-पास)

संकलन-संपादन

डॉ. शेषनारायण चंदेले

छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी

BVP - 2251
30/8/18

6/6

षूब तमासा

(खूब तमाशा)

रचयिता

गोपाल मिश्र

(रचनाकाल सन् 1689 के आस-पास)

संकलन-संपादन

डॉ. शेषनारायण चंदेले

छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी

छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी के तत्वावधान में जनसंपर्क विभाग, छत्तीसगढ़ शासन की आर्थिक सहायता से प्रकाशित।

संस्करण	-	2017
आई.एस.बी.एन.	-	978-93-82313-32-8
पुस्तक का नाम	-	षूव तमासा (खूब तमाशा) रचयिता- गोपाल मिश्र (रचनाकाल सन् 1689 के आस-पास) संकलन-संपादन एवं शतकों का प्रतिपाद्य लेखन - डॉ. शेषनारायण चंदेले
मूल्य	-	रु. 240/- (अक्षरी रुपये दो सौ चालीस मात्र)
सर्वाधिकार	-	प्रकाशक के अधीन
प्रकाशक	-	छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय परिसर, सामुदायिक भवन के सामने, रायपुर - 492010 छत्तीसगढ़
कम्प्यूटर टंकण एवं पृष्ठ सज्जा	-	डॉ. शेषनारायण चंदेले
आवरण	-	गुलाबधर साहू, रायपुर
मुद्रक	-	महावीर ऑफसेट प्रिंटर्स, रायपुर

'खूब तमाशा' कृति को जब श्री गोपाल मिश्र जी ने रचा तब इसे 'षूव तमासा' लिखा। यह रचना संवत् 1746 (सन् 1689) के आसपास लिखी गई। उस दौर में आज की वर्णमाला के कई अक्षरों का उपयोग पृथक होता था। यथा-वर्तमान के 'ख' के स्थान पर उस दौर में 'ष' लिखा व उच्चारित किया जाता था। इसी तरह 'जय' के स्थान पर 'जै', 'ण' के स्थान पर 'न', 'ब' के स्थान पर 'व', 'श' के स्थान पर 'स' आदि। इसलिए अकादमी ने इस कृति का मूल शीर्षक 'षूव तमासा' लिखा और उसके नीचे कोष्ठक में 'खूब तमाशा' उल्लेखित किया गया।

आदिकवि गोपाल मिश्र जी की मूल कृति में कतिपय अक्षरों का उपयोग ऊपर उल्लेखित अनुसार हुआ है। इन शब्दों के अलावा भी अनेक शब्द हैं, जो उस दौर में पृथक लिखे और उच्चरित किये जाते थे। छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी द्वारा प्रकाशित इस 'खूब तमाशा' कृति में शामिल 11 शतकों में आदिकवि गोपाल मिश्र जी की पांडुलिपि के मूल स्वरूप को सहेजने का प्रयास किया गया है। पाठकों, शोधकर्ताओं, लेखकों, विद्यार्थियों से इस कृति के संबंध में अपने विचारों से अकादमी को अवगत कराने का आग्रह है।

डॉ. रमन सिंह
मुख्यमंत्री
Dr. Raman Singh
Chief Minister

DO.No. ..../ 2017
DATE : 25/05/2017

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी द्वारा छत्तीसगढ़ हिन्दी गजेटियर भाग–1 (बस्तर भूषण, अष्टराज, अम्बोज, झारखंड झंकार) और छत्तीसगढ़ हिन्दी गजेटियर भाग–2 (दुर्ग दर्पण, बिलासपुर वैभव, रायपुर रश्मि) के साथ पंडित सुन्दरलाल शर्मा समग्र, ठाकुर प्यारेलाल सिंह समग्र, अथ खूब तमाशा, विष्णु महायज्ञ स्मारक ग्रंथ, छत्तीसगढ़ (सूबा या प्रांत, सरगुजा रियासत रिपोर्ट, मध्ययुगीन राजपूत कालीन छत्तीसगढ़) शीर्षक से पुस्तकों का पुनः प्रकाशन किया जा रहा है।

छत्तीसगढ़ के इतिहास, साहित्य, संस्कृति और ज्ञान–विज्ञान को सुव्यवस्थित रुप से संजोने और सहेजने का प्रशंसनीय कार्य छत्तीसगढ़ हिन्द ग्रंथ अकादमी द्वारा लगातार किया जा रहा है। मुझे आशा है कि अकादमी द्वारा प्रकाशित किए जा रहे ग्रंथ, पांडुलिपियां और पुस्तकें हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए गौरवशाली विरासत साबित होंगी। पुस्तकों के पुनःप्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं।

भवदीय

(डॉ. रमन सिंह)

प्रेम प्रकाश पाण्डेय
मंत्री
राजस्व एवं आपदा प्रबंधन, पुनर्वास, उच्च शिक्षा,
तकनीकी शिक्षा एवं जनशक्ति नियोजन, विज्ञान
एवं प्रौद्योगिकी विभाग, छत्तीसगढ़ शासन

फोन (मंत्रालय) : 0771-2510321, 2221321
निवास : बी-1, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.)
फोन (नि.) : 0771-2446440
निवास : सेक्टर-9, सड़क नं.-11 बंगला नंबर - 1, भिलाई
फोन : 0788-2242590

संदेश

भारत राज्यों का एक संघ है। एक राष्ट्र है। यहाँ राज्यों की अपनी-अपनी गौरवशाली सांस्कृतिक विविधता के बीच उनकी बोलियाँ, उपभाषाएँ, भाषाएँ विद्यमान और प्रचलित हैं। इन सब में हिन्दी देश की सर्वमान्य संपर्क भाषा है। यह भारत की राज-काज की भाषा अर्थात् राजभाषा भी है। किसी भी भाषा की सर्वमान्यता का कारण केवल संवैधानिक बंधन नहीं होता, बल्कि उससे जुड़ी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, पारंपरिक, साहित्यिक, शैक्षणिक पृष्ठभूमि की एक लंबी यात्रा भी होती है। छत्तीसगढ़ देश का ऐसा आदिवासी बहुल क्षेत्र है, जिसके भाषायी परिदृश्य में 'हिन्दी' और 'छत्तीसगढ़ी' साथ-साथ कदम बढ़ाते हुए एक समृद्ध भाषा-समाज गढ़ते हैं। विविध उपसंस्कृतियों और भाषा-बोलियों के साथ छत्तीसगढ़ का समन्वय अद्भुत है।

नवगठित छत्तीसगढ़ राज्य ज्यों-ज्यों प्रगति पथ पर अग्रसर हो रहा है, देश-दुनिया अब इस क्षेत्र को समझने-बूझने के लिए उत्सुक हो रही है। पाठ्य-पुस्तकों के साथ-साथ प्रदेश के समृद्ध ऐतिहासिक-सांस्कृतिक एवं साहित्यिक विरासतों को प्रकाशित करने का निर्णय छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी ने लिया है। ब्रिटिशकालीन प्रकाशित हिन्दी गजेटियरों के पुनः प्रकाशन से अपने अतीत को जानने का मार्ग प्रशस्त होगा। सत्रहवीं शताब्दी में श्री गोपाल मिश्र रचित ' खूब तमाशा' से हिन्दी साहित्य में छत्तीसगढ़ के अवदान से पाठक परिचित होंगे। प्रदेश के रत्न पं. सुंदरलाल शर्मा व ठाकुर प्यारेलाल सिंह की रचनाओं और विचारों का संकलन भी प्रकाशित हो रहा है। छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी का सतत्

प्रयास है कि वह विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा में अच्छी पाठ्यपुस्तकें और पाठ्यक्रम आधारित संदर्भ पुस्तकें उपलब्ध करा सके। विषय–विशेषज्ञों के सहयोग से हिन्दी में मानक पुस्तकों का सृजन हो, यह प्रयास अकादमी का रहा है। प्रत्येक पुस्तक का प्रकाशित होना राज्य के विकास के लिए आगे बढ़ाया गया एक नया कदम होता है। उच्च शिक्षा विभाग के अंतर्गत कार्यरत छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी का प्रयास राज्य और देश के शैक्षणिक विकास को समृद्ध करना है। उच्च शिक्षा संस्थाओं से जुड़े प्राध्यापकों और विद्वानों का मार्गदर्शन अकादमी को मिलता रहेगा, इस आशा के साथ।

प्रेम प्रकाश पाण्डेय
अध्यक्ष
छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी

प्रकाशकीय

छत्तीसगढ़ क्षेत्र की ऐतिहासिक–भौगोलिक, सांस्कृतिक भिन्नताएं एक पृथक राज्य निर्माण का आधार बनी। ऐसा माना जाता रहा है कि इस क्षेत्र का विशेष ऐतिहासिक महत्व नहीं है जबकि पुरापाषाण काल से स्वतंत्रता के आंदोलन तक के ऐतिहासिक स्रोत प्राप्त होते हैं। यह प्रमाणित होता है कि छत्तीसगढ़ केवल प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण मात्र भौगोलिक क्षेत्रफल नहीं है, यहां पर ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं बौद्धिक संपदा भी प्रचुर मात्रा में हैं। रामायण काल में भगवान श्रीराम के वनगमन मार्ग की चर्चा सौ वर्ष से अधिक समय से हो रही है। प्रदेश का बड़ा भू–भाग बौद्ध, जैन व सनातन ब्राह्मण धर्म के अनेक पंथों के पुरातात्विक स्रोतों से आच्छादित है। ब्रिटिशकाल में इस क्षेत्र की विशेषताओं को लिपिबद्ध करने का महती कार्य हुआ। यह विषय अवश्य है कि छत्तीसगढ़ की इन विशेषताओं को देश–दुनिया के समक्ष व्यवस्थित एवं सही रूप में प्रस्तुत नहीं किया जा सका। यह अत्यंत गौरव का विषय है कि हिन्दी भाषा के भक्तियुग में छत्तीसगढ़ के रतनपुर राज्य के कवि पं. गोपाल मिश्र ने नीतिश तक की रचना 'अथ खूब तमाशा' नामक पुस्तक के रूप में की। छत्तीसगढ़ साहित्य और भाषा के क्षेत्र में सदैव अग्रणी रहा। जब हिन्दी व्याकरण की रचना नहीं हुई थी, उसके पूर्व 1890 में हीरालाल काव्योपाध्याय ने छत्तीसगढ़ी व्याकरण को लिपिबद्ध कर दिया था। मावली प्रसाद श्रीवास्तव, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, पं. सुंदरलाल शर्मा, माधवराव सप्रे जैसे अनके विद्वानों ने राष्ट्रीय स्तर की रचनाएं की हैं।

छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी को सत्रहवीं शताब्दी में लिखित ग्रंथ 'अथ खूब तमाशा' की 1915 में प्रकाशित पुस्तक की प्रति श्री नंदकिशोर शुक्ल से प्राप्त हुई। उक्त पुस्तक के प्रकाशन के प्रस्ताव को मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने सहर्ष सहमति दी। प्रक्रिया के दौरान डॉ. शेषनारायण चंदेले जी से भेंट हुई। पं. गोपाल मिश्र पर उन्होंने शोध किया है। उनके सहयोग से 'अथ खूब तमाशा' का प्रकाशन सुगम हो सका।

छत्तीसगढ़ के इस दुर्लभ महत्वपूर्ण साहित्य के पुनर्प्रकाशन से वर्तमान एवं भावी पीढ़ी को अपने साहित्यिक इतिहास को समझने में आसानी होगी। सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि इनका अध्ययन करने से आने वाली पीढ़ियों को अपने इतिहास–संस्कृति पर गर्व होगा। उन लोगों के भ्रम दूर होंगे जो छत्तीसगढ़ को सदियों से पिछड़ा मात्र भौगोलिक क्षेत्र मानते हैं। इस संबंध में श्री गोपाल मिश्र लिखित 1915 में प्रकाशित 'अथ खूब तमाशा' पुस्तक की भूमिका में लाला धरिणधार ने अपने विचार व्यक्ति किए थे, जो आज भी प्रासंगिक हैं –

"प्रायः लोग कहा करते हैं कि छत्तीसगढ़ निपट जंगली मुल्क (वनप्रान्त) है और वहां के रहवासी महामूर्ख और असभ्य हैं। क्या ऐसे समझ के लोगों से देश

भाईयों के प्रति प्रीति एवं सहानुभूति की आशा की जा सकती है? जिनकी ऐसी ध ारणा है वे बड़ी भूल व भ्रम में पड़े हुए हैं। ऐसे लोगों को उचित है कि छत्तीसगढ़ के आधुनिक कवियों और भूतकालीन व्युत्पन्नमति कवि गोपालदास प्रभृति की कृतियों का निरीक्षण कर अपना भ्रम निवारण करें। छत्तीसगढ़ केवल मात्र वनाचरों का निवास स्थान नहीं है। पराक्रमी, बलशाली, वीरयोद्धा, अच्छे-अच्छे विद्वान लेखक, सुकवि और वदान्य धर्मात्मा तथा पुराण प्रसिद्ध भक्त राजे-महाराजे इस छत्तीसगढ़ में हुए हैं।''

छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी छत्तीसगढ़ प्रदेश की दुर्लभ ऐतिहासिक पांडुलिपियों का पुनर्प्रकाशन कर उन्हें संरक्षित करने का कार्य कर रही है। इस कार्य की कड़ी में ब्रिटिशकालीन ऐतिहासिक हिन्दी गजेटियरों का दो खंडों में प्रकाशन किया गया है। इन पुस्तकों के अलावा 'पं. सुंदरलाल शर्मा समग्र', 'ठाकुर प्यारेलाल-व्यक्तित्व और विचार' का प्रकाशन भी अकादमी कर रही है। यह संकलन उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों-शोधार्थियों के लिए संदर्भ-ग्रंथ स्वरूप उपयोगी साबित होगा। इस कार्य के लिए वित्तीय व्यवस्था जनसंपर्क विभाग के माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह जी ने सहजता से कर दी। प्रदेश के धरोहरों को सहेजने की उनकी उत्कंठा का यह प्रत्यक्ष प्रमाण है। हम उनके प्रति आभारी हैं।

शशांक शर्मा
संचालक
छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी

जीवन परिचय

आदि कवि गोपाल मिश्र

हिन्दी काव्य-परम्परा में छत्तीसगढ़ के आदि कवि गोपाल मिश्र की प्रमाणिक जीवनी कहीं उपलब्ध नहीं है। उनका जन्म-स्थान, जन्म-काल एवं निधन-काल सर्वथा अविदित है। उनकी जाति के विषय में भी कोई अंत: साक्ष्य उपलब्ध नहीं होता। अपने सम्पूर्ण जीवन-काल में वे कहाँ-कहाँ रहे, यह भी कहना कठिन है।

गोपाल कवि के पिता का नाम गंगाराम था तथा उनके पुत्र का नाम माखन था। यह तथ्य अंत: साक्ष्य से प्रमाणित होता है। ''जैमिनि अश्वमेध' में यह पद्य-खंड उपलब्ध होता है -

पूरन पुन्य प्रताप सुगंगाराम के,
तिन नंदन गोपाल रसिक हरिनाम के।
तिन सुत माखन कहिय हेत सुन लीजिये,
अश्वमेध इतिहास कथा करि दीजिये।। [१]

गोपाल 'चन्द्र' या गोपाल 'दास'

गोपाल के साथ 'चंद्र' का प्रयोग सर्वप्रथम स्व. लोचन प्रसाद जी पाण्डेय ने अक्टूबर सन् १९१६ ई. की मासिक 'हितकारिणी' पत्रिका (जबलपुर) में ''इतिहास प्रेमियों के जानने योग्य बातें'' शीर्षक लेख के अन्तर्गत किया है। गोपाल कवि पर इससे पूर्व भी उन्होंने दो-तीन लेख 'हितकारिणी' व 'इन्दु' पत्रिका में प्रकाशित कराये हैं; किन्तु उनमें यह प्रयोग उपलब्ध नहीं होता। जान पड़ता है, 'खूब तमाशा' के अध्ययन के बाद ही उन्होंने 'चन्द्र' का प्रयोग किया है। खूब तमाशा की जो प्रति उन्हें देखने में आयी, उसमें उन्होंने कुछ टिप्पणियों के साथ तारीख लिखकर हस्ताक्षर

किये हैं। इस प्रति के विनोद शतक के सातवें छन्द में यह पंक्ति उपलब्ध है-

कहत गोपाल चंद्र चंद्र के सोहाइए

पं. लोचनप्रसाद जी पाण्डेय ने गोपाल चन्द्र शब्द को चिह्नित किया है। इससे अनुमान होता है कि यही अंश देखने के पश्चात् उन्होंने गोपाल के साथ 'चन्द्र' का प्रयोग किया।

दूसरी, ओर, श्री मावलीप्रसाद जी श्रीवास्तव के पास उपलब्ध 'रामप्रताप' की एक हस्तलिखित प्रति देखंने में आयी, जिसके प्रारंभ में प्रतिलिपिकार ने गोपालदास कृत लिखा है। उस प्रति का लिपिकाल संवत् १८८६ है। स्पष्ट है कि गोपाल के 'दास' का प्रयोग अधिक पुराना है। कवि द्वारा अपने नाम के साथ 'दास' शब्द के प्रयोग का अंत:साक्ष्य भी रामप्रताप में उपलब्ध होता है-

लय भक्ति मौजि गोपालदास [२]

इसी तरह, खूब तमाशा में भी एक स्थान पर 'दास' का प्रयोग हैं-

भज गोपालदास हरिदासहिं खूब तमाशा देखा [३]

खूब तमाशा में उल्लिखित उक्त पंक्ति में 'चंद्र' शब्द का प्रयोग वस्तुत: गोपाल के साथ न होकर स्वतंत्र रूप से चन्द्रमा के अर्थ में हुआ है। बाद में आया हुआ चन्द्र वस्तुत: 'चंद्रिके' शब्द है। अन्य प्रतियों में भी 'चंद्रिके' शब्द का प्रयोग उपलब्ध होता है। इस तरह, 'गोपाल' के साथ 'चन्द्र' न होकर 'दास' का प्रयोग ही ऐतिहासिक है।

जन्म स्थान

गोपाल कवि मूलत: कहाँ के निवासी थे, इस संबंध में विद्वानों के विभिन्न अनुमान हैं। पं. लोचनप्रसाद जी पाण्डेय ने उन्हें मूलत: 'छत्तीसगढ़ी'

माना है। अपना निष्कर्ष देते हुए वे कहते हैं – "उनकी रचनाओं में उर्दू के शब्द स्थान-स्थान पर मिलते हैं। कुछ प्रान्तीय (छत्तीसगढ़ी) शब्दों का भी प्रयोग है, अतः अनुमान किया जा सकता है कि गोपाल कवि प्रवासी नहीं, बल्कि छत्तीसगढ़ के निवासी थे।" स्व. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी ने इस सम्बन्ध में यद्यपि अपना लिखित मंतव्य प्रगट नहीं किया है, किन्तु प्रश्न किये जाने पर उन्होंने गोपाल कवि को प्रवासी स्वीकार किया था। वे उन्हें मूलतः उत्तर प्रदेश का निवासी मानते थे। श्री प्यारेलाल जी गुप्त उन्हें मूलतः छत्तीसगढ़ मानते हैं।

इस विषय में यह तथ्य उल्लेखनीय है। गोपाल कवि ने 'भक्तिचिन्तामणि' तथा 'रामप्रताप' में विवाह-वर्णन के सन्दर्भ में भाजी खिलाने की प्रता का उल्लेख किया है।[४] प्रथम दिन बारात-स्वागत के पश्चात् दूल्हा मंडप-स्पर्श (द्वारचार) कर जनवासा लौट आता है। इसके कुछ ही समय पश्चात् सहेलियों सहित दूलह की भवितव्या 'साली' वहाँ आकर वर का पान या विनोद रूप में 'भाजी' आदि अन्य पदार्थ बलपूर्वक खिलाने का प्रयत्न करती है। इसे छत्तीसगढ़ में 'राती भाजी खिलाना' कहते हैं। यह छत्तीसगढ़ की अपनी प्रथा है। यह तथ्य हमें कवि को छत्तीसगढ़ का निवासी मानने हेतु प्रेरित करता है।

गोपाल कवि के ग्रंथों में यद्यपि छत्तीसगढ़ी भाषा का प्रभाव निरूपित नहीं किया जा सकता, किन्तु छत्तीसगढ़ी के कतिपय शब्द अवश्य उपलब्ध होते हैं। अपने शोध ग्रंथ में इसके दृष्टांत हमने 'भाषा' का अध्ययन करते हुए प्रस्तुत किये हैं।

छत्तीसगढ़ की भौगोलिक स्थिति से गोपाल कवि का अच्छा परिचय था, खूब तमाशा के राज शतक में यह देखा जा सकता है। वे छत्तीसगढ़ के आसपास के राज्यों, प्रमुख नगरों तथा निकटवर्ती राज्य के इतिहास से भी परिचित थे। खूब तमाशा में मंडलागढ़ के समसामयिक राजनैतिक घटनाचक्रों का उल्लेख मिलता है। छत्तीसगढ़ के तीर्थ स्थलों के प्रति उनकी श्रद्धा उल्लेखनीय है।

इन समस्त तथ्यों के आधार पर हमारा अनुमान है कि गोपाल कवि जन्मत: छत्तीसगढ़ के हैं। संभव है, इनके पूर्वज उत्तर प्रदेश से आये हों और उनका वंश कई पीढ़ियों से यहीं निवास कर रहा हो।

जन्मकाल

गोपाल कवि की उपलब्ध प्रथम रचना 'खूब तमाशा' का प्रारंभ संवत् १७४६ में हुआ था, यह अंत: साक्ष्य से प्रमाणित है। इस ग्रंथ की भाषा तथा अभिव्यक्त विचारों में कवि की प्रौढ़ता का परिचय मिलता है। स्व. लोचनप्रसाद जी पाण्डेय ने इस रचना के आधार पर कवि की उम्र रचना के प्रारंभ काल में ३० वर्ष मानी है।[५]

उल्लेखनीय है कि 'जैमिनि अश्वमेघ' की रचना में कवि ने अपने पुत्र माखन की प्रेरणा स्वीकार की है। इस ग्रंथ का प्रारंभ संवत् १७५२ में हुआ। पिता को किसी ग्रंथ की रचना हेतु प्रेरित करने वाले पुत्र की उम्र कम से कम २० वर्ष तो अवश्य होनी चाहिए, जिसका परामर्श पिता ने गंभीरतापूर्वक स्वीकार किया। स्व. लोचनप्रसाद जी ने 'खूब तमाशा' का प्रारंभ संवत् १७४७ में माना है, अत: उनके अनुसार 'जैमिनि अश्वमेध' की रचना ३५ वर्ष की उम्र में की गयी। पिता-पुत्र की उम्र में केवल १५ वर्ष का अंतर अस्वाभाविक जान पड़ता है। स्व. लोचनप्रसाद जी ने अपने अनुमान पर वस्तुत: कोई दृढ़ता प्रगट नहीं की है। उन्होंने कवि की और अधिक उम्र होने की संभावना स्वीकार की है।

इस संबंध में एक महत्त्वपूर्ण तथ्य उल्लेखनीय है। माखन कवि ने अपने द्वारा लिखे 'छंद विलास' में चूणामणि चानक शब्द के साथ पिता का नामोल्लेख किया है।[६]

गोपाल कवि के नाम के साथ 'चानक' शब्द का व्यवहार 'खूब तमाशा' के अतिरिक्त अन्य किसी ग्रंथ में उपलब्ध नहीं होता। 'चानक' ('चाणक्य' का विकृत रूप) संभवत: राजकीय 'पद' था, जिसका प्रयोग गोपाल कवि रत्नपुर के राजाश्रय-काल में करते रहे। रत्नपुर छोड़ने पर उन्होंने अपने ग्रंथों में इस उपाधि का उल्लेख नहीं किया है। इससे यह अनुमान होता

है कि माखन कवि ने 'छंद विलास' की रचना संवत् १७४६ व १७५२ के मध्य की। इस आधार पर माखन की उम्र संवत् १७४६ में ही २० वर्ष से कम नहीं होनी चाहिए। पिता तथा प्रथम पुत्र की उम्र में यदि २० वर्ष का अन्तर स्वाभाविक माना जाय, तो गोपाल कवि की उम्र संवत् १७४६ में ही ४० वर्ष की रही होगी। इस तरह हमारे मतानुसार गोपाल कवि का जन्म संवत् १७०६ के आसपास निर्धारित होता है।

निधनकाल

उक्त मान्यता के अनुसार 'भक्तिचिन्तामणि' की रचना उन्होंने लगभग ६५ वर्ष की उम्र में की। स्मरणीय है कि 'भक्तिचिन्तामणि' की रचना में १२ वर्ष लगे थे, यह अंत: साक्ष्य से प्रमाणित है। 'भक्तिचिन्तामणि' की समाप्ति संवत् १७७१ में हुई थी। इस आधार पर भक्तिचिन्तामणि की समाप्ति के पश्चात् 'रामप्रताप' की रचना करते हुए वे कम से कम १० वर्ष अवश्य जीवित रहे होंगे। अत:, उनका निधन ७५ वर्ष की उम्र में संवत् १७८१ के आस-पास संभावित है।

जाति

जाति के सम्बंध में कोई अंत: साक्ष्य नहीं मिलता। गोपाल कवि के लिए 'मिश्र' का प्रयोग सर्वप्रथम १९४१ (सन् १८८४) में 'भक्तिचिन्तामणि' के सम्पादक ने किया। 'भक्तिचिन्तामणि' के मुखपृष्ठ पर 'श्री गोपाल मिश्र' लिखा मिलता है। तत्पश्चात्, स्व. लोचनप्रसाद जी पाण्डेय ने गोपाल कवि को 'मिश्र' कहा है। संभव है, उन्होंने इस संबंध में 'भक्तिचिन्तामणि' के मुखपृष्ठ तथा जनश्रुति का आधार लिया हो। जनश्रुति के अनुसार वे 'मिश्र' थे।

जीवनयापन

गोपाल कवि रत्नपुर के राजाश्रित कवि थे। रत्नपुर वर्तमान समय में छत्तीसगढ़ के बिलासपुर जिले के अन्तर्गत है। यह बिलासपुर से उत्तर दिशा में लगभग १६ मील की दूरी पर स्थित है। हैहयवंशी राजा रत्नदेव ने सन् १०५० के लगभग रत्नपुर की नींव डाली, इस तरह यह लगभग सवा नौ सौ वर्ष पुराना स्थान है। 'खूब तमाशा' में तत्कालीन हैहयवंशी राजा राजसिंह की

प्रशंसा की गयी है। राजा राजसिंह के राज्यकाल के संबंध में एकाधिक मत पाये जाते हैं। बिलासपुर जिले के गजेटियर ने राजा राजसिंह का राज्य-काल सन् १६८१ (अर्थात् संवत् १७४६) से सन् १७१२ (अर्थात् संवत् १७६१) बताया है। बाबू रेवाराम ने सन् १६८१ से सन् १७२० तक राज्य-काल लिखा है। स्व. लोचनप्रसाद पाण्डेय ने सारंगगढ़ के स्वर्गवासी राजा संग्राम सिंह महाराज क्यू.जी.की डायरी में उपलब्ध यह लेख-खंड प्रकाशित किया था, जिससे उनका निधनकाल संवत् १७८१ सिद्ध होता है।

''हैहयवंशी राजा के बंसयोगादी डूबे तक इयाद (याद)रत्नपुर के रायेसीद राजा के दिन में बंसडूब हेहोवंसी के संवत् १७८१ के साल में।'' [७]

राजा राजसिंह का निध्प-काल चाहे जो हो, उनके सिंहासनारूढ़ होने का काल निर्विवाद है। राजा राजसिंह के पिता तखतसिंह ने संवत् १७४५ तक राज्य किया था। तखतसिंह का एक पत्र, जो कार्तिक सुदी ५ संवत् १७४५ को लिखा गया था, श्री प्यारेलाल जी गुप्त ने प्रकाशित कराया है। [८]

इस पत्र में स्पष्टत: श्री राजा तखतसिंह देव लिखा है। इसकी उक्त तिथि तक उनका जीवन-काल और साथ ही राजत्व-काल भी प्रमाणित होता है। खूब तमाशा की रचना यदि आषाढ़ संवत् १७४६ में प्रारंभ हुई, तो इसके पूर्व चैत्र संवत् १७४६ से आषाढ़ संवत् १७४६ के मध्य राजसिंह का राजतिलक हुआ होगा। संभव है, शुभ तिथि होने के कारण चैत्र रामनवमीं ही राजतिलक की तिथि रही होगी। राजा राजसिंह औरंगजेग के समकालीन थे। गोपाल कवि ने इसी राजा के आश्रय में रहकर 'खूब तमाशा' की रचना की।

गोपाल कवि ने 'खूब तमाशा' में जिस निर्भीकता से अपनी बातें रखी हैं, वह दोनों के परस्पर घनिष्ठ संबंध का संकेत करती हैं। यह घनिष्ठ संबंध केवल चार महीनों के सम्पर्क से संभव नहीं है।

कहने का अभिप्राय यह है कि गोपाल कवि रत्नपुर के राजवंश से वर्षों पूर्व सम्बद्ध हो चुके थे। एक स्थान पर कवि ने राजसिंह के स्वभाव को अपने लिये सदा कल्पतरू सा बताया है –

"सबसे सदा कल्पतरु हमको राजसिंह के बाने" [१]

उक्त पंक्ति में 'सदा' शब्द से राजसिंह व गोपाल कवि के दीर्घकालीन संबंध की ध्वनि मिलती है। संभव है, तखतसिंह के काल में भी गोपाल कवि राजाश्रित कवि रहे हों। 'खूब तमाशा' में कवि ने राजा तखतसिंह का नामोल्लेख दो बार किया है।

'खूब तमाशा' के बाद रचित किसी भी ग्रंथ में राजा राजसिंह का नामोल्लेख नहीं मिलता। अवश्य ही, 'रामप्रताप' में रात को बरात में सम्मिलित होने वाले राजाओं में हैहयवंशी का स्मरण किया गया है, किन्तु राजसिंह का नामोल्लेख किसी भी स्थल पर नहीं है। श्री प्यारेलाल जी गुप्त ने एक लेख में किंवदंती का उल्लेख करते हुए कहा है कि गोपाल कवि ने 'शठशतक' नामक एक ग्रंथ औरंगजेब के विरोध में लिखा था, जिसे पढ़कर राजा राजसिंह उत्तेजित होकर औरंगजेब से लोहा लेने तत्पर हो गये थे: किन्तु पीछे उनके हितैषियों द्वारा समझाये जाने पर उनका आवेश शांत हुआ। घटना की समाप्ति यहीं नहीं हो गयी। 'शठ शतक' उत्तेजक होने के कारण नष्ट कर दिया गया। इससे दु:खित होकर गोपाल कवि ने रत्नपुर छोड़ दिया। 'खूब तमाशा' के अतिरिक्त अन्य किसी ग्रंथ में राजा राजसिंह का नामोल्लेख न होना ही जनश्रुति की पुष्टि करता है।

कहा जाता है कि रत्नपुर छोड़कर वे खैरागढ़ चले गये । कांकेर में भी उनके निवास की बात कही जाती है। उल्लेखनीय है कि 'खूब तमाशा' के शतकांत में तथा छन्दों की कुछ पंक्तियों में भी अपने नाम के पूर्व 'चानक' शब्द का प्रयोग किया है। संभव है कि हैहयवंशी राज्य में गोपाल कवि को मिला यह 'पद' रहा हो। 'खूब तमाशा' के बाद अन्य ग्रंथों में इस पद का उल्लेख न होना इस तथ्य की पुष्टि करता है कि 'खूब तमाशा' के बाद रत्नपुर के राजदरबार से इनका संबंध टूट गया। 'जैमिनि अश्वमेध' का खैरागढ़ नरेश कमलनारायण सिंह द्वारा तथा 'भक्तिचिन्तामणि' का कांकेर नरेश श्री नृहरिदेव द्वारा प्रकाशित कराया जाना हमें यह सोचने के लिए प्रेरित करता है

कि संभव है, इन राजाओं ने गोपाल कवि को अपने राज्य से संबंधित जानकर श्रद्धावश उक्त पुस्तकें छपायी हों। यहाँ, एक बात का उल्लेख कर देना आवश्यक है कि 'भक्ति चिंतामणि'की प्रकाशित प्रति में मुखपृष्ठ पर यह लिखा मिलता है, ''श्रीमन्महाराजाधिराज दक्षिण रायपुरान्तर्गत कांकेर राज्यांधिपति श्री क्षत्रिय राजकुलावतंश श्रीमन्नृहरि देव-देव महाराज के आश्रित रतनपुर निवासी कविवर श्री गोपाल मिश्र द्वारा विरचित।''

इसमें गोपाल को राजा नृहरिदेव के आश्रित बताना सर्वथा भ्रामक है; क्योंकि गोपाल कवि का उनके समय तक जीवित रहना असंभव है। राजा नृहरिदेव ने 'भक्तिचिन्तामणि' प्रकाशित करने की आज्ञा श्री विश्वनाथ पाठक को संवत् १९४१ (सन् १८८४) में दी। संभावना इस बात की भी है कि उनका उत्तरकालीन जीवन पुत्र के आश्रय में व्यतीत हुआ हो। 'भक्तिचिन्तामणि' 'रामप्रताप' जैसे बड़े ग्रंथों की रचना उनके निश्चिंत जीवन का परिचायक है। 'रामप्रताप' का अंतिम अंश, जिसमें पुत्र का भी सहयोग है, सिद्ध करता है गोपाल कवि अपने उत्तरकालीन जीवन में पुत्र के साथ रहे।

गोपाल कवि की प्रकृति, विचारधाराएँ व बहुज्ञता

गोपाल कवि को भक्त-हृदय प्राप्त था। यों तो, उनके समस्त ग्रंथ उनकी भक्ति के प्रमाण हैं, तथापि उन्होंने कुछ पंक्तियों में स्पष्टतः अपनी भक्ति की घोषणा की है। 'जैमिनि अश्वमेध' में उन्होंने अपने को हरिनाम का रसिक कहा है-

> पूरण पुन्य प्रताप सुगंगाराम के
> तिन नंदन गोपाल रसिक हरिनाम के। [१०]

'रामप्रताप' में ये पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं-

> जानकी रमन पद पंकज सदाहिं पर
> मेरो मन भौंर को सो भांवरी फिरतु है। [११]

उनकी भक्ति किसी विशिष्ट सम्प्रदाय की अनुगामिनी नहीं थी। उनके

ग्रंथों से यह भी प्रमाणित कर पाना कठिन है कि उनके इष्ट राम हैं या कृष्ण। दोनों चरित्रों को लेकर उन्होंने सशक्त काव्य-ग्रंथ लिखे हैं। गोपाल कवि राम व कृष्ण में तनिक भी भेद नहीं मानते। 'भक्तिचिन्तामणि' में जामवंत से श्रीकृष्ण को राम मानकर स्तुति करायी है। 'खूब तमाशा' में एक स्थान पर वामन के लिए रघुपति शब्द का प्रयोग किया है।[१२] दूसरी ओर रामप्रताप में एक स्थान पर 'राम' को वासुदेव की भी संज्ञा मिली है। उनकी भक्तिमें चाहे तुलसी और सूर की सी उत्कटता न हो, पर उन्हें भक्त कहने से रोका नहीं जा सकता। वे अपने काव्यों में ही नहीं, वास्तविक जीवन में भी भक्त थे। निर्भीकता तथा स्पष्टवादिता उनके स्वभाव की मुख्य विशिष्टताएँ थीं। खूब तमाशा में उन्होंने औरंगजेब के जीवन-काल में उनकी बड़ी भर्त्सना की है।[१३] राजाश्रित कवि होकर भी राजाओं की सामान्य बुराइयों का स्पष्ट वर्णन किया है। 'खूब तमाशा' के प्रारंभ में उनकी घोषणा है कि उन्होंने अपनी आँखों जो देखा, वही लिखेंगे।[१४] राजा राजसिंह के रसिक स्वभाव पर उन्होंने मीठी चुटकियाँ ली हैं।[१५]

'खूब तमाशा' में कवि ने अनेक विषयों पर अपने विचार प्रगट किये हैं। उनका वैचारिक आदर्श सर्वथा भारतीय है। वे संत तुलसीदास की तरह मार्यादावादी थे। अश्लील और अभद्र प्रंसगों को उन्होंने अपने काव्य में स्थान नहीं दिया। 'जैमिनीयाश्वमेघपर्व' की प्रमिला ने अर्जुन से समागम की याचना की थी; किन्तु मर्यादावादी गोपाल कवि ने प्रमिला से केवल विवाह प्रस्ताव करवाया है। उनके विचारों पर हिन्दू धर्म-ग्रंथों का गहरा प्रभाव है। राजनैनिक, सामाजिक, पारिवारक, वैयक्तिक, धर्मिक व आध्यात्मिक विचार प्राचीनकाल से चले आने वाले विचार-प्रवाह के अनुकूल हैं। उनके जो विचार अधिक व्यावहारिक प्रतीत होते हैं, वे भी प्राचीन मनीषियों द्वारा समर्थित हैं। वस्तुतः, उनका वैचारिक आदर्श व्यवहारिकता से अधिक दूर नहीं है।

सबको अन्त सबै विधि लीजै अपने अंत न दीजै।

मंत्री मित्र विचार आपने मंत्र अगोचर कीजै।।[१६]

यह पद्य उनके व्यावहारिक नीति-नॅपुण्य का परिचायक है। कवि की ऐसी धारणाएँ भी शुक्रनीति आदि नीति-ग्रंथों द्वारा अनुमोदित हैं। वस्तुतः, कवि का जीवन धर्म से ओत-प्रोत है। वह धर्म से पृथक् होकर किसी भी विषय पर विचार करने हेतु तैयार नहीं है। कवि की दृष्टि में राजनैतिक, सामाजिक, व्यक्तिगत आदि प्रत्येक प्रश्न का निर्णय लेने हेतु धर्म एक निकष है।

उनकी नीतियाँ भी धर्म, समाज व व्यक्ति की बुराइयों व पाखंड पर गहराई से चोट करती हैं। अवधूतों पर उनकी फटकार का एक दृष्टांत प्रस्तुत है-

आपु बड़े अवधूत कहावैं, संग चलावै चेली,
चारि पहर निसि कहर मचावैं, दिवस परे तलबेली,
जटा जूट तन भसम लपेटे, करे कुटी की आसा। [१७]

ब्राह्मणों के संबंध में उनका कथन है-

संध्या धरम करम सत मारग इहि विधि सबै बिसारे,
पूजा काम, पियन को मदिरा, ब्राह्मण कोई मतवारे। [१८]

धार्मिक-समाजिक कुरीतियों, पाखंड आदि की कटु आलोचना कबीरदास ने भी की है। आलोचना की व्यापकता तथा तीखेपन की दृष्टि से कबीर के समान गोपाल कवि का नाम उल्लेखनीय है। किन्तु दोनों में मौलिक भेद है।

कबीर ने वर्ण-व्यवस्था, तीर्थस्थान, व्रतोद्यापन, छुआछुत, अवतारोपासन, कर्म-कांड आदि की निन्दा की है। जबकि, गोपाल कवि ने समाज व व्यक्ति की भर्त्सना, इनके उचित रूप से पालन न करने के कारण की है। वर्ण, धर्म, तीर्थ, व्रत, साकारोपासना, अवतारवाद आदि पर गोपाल कवि की दृढ़ आस्था है। कबीरदास पौराणिक मत के विरुद्ध थे, गोपाल कवि पौराणिक मत के

समर्थक थे। गोपाल कवि की आलोचनाएँ पुराणों में उपलब्ध धर्महीन पुरुषों की निन्दा के अधिक निकट हैं।

गोपाल कवि भाग्यवादी थे; किन्तु उनका भाग्यवाद अकर्मण्यता का समर्थक नहीं था। उनका भाग्यवाद मानसिक क्लेश से निवृत होने की एक औषधि मात्र थी। वे पुरुषार्थ के प्रबल समर्थक थे। 'खूब तमाशा' के अध्ययन में आगे हम देखेंगे कि कीर्तिशतक में पुरुषार्थ की आवश्यकता पर उन्होंने अनेक छंद लिखे हैं।

गोपाल कवि बहुश्रुत और बहुज्ञ थे। वे अपने युग के पढ़े-लिखे विद्वान व्यक्ति थे। उन्हें काव्यशास्त्र का गहरा अध्ययन था। 'खूब तमाशा' के श्रृंगार शतक तथा विनोद शतक इसके साक्षी हैं। वे छंदशास्त्र के पंडित थे, उनके ग्रंथों के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है। उन्हें संस्कृत का भी ज्ञान था।[१९] ग्रंथों में अध्याय-समाप्ति की सूचना संस्कृत में है। स्तुतियों में संस्कृत के प्रयोग तथा ब्रजभाषा में भी सविभक्तिक संस्कृत शब्दों के प्रयोग इस सबंध में उल्लेखनीय हैं। उन्होंने संस्कृत ग्रंथों का अध्ययन किया था। 'खूब तमाशा' में भर्तृहरि के श्लोकों का अनुवाद दिखाई पड़ता है। 'रामप्रताप' में गृहीत कथावस्तु यह सिद्ध करती है कि गोपाल कवि ने संस्कृत के अनेक रामकाव्यों व पुराणों का अवलोकन किया था तथा तत्कालीन और पूर्ववर्ती हिन्दी काव्य-साहित्य का अध्ययन किया था। सूर, तुलसी, आदि कवियों का प्रभाव उनके ग्रंथों में झलकता है। युद्ध-प्रसंगों में शब्दों के 'द्वित्व' प्रयोग से उनके वीरगाथाकालीन काव्यों का अध्ययन सूचित होता है। निम्न उक्ति इस बात का प्रमाण है कि उन्हें लोक कथाओं का भी भरपूर ज्ञान था और इस बात की भी संभावना है कि उन्होंने जायसी कृत पदमावत से भी परिचय प्राप्त किया हो -

सिंहल दीप पद्मिनी उपजै बिलसै रसिक विलासा।[२०]

धर्म के विभिन्न सम्प्रदायों तथा संत-महात्माओं से वे भली-भाँति परिचित थे। 'खूब तमाशा' में छाप लेने का उल्लेख।[२१] 'खूबतमाशा' में

पीपा, गांगरौनि, बंगाल के रूप सनातन जैसे विरक्त राजाओं तथा नामदेव, रैदास, कबीर, रंकाबंका सैना, रामानंद, अनंतानंद, कृष्णदास, सूर, जयदेव, मीरा, चन्द्रहास रसिकराय, गजदेवी, रघुनाथ दास, अग्रदास, माधोदास, तुलसीदास आदि संतो का उल्लेख है। [२२]

उन्हें राजनीति का समुचित ज्ञान था। 'खूब तमाशा' के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है। गोपाल कवि भूगोल व इतिहास के अच्छे जानकर थे। 'खूब तमाशा' का मात्र राजशतक पढ़ने से यह बात हो जाता है। राजशतक में तत्कालीन सम्पूर्ण भारत का वर्णन है। नीतिशतक में मंडलागढ़ के हृदयशाह तथा उसके वंशजों का वृतान्त संकेत रूप में मिलता है। उन दिनों भारतवर्ष से अन्य देशों का व्यापार संबंध था तथा जहाज द्वारा माल लाया जाता था, यह भी उल्लिखित है-

बारह बसत मलार बंदरनि बड़े जहाजै आवै। [२३]

स्व. लोचनप्रसाद जी पाण्डेय ने अपने एक लेख में इसे हिन्दी साहित्य के ग्रंथों में नयी बात की संज्ञा दी है। [२४]

गोपाल कवि संगीतशास्त्र से पूर्ण परिचित थे। उनके ग्रंथों में रागों के नाम मिलते हैं। अनेक गीत-पदों में स्पष्ट राग-निर्देश हैं। छन्दों में नृत्य के तत्कार तथा मृदंग के बोलों का प्रयोग भी उपलब्ध होता है। "जब-जब जैसा तान मोरना, तब-तब तैसा बाजै।" [२५] पंक्ति से वाद्य संगीत तथा लड़ंत से परिचय का बोध होता है। प्रतीत होता है, उन्होंने गुणियो का साथ खूब किया था। आगे, हमने उनके संगीत-ज्ञान का एक दृष्टांत प्रस्तुत किया है।

गोपाल कवि केवल बहुज्ञ ही नहीं थे। उन्हंने जीवन को पैनी नजर से देखा व समझा था। वे मानव-प्रकृति के अध्येता थे। जीवन के लिए पुस्तकीय ज्ञान ही पर्याप्त नहीं होता। वे स्वयं कहते हैं - "एक ओर पढ़िबो सब गुनिबो एक ओर चतुराई" [२६] सतसंग से मनुष्य सीझता है - "बिनु सतसंगम सीझै।" [२७] गोपाल कवि स्वयं सीझे हुए थे। तथा वे परिस्थितियों से समझौता करना जानते थे। [२८] अपने अनुभवों की गहराई के कारण ही वे डंके की

चोटपर कहते हैं -

काहू भावे काहू न भावे, कहै बात हम आछी
दुख के साथी एक आध कोइ, और विभव की माछी। [२९]

अंत में, गोपाल कवि के संगीत-ज्ञान का एक निदर्सन प्रस्तुत है। आड़लय के त्रिताल में मृदंग के बोलों के साथ नृत्य का यह प्रिमलू द्रष्टव्य है।

रुनु झुनु झुनु झुनक नाद। झमकि झमकि चलत स्वाद
हंसन कल करत वाद। उपमा उपजाये
नृत्तत तत थुंग थुंग। धिधिकट धिधिकट मृदंग
अंग अंग छवि तरंग। रंग रंग छाये
थेइ थेइ थेइ, थेइ तमान। ततथे ततथे विधान
गान विविध तान जान। देतन अधिकाए
घुंघरू छुनु नुनुनु पाइ (पाँव)। अद्भुत धुनि रहिय छाइ
निरखत बिहसाइ विमलि। जन गोपाल गाए। [३०]

डॉ. शेषनारायण चंदेले

(गोपाल मिश्र की कृतियाँ का आलोचनात्मक
अध्ययन-शोध ग्रंथ से)

संदर्भ

१. जैमिनि अश्वमेध पृष्ठ-२६०
२. पृष्ठ ११०, छंद १८
३. प्रकाशित प्रतियोग भक्ति शतक ७६
४. भक्ति चिंतामणि पृ. १५७, छंद-८७। राम प्रताप पृ. ७९, छंद-१०
५. 'इंदु', मासिक, जुलाई १९१५, लेख 'छत्तीसगढ़ के प्राचीन हिन्दी कवि'
६. श्री विष्णु महायज्ञ, (रत्नपुर) स्मारक ग्रंथ, संवत् २०००, पृ. १२६.

७. हितकारिणी मासिक, जबलपुर, अक्टूबर सन् १९१६- पृ. २९१

८. श्री विष्णु महायज्ञ स्मारक संवत् २०००, पृ. १०३

९. 'खूब तमाशा', रतनपुरी प्रति, राजशतक छंद-३३

१०. जैमिनी अश्वमेघ, पृ. २६०

११. रामप्रताप बालकांड, छंद-८

१२. रत्नपुरी प्रति, वीर शतक, छंद-५९

१३. नीति शतक ४८-५२

१४. रत्नपुरी, नीति शतक, छंद ३९

१५. खूब तमाशा, रत्नपुरी प्रति, नीति शतक छंद २४

१६. खूब तमाशा रत्नपुरी प्रति, नीति शतक छंद. ६५

१७. खूब तमाशा, रत्नपुरी प्रति, कलि शतक छंद ११

१८. खूब तमाशा, रत्नपुरी प्रति,कलि शतक छंद ५९

१९. संस्कृत में वे व्याकरण की महत्ता समझते थे - बिनु व्याकरण संस्कृत जैसो (मंत्र शतक रत्नपुरी प्रति, छंद-५४)

२०. खूब तमाशा, राज शतक छंद ७१

२१. खूब तमाशा, रत्नपुरी प्रति, राजशतक, छंद ४२ व मंत्रशतक, छंद ३८

२२. खूब तमाशा, रत्नपुरी प्रति, मंत्र शतक - ३७ व ३९, पुष्प शतक, छंद 90 योग भग्ति शतक, छंद-५९ से ७६ तक।

२३. खूब तमाशा, रत्नपुरी प्रति, राजशतक, पृष्ठ १३८, छंद २९

२४. इंदु मासिक, जुलाई १९१५

२५. शिक्षा शतक, रत्नपुरी प्रति छंद ११

२६. शिक्षा शतक, रत्नपुरी प्रति छंद १८

२७. खूब तमाशा, शिक्षा शतक छंद १८

२८. खूब तमाशा, शिक्षा शतक छंद ११

२९. खूब तमाशा, कलि शतक तक छंद - ८३

३०. भक्ति चिंतामणि पृ. ८८ छंद १४

प्राक्कथन

महाकवि गोपाल मिश्र १७वीं सदी के औरंगजेब कालीन राजा राजसिंह रत्नपुर के राजाश्रितकवि थे। कवि का जन्म सन् १६५० के आसपास हुआ था।

'खूब तमाशा' काव्य-ग्रंथ लिखे जाने की पृष्ठभूमि रोचक है। कवि ने स्वयं इसका उल्लेख किया है। रतनपुर में कजरा नामक तालाब अभी भी है। रतनपुर के राजा राजसिंह वहाँ अपने कुछ विशिष्ट व्यक्तियों के साथ सरोवर की शोभा निहारते बैठा करते थे। उल्लेखनीय है कि राजा की पत्नी का नाम भी कजरा था। एक बार राजा राजसिंह ने कवि गोपाल मिश्र को समस्या पूर्ति के लिए 'खूबतमाशा' शब्द दिया तथा कहा-

सत चौबोला देहि करि खूब तमासे टेक

अर्थात्, 'खूबतमाशा' का टेक बनाकर सौ छंदों वाला काव्य-ग्रंथ लिखो। इसी प्रेरणा से 'खूब तमाशा' ग्रंथ की रचना हुई है। इस पुस्तक में १०१ छंदोंवाले दस शतक हैं। अंत में शून्य को अशुभ मानकर छंदों की संख्या १०१ रखी गयी है। किंतु, कीर्ति शतक में छंदों की संख्या केवल ८२ है।

गोपाल मिश्र छत्तीसगढ़ के प्रथम व सशक्त महाकवि हैं। इन्होंने पाँच काव्य-ग्रंथ लिखे हैं । उनके नाम हैं- खूब तमाशा, जैमिनि अश्वमेध, सुदामा चरित, राम प्रताप तथा भक्ति चिंतामणि । ये नाम रचना-काल के क्रम से नहीं हैं। इनमें 'खूब तमाशा' का प्रकाशन वेंकटेश्वर प्रेस बम्बई से हुआ है। (मुम्बई से उक्त प्रकाशित 'षूब तमाशा' आधा अधूरा है और अब उपलब्ध भी नहीं है।) 'भक्ति चिंतामणि', जो श्रीमद्भागवत के दशम स्कंध का (संस्कृत से) हिंदी अनुवाद है, 'हरि प्रकाश यंत्रालय बनारस' से प्रकाशित हुआ है। 'रामप्रताप' का प्रकाशक अज्ञात है। 'सुदामा चरित' पुस्तक नागरी प्रचारिणी सभा काशी में हस्तलिखित रूप में थी। मैं किसी तरह उसकी प्रतिलिपि बनाकर रायपुर ले आया। उसे मेरे अभिन्न मित्र श्री शंकर प्रसाद श्रीवास्तव ने 'मावलीप्रसाद श्रीवास्तव साहित्य पीठ, रायपुर' से प्रकाशित किया। यहाँ उल्लेखनीय है कि गोपाल मिश्र के सुपुत्र माखन मिश्र ने भी 'छंद विलास' नामक ग्रंथ की रचना की है। छत्तीसगढ़ की वह

कीमती पूंजी भी 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' में पड़ी हुई है। आज तक ऐसा कोई व्यक्तित्व नहीं मिला , जो उसे वापस छत्तीसगढ़ ले आये। इस तरह, गोपाल मिश्र की सारी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। ग्रंथों में सर्वाधिक लोकप्रियता 'खूबतमाशा' को मिली। कारण यह है कि इसमें जीवन के विविध पहलुओं व समाज व देश की तत्कालीन विविध परिस्थितियों का रोचक वर्णन मिलता है। इस ग्रंथ में कवि धर्म व अध्यात्म को भी नहीं भूल पाया है। गोपाल मिश्र का आविर्भाव औरंगजेब के शासन-काल में हुआ था। औरंगजेब के समय जनता का जीवन कष्टमय था। हिंदू धर्म सर्वाधिक संकट में रहा है। कवि ने समकालीन शासकीय अनीतियों की खुलकर आलोचना की है। 'खूबतमाशा' के विषय में विशेष जानकारी मेरे शोध-ग्रंथ 'गोपाल मिश्र की कृतियों का आलोचनात्मक अध्ययन' से प्राप्त की जा सकती है।

पहले, जब फोटोकॉपी की सुविधा नहीं थब, लोग हाथ से ही पुस्तक की प्रतिलिपि बनाते थे। इसी दौर में प्रतिलिपिकारों द्वारा प्रतिलिपि में अनेक त्रुटियाँ हुई हैं। जब फोटोकॉपी का सिस्टम आया,तब इन्हीं त्रुटिपूर्ण प्रतियों की फोटो कॉपी हुई। कहना न होगा कि खूबतमाशा की अनेक हस्त प्रतिलिपियाँ बनी होंगी। मेरे पास खूबतमाशा की जो फोटोकापी है, उसमें भी अनेक प्रकार की त्रुटियाँ हैं। रायपुर में एक-दो लोगों के पास इन्हीं गलतियों से भरपूर प्रतियाँ हैं। व्यक्तिगत उपयोग के लिए त्रुटिपूर्ण प्रति अधिक हानिकारक नहीं है, किंतु सार्वजनिक उपयोग के लिए प्रकाशित प्रति में शुद्धता नितांत आवश्यक है। कम्प्यूटर से खूबतमाशा की टाईप्ड प्रति निकालते समय शब्द व वाक्य में मैंने भरपूर सावधानी रखी है ; तथापि, कुछ पंक्ति-सुधार में हार कर मैंने आशय की रक्षा करते हुए सर्वथा नयी पंक्ति बनायी है।

अन्यों की तरह 'खूबतमाशा' की इस प्रतिलिपि में शब्दों का गलत प्रयोग किया है। शिक्षा शतक के ९५वे छंद कुंडलिया में प्रतिलिपिकार ने दूसरी पंक्ति को अंतिम पंक्ति में रख दिया है। छंदों में जो मात्राओं की कमी या अधिकता, पंक्ति की कमी या आधिक्य, शब्दों की अशुद्धियाँ, लय का अभाव आदि नाना प्रकार के दोष दिखाई पड़ते हैं, उनका कारण प्रतिलिपिकारों का अज्ञान व असावधानियाँ है।

ख खूब तमाशा

इस पुस्तक में प्रतिलिपिकार द्वारा की गयी अशुद्धियों को दूर करने के लिए छंद का अभिप्रेत अर्थ, छंद की निर्धारित मात्रा तथा छंद का लय-ज्ञान आवश्यक है। इसके बिना छंद की अशुद्धियाँ दूर नहीं होंगी। किसी छंद में मात्रा की कमी या आधिकता को वही सुधार सकता है, जिसे छंद, छंद की मात्रा व लय का समुचित ज्ञान हो। एक साहित्यकर व कवि होने के नाते मुझे ये जानकरियाँ हैं, तभी उक्त त्रुटिओं को सुधार सका हूँ। मेरे पूर्व जिसने इस प्रति की फोटोकॉपी करायी है, उसमें यह सुधार नहीं आ सका है। मैंने अपनी टाईप्ड प्रति में उन भ्रष्ट प्रतिलिपियों के दोषों को दूर करने की पूरी कोशिश की है।

मैंने कवि के आशय की रक्षा करते हुए शब्द,वाक्य व छंद की त्रुटियाँ सुधारी हैं । जहाँ आवश्यकता पड़ी, वहाँ वेंकटेश्वर प्रेस बम्बई से प्रकाशित 'खूबतमाशा' से भी पंक्तियाँ ली गयी हैं। कवि के आशय की रक्षा करते हुए कहीं अपनी ओर से नयी पंक्ति बनाकर जोड़ी है। जहाँ, अक्षर समझ में नहीं आया, वहाँ प्रसंग के अनुकूल सम्भावित शब्द जोड़ दिये हैं। किंतु, जहाँ पूरी पंक्ति नदारद है, वहाँ प्रकाशित प्रति से पंक्तियाँ ली गयी हैं। स्थान कम पड़ने पर अक्षर की साईज छोटी कर दी है यथा १४ प्वाईंट के स्थान पर पंक्ति १३ प्वाईंट से काम चलाया है।

'खूबतमाशा' की रचना व्रज भाषा में हुई है। 'व्रज' एक बोली थी; किंतु साहित्य में आकर यह भाषा बन गयी। इस ग्रंथ की जब रचना हुई, तब औरंगजेब का काल था। खूबतमाशा के माध्यम से गोपाल मिश्र ने उसके जीवनकाल में ही उसकी निंदा की है।

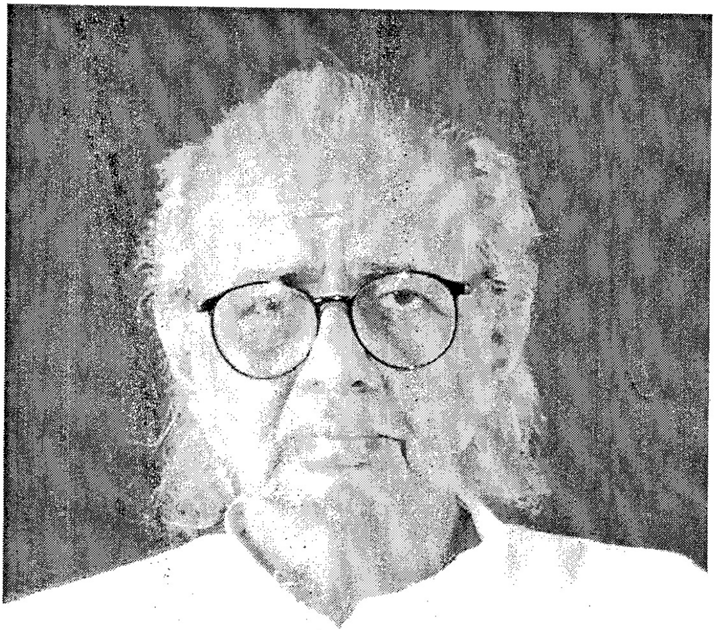
सूरदास की रचनाएँ व्रज में ही हैं। सोलहवीं सदी में व्रज का अच्छा प्रचार- प्रसार था। उल्लेखनीय है कि गोपाल मिश्र व्रज भाषा के एक समर्थ कवि थे, इसी से इन्हें राजाश्रय प्राप्त था। 'तुलसी' को छोड़ संत कवियों ने प्रायः व्रज भाषा का ही प्रयोग किया है। तुलसी का 'श्री रामचरित मानस' अवधी में लिखित है। 'शतक' शब्द के पूर्व 'अथ' शब्द प्रारम्भ सूचक है तथा 'इति' समाप्ति सूचक है। वाक्य में एवं अन्यत्र भी संस्कृत भाषा का प्रयोग कवि के संस्कृत-ज्ञान की ओर इंगित करता है। कहीं कहीं पद में भी संस्कृत मिलता है, यथा कर्मपाप शतक के ६७वें छंद में उपलब्ध 'मनसा चकित भये' में 'मनसा' ('मन से'), पुण्य शतक के ४५वें छंद में 'तीर्थाणाम्' व 'धर्मसु', एवं सत्तरवें

छंद का 'अद्य' विशुद्ध संस्कृत शब्द है।

इस ग्रंथ में कवि धर्म व अध्यात्म को भी नहीं भूल पाया है। गोपाल मिश्र का आविर्भाव औरंगजेब के शासन-काल में हुआ था। औरंगजेब के समय जनता का जीवन कष्टमय था। हिंदू धर्म सर्वाधिक संकट में रहा है। कवि ने समकालीन शासकीय अनीतियों की खुलकर आलोचना की है। 'खूब तमाशा' के विषय में विशेष जानकारी मेरे शोध-ग्रंथ 'गोपाल मिश्र की कृतियों का आलोचनात्मक अध्ययन' से प्राप्त की जा सकती है। शतक के अंत में समाप्ति-सूचक वाक्य भी विशुद्ध संस्कृत है। कहना न होगा कि गोपाल मिश्र संस्कृत के भी विद्वान थे। कवि गोपाल मिश्र छंद वैविध्य के मर्मज्ञ थे। 'खूब तमासा' पुस्तक से ज्ञात होता है कि उन्हें पुराणादि शास्त्रों का गहन अध्ययन था। अपने मत की पुष्टि उन्होंने पुराणादि शास्त्रों से की है। छंद के अतिरिक्त साहित्य से जुड़े नायिका भेद आदि विविध विषयों का भली भाँति ज्ञान था। उनके ग्रंथ खूब तमाशा में साहित्य की रीतिकालीन प्रवृत्ति की स्पष्ट छाप मिलती है।

छत्तीसगढ़ पर 'पिछड़ा प्रदेश' का ठप्पा लगा रहा। इसी से यहाँ की प्रतिभाएँ अपना स्थान नहीं बना सकीं। गोपाल मिश्र के साहित्य को आज तक अन्य प्रदेशों में क्या, छत्तीसगढ़ में ही पाठ्य पुस्तक के रूप में मान्यता नहीं मिली है। यह गोपाल मिश्र का ही नहीं, सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ का दुर्भाग्य है। अपने शोध-ग्रंथ के प्राक्कथन में मैंने ठोस तर्कों के आधार पर कहा है कि आचार्य शुक्ल ने गोपाल मिश्र को जानबूझ कर अनदेखा किया है। किंतु, अब समय आ गया है कि गोपाल मिश्र की समस्त पुस्तकों का पुनर्मुद्रण व मूल्यांकन हो।

उल्लेखनीय है कि रतनपुरी प्रति में १०१ छंदोंवाले केवल १० शतक मिलते हैं। विलासपुरी प्रति के 'कीर्ति शतक' को जोड़ने से इसमें कुल ११ शतक मिलेंगे। 'योगभक्ति शतक' गोपाल मिश्र की रचना होगी, यह संदिग्ध है। अतः, 'योगभक्ति शतक' का मेरे शोध में कोई उल्लेख नहीं है। मैंने अपने शोध-ग्रंथ में बिलासपुरी प्रति के 'कीर्ति शतक' के छंद उद्धृत किये हैं। किंतु, १०१ छंदों वाली रतनपुरी प्रति में 'कीर्ति शतक' के मात्र ३० छंद मिलते हैं। यह प्रतिलिपिकारों की स्वेच्छाचारिता सिद्ध करती है।



योगाचार्य, डॉ. शेषनारायण चंदेले

मैंने 'खूबतमाशा' की इस टाईप्ड प्रति में बिलासपुरी प्रति के 'कीर्ति शतक' को जोड़ा है, जिसमें 'कीर्ति शतक' के ८२ छंद हैं। इसमें केवल कीर्ति शतक है। यह भी कि बिलासपुरी प्रति के 'कीर्ति शतक' से रत्नपुरी कीर्तिशतक का कोई मेल नहीं है। हिंदी ग्रंथ अकादमी ने छत्तीसगढ़ के प्रथम महाकवि गोपाल मिश्र के इस प्रथम काव्य ग्रंथ 'खूबतमासा' को प्रकाशित कर अपनी संवेदनशीलता का परिचय दिया है, वहीं मेरे साथ छत्तीसगढ़ का हिंदी साहित्य-जगत श्री रसिक परमार तथा श्री शशांक शर्मा का भी आभार मानता है, जिन्होंने इस कार्य की अनुशंसा के साथ छ.ग. के माननीय मुख्यमंत्री जी को प्रकाशन हेतु अनुप्रेरित किया।

श्री शाश्वत गोपाल शुक्ल ने मेरे व श्री शशांक शर्मा के बीच मध्यस्थ बनकर महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है। उनके बिना यह बड़ा कार्य सम्भव नहीं था। हस्त लिखित इस काव्य-ग्रंथ को मैंने पहले ए.फोर साईज में टाईप किया था। अनन्तर, प्रकाशन के लिए मैंने इसे बुक साईज में तैयार किया है।

टीप- गोपाल मिश्र ने 'ख' का उच्चारण 'ष' रूप में किया है।

दि. ४ सितम्बर २०१७

अनुक्रमणिका

शतक- नाम	पृ.
१- नीति शतक-	१
२- मंत्र शतक-	२३
३- शिक्षा शतक-	४५
४- कलि शतक-	६७
५- कर्मपाप शतक-	९१
६- पुण्य शतक-	११३
७- राज शतक-	१३८
८- श्रृंगार शतक-	१५९
९- विनोद शतक-	१९१
१०-वीर शतक-	२१९
११-कीर्ति शतक-	२४५

नीति शतक का प्रतिपाद्य

गोपाल मिश्र ने 'खूबतमाशा' की रचना संवत् १७४६ में की। रत्नपुर के हैहयवंशी राजा राजसिंह रत्नपुर के कजरा नामक मनोरम सरोवर के तट पर कवि गोपाल मिश्र के साथ बैठकर तालाब की शोभा का प्रायः आनन्द लिया करते थे। इसी वीच एक बार राजा राजसिंह ने गोपाल मिश्र को कव्य-रचना की आज्ञा दी, जिसका नाम 'खूबतमाशा' होगा।

नीति शतक में निम्नांकित नीतियों का समावेश किया गया है-

१- राजनीति परक नीतियाँ । २- सामाजिक नीतियाँ । ३- पारिवारिक नीतियाँ। ४- वैयक्तिक नीतियाँ । ५-धार्मिक नीतियाँ। (कलिचरित्र, ईश्वर,वर्णधर्म,भाग्य, उद्बोधन। भर्त्सना, माता, पिता, गुरु-भक्त,धर्मज्ञ, दाता) ५- आध्यात्मिक नीतियाँ । (कर्मपापशतक एवं पुण्य शतक) (शोधग्रंथ, पृ. ५८)

क्रमशः

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

लिष्यते चानक षूव तमाशा

१

॥ अथ नीतिशतकम् ॥

जै जै जै श्री आदिदेव देवाधिदेववर
हरन सकल संताप करन मंगल करुनाकर
विधन विले ह्वै जात विघनहर हरषि विलोकत
विधन विले ह्वै जात विघनहर हरषि विलोकत
त्रय तापदाप दारुन दवन सु अभय कृपा भय उद्धरन
जगमगत जोति जल-थल सकल सो नारायन तव पद
सरन ॥१॥

नमो नमो जगदीसन मो गुरु नलिन ललित पद
परमानंद प्रकास वास पूरन प्रताप हद
अभै भक्ति मकरंद संत चित भौर भीर जनु
रहत सदा उनमत्त धर्‌यो जिन प्रेम नेम धनु
सुखसदन सकल त्रय तापहर पदपराग भूषण भरन
मंगल असेष सुर कलपतरु सुसेवक हुँ नर हरि चरन
॥ २ ॥

॥ जथा ॥

आनन्द के कंद निरदंद चरनारविंद
वंदन सकल सुर संकट हरन है
सोहै संख चक्र ध्वज अंकुस धनुष कमान
धेनुपद कलस सुधाहु के धरत हैं
मेरे जान चिंतामनिहूँ के मन चिंतामनि
भनत गोपाल असरन के सरन हैं
कारन करन जगतारन तरन जन

लाज के जिहाज ब्रजराज के चरन हैं
॥३॥

॥ दोहा ॥

रसिकराई गोपाल है रति जन कवि गोपाल
जात कृपा कटाक्ष क्यौं लसे छबीले लाल
॥ ४॥

नव नीरद अभिराम अति पीत वसन वनमाल
बिहरत अैसे छबि हिये रसिकराई गोपाल
॥५॥

॥ सवैया ॥

नवनीरद नील कलेवर है
नवनीरज नैनन नेह भरे
झलकै मकराकृत कुंडलगंड
विलोकत पातक पुंज झरै
व्रजभूषन भूषन भूषित है
लषि आवत आनंद की लहरैं
बलि वा मुरलीधर की छबि को
मुरली मुरलीधर पानि धरैं
॥६॥

कटि किंकिनि नूपुर नाद सुने
उनमाद महा कलहंस भरैं
नवनीर कलेवर पीत दुकूल
मनो घन दामिनि वेष करैं
मनो घन दामिनि वेष करैं
वनमाल बिसाल विसाल हिये
मनमोहन मनमोहन कों सिगरे
मनमोहन मोहन रूप धरैं
॥ ७॥

॥ दोहा ॥

उपमा अद्भुत पुरुष की को बरनै कविराज
गागरि मुष गिरि मान क्यौं कहत सुनतहू लाज
॥ ८ ॥

बड़े बड़े ते अति बड़े सिव ब्रह्मा अरु वेद
जे ढूँढै नहि पाइअै तेहूँ ढूँढत भेद
॥ ९ ॥

॥ जथा ॥

नेति नेति गावै वेद ब्रह्महूँ न लहै भेद
शिव के परम भेद षेदि षेदि सुष है दये
पाये कहाँ सुरपति ज्ञानहूँ न गनपति
कैं यो मुष फनपति नाम लै न कों भयो
सुरनर मुनिन अगोचर अनादि दैव
सेवत सकल जाके रचना नये नये
सोई व्रज आइ सुव नंद के कहाइ
पुनि गैयन चराइ षूव ष्याल कलि में दये ॥ १०॥

॥ दोहा ॥

देवनानि मधि इंद्र हे रुद्रनि संकर रूप
नरन मध्य नृपराज हे राजसिंघ श्री भूप ॥ ११ ॥

॥ चौबोला ॥

धातु मध्य कलधौत अंस हरि वेदनि साम बताये
अैरावत हरि अंस गजन मै उच्चैश्रवा मन भाये
सब देवन मै अंस इंद्र कहि रुद्रन संकर लेषा
नरन मध्य नृपराज अंस हरि राजसिंह हम देषा ॥१२ ॥

॥ दोहा ॥

येक समय नृपराज को भयो जो मन उच्छाह
कजरा सर सुंदर लखे लगे कहन कछु गाह ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

नंदलाल इक नाम के द्विज मनि उत्तम पास
अतिहित रुचि सो ष्याल सों प्रगटत हास विलास
॥१४॥

॥ कुंडलिया ॥

तहाँ सुकवि गोपाल को दये समस्या येक
सत चौबोला देहु करि षूब तमासे टेक
षूब तमासे टेक येक झूठी मत कहियो
यह कवि राय सुपाइ सोंचि साँचि निरवहियो
निरवाही साँची सवै जोर निवाहा होइ
राजनीति नित नित जहाँ राज सुषी सब कोइ
॥ १५ ॥

॥ छप्पय ॥

तब गोपाल विचारि ग्रंथ करि वर्णन कीन्हों
राजनीति मत धर्म कर्म निर्नय करि दीन्हों
इंद्रिन मै मन विष्णु सकल व्यापक वह नामी
उढ्यो व्यापि सब हेत काम आतुर ज्यौं कामी
नृप राजसिंह हित सुमति कौं चूड़ामणि चानक कियो
तिहि पठत सुनत प्रति हरि कथा सु सकल रसुनि सोभा
दियो ॥१६ ॥

॥ चौबोला ॥

भूपति भूमि देवता देवी लच्छि प्रतच्छि विराजैं
गाजत द्वारपाल जहँ भैरौ गढ़ रच्छक सब छाजैं
रतनेसर अरु वेद आदि दैविकगण अरु वैरागे
चलि आये सब काल ताल प्रति षूब तमासा
लागैं ॥ १७॥
महाजोग माया तहँ विलसत सकल साहिबी लीन्हें
तव वरदान दये आनन्द ते अब अवनीपति कीन्हें

बड़े निवाज सिकरहिं जिनहि के बड़े बड़ावै छाजा
कवि मुष सुषद सारदा बरनै करै राज ध्रुव राजा

॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

राजै राजा राजपुर राजसिंह सिरजाज
राज रतनपुर आदि कौ उद्दित अटल समाज

॥ १९ ॥

चार्‌यो जुगनि प्रसिद्ध हे हैहय वंस पुनीत
मोर ताम्रध्वज धरनि सुनो पुराननि रीत

॥ २० ॥

विघन हरन के चरन वंदि कै कविकुल चरित सुनाये
महाराज राजाधिराज श्री राजसिंघ मन भाये
चानक लगैं सुने सबही की तनमन होइ हुलासा
नंदलाल पर मौज सुकवि की बरनै षूब तमासा

॥ २१ ॥

देषि चाल कलिकाल सवनि की (संकरनी कौ धीन्हे ?)
राजसिंघ सिरताज सुकवि को यहै हुकुम करि दीहें
करि विचार चारु चौबोला सुनि सब होइ हुलासा
नंदलाल पर मौज सुकवि की बरनै षूब तमासा

॥२२॥

हैहय वंस कलम वसुधा को सुजस छत्र सिर छाजै
राजसिंघ कौ सहर राजपुर सुंदर सदन विराजै
सकल धरम कौं धाम धरा पर राम दियो जिहि तोरा
तौ साहेब का हुकुम पाइ कवि षूवतमाशा जोरा

॥२३ ॥

संवत सत्रा सै षट चालिस रितु पावस हितकारी
महाराज श्री राजसिंघ रुचि जिनने जुगति विचारी

आयसु दियो सुकवि गोपालहि दियो जु बहुत दिलासा
षूव षूव कलिकाल चाल पर वरनो षूव तमासा
॥ २४ ॥

कजरा नाम सरस सर सुंदर वैठक भूप विराजैं
तहाँ कियो अनुसार सुकवि सब षूव तमासा छाजै
नर नारिन कौं भीर परस्पर न्हात लोग सब लेषै
रसिक भूप मनि राजसिंघ तहँ षूव तमासा देषै
॥ २५ ॥

नव नव डलही नव छवि उलही सर कुल ही सरसावै
हाँथन गजरा नेनक रजरा कजरा तालै आवै
परम रसीली गुनगरबीली छकी रूप की छाजा
देषि साहिबी सबै असीसै राजसिंघ रुचि राजा
॥ २६ ॥

दूलह ताल बिसाल राजपुर पुण्य भुम्य सब दिन कौ
तषतसिंघ सुव तषत बसायो कीरति चल पुरषिन कौ
परम धरम वाढै प्रतिवासर वढ्यौ सहर सव दूनौ
दिन दिन वढ़ै साहिबी सालिम नाक सत्रु के चूनौ
॥२७॥

दीन्हें अटल नीव महलन के सुंदर सहर अटा है
सकल विलास निवास भूप की तिनमें रूप छटा है
जदपि जगत मा तवै सबकी समय पाइ कहि आवै
महाराज श्री राजसिंघ नृप सदा सवै मन भावै
॥२८॥

मन मन फूलि सबै अनुकूलि बड़े वंस की बेटी
सब गुन सोहै नृप मन मोहै पूरन पुण्य लपेटी
रमा समान किधौं सावित्री सिवा समाने रानी
पालक सकल विस्व की जननी जात न धर्म बषानी
॥२९ ॥

आयु षूब महबूब रसीले षूव छबीले घोरे
षुले नैन दोउ रंग रंगीले रंग रंगीले जोरे
षूव छवीली रितु गरवीली तिनके पती वसंता
देषै षूव लहाजा जुग जुग रत्न-नगर के कंता

॥३०॥

सुरंग चूनरी चुन चुन पहिरै हरी हरी हिय चोली
कनक वनक सौ झनक मनक सौ जोवन जोर अकेली
जगर मगर नग जरी जरायन चढ़ी रूप की छाजा
देषै षूब लहाजा जुग जुग राजसिंघ ये राजा

॥ ३१ ॥

राज भौनपुर भौन भौन प्रति संगल सकल सुहाये
वन वन वनक कनक सों सिंगरी गारि रसीली गाये
वजे निसान भेरि सहनाई वाढ़ै सुष अनलेषा
सहर राजपुर वसै सुहावै सुहायो षूवतमासा देषा

॥३२॥

जोरा जरब जरब की पहिरै जोवन जोर उनाई
पावस वीरवधूटी छूटी केधौं केधौं राइ मुनाई
कंचन वेली किधौं सहेली कहे पहेली छाजै
सहर राजपुर राजसिंघ कौ जीत नौंव तैं वाजे ॥३३॥
वरनि सकल पुर देव देवता नरनारी रस रसके
वसे छतीस कुरी सब दिन के वस वासी वस वस के
यह कलि देषि षलक का चाला चतपर भुप हित करने
जग उपदेस सुदेस सुकवि सब षूव तमाषा वरने

॥३४॥

जौन करम सौ करत राति दिन सो अपने मन जाने
धरम धरम की कहै सुकवि के सब कोई दुष माने
साहेब कहै कह्यौ षठ चहिअै जाकी हमको आसा
नंदलाल पर मौज सुकवि की वरने षूब तमासा ॥३५॥

बिना मौज कछु मौज होत नहि मौज सुकवि को कीजै
अजर करत साहेब सौं डरपे विदा दारिदै दीजै
राजसिंघ को राम हमारे करे दुहुनि की आसा
षलक ष्याल गोपाल देषि कै वरणै षूव तमासा
॥३६ ॥

रैयति मंत्री मित्र राज के जिते राज रजधानी
बड़े राउ उमराउ भूमि के भुमिया भूप अमानी
जोगी जती तपी संन्यासी सूरवीर जे लेषा
सबकी रीति प्रीति सब जाने षूव तमासा देषा
॥३७ ॥

॥ दोहा ॥

तीनि जुगनि की तृविधि गति श्रवननि सुनियत गीत
अब देषौ सब आपने आँषिन यह कलिरीत
॥३८॥

ज्यौं देखो त्यौं कहत हौं चानक कलि प्रस्ताव
गुरजन दोष सवासिहौ है सब परसत भाव
॥३९॥

कलि बौधा अवतार धरि ठाकुर होइ रहे मौन
ताते होत अनीति जग नीति चलावै कौन
॥४०॥

कहि आवै सबको सबै करि आवै नहि येक
आपुहि भूले आपने आश्रम वरन अनेक
॥४१॥

॥ चौबोला ॥

ब्राह्मन वेदहीन हिय हरषै गगन न बरसै पानी
मंत्रहीन मंत्री भूपन के यह कलि की रजधानी
ज्ञानहीन अवधूत धरनि मै देषत के दुरवासा
कान सुने की कहा चला हम देषा षूव तमासा ॥४२ ॥

॥ सवैया ॥

जे जिहि चाल चलै कलि मै
तिहि को तिहि चालि ते और न भावै
चोरहि चेति कहै मति चोरि
तौ चौगुनौ चोर जहान चुरावै
कामिहि जौ कहे काम नेवारु
तौ संतत कामहि मै सब पावै
सीष जो देइ सिषावै सो ताहि
तू सीषै न मोहि सिषावनु आवै
॥४३॥

होत चलै सतिहीन महीपति
पातक कौ न कहू डर मानै
ब्राह्मन वेद पुरान विसारि कै
पूजै पिसाच सुरा करि पानै
होत कमी वरषा न फलै
फल बीजु नमे न भई विधि आनै
मंत्र थके जप पुंज जके
कलिकाल चरित्र न जात बखानै
॥ ४४ ॥

वेद विरुद्ध भयो धरनी
धरनीधर सेविनु को उनधारै
सिद्ध रु साध अगाध भये
कवधौं सबकौं प्रभु संकट टारै
पूरन पाय पयोनिधि कौ
अवलम्ब जराज भले निरवारे
॥४५ ॥

॥ चौबोला ॥

निंदै नारि पुरुष कौ अपनौ पुरुष नारि कौं नारै

नारै सेवक ह्वै साहेब कौं निंदै साहेब नाहक मारै
वेद पुरान सुमत सत मारग करम धरम कुलनासा
कान सुनै की कहा चला हम देषा षूब तमासा
॥ ४६॥

बड़ो बड़ाई छाँड़ि आपनो निचता में सुष माने
धन के लोभ धर्म सब षोये धनि जीवन को जाने
सरमदार पुनि बड़े सबनि ते नहीं बदन पर नासा
नंदलाल पर मौज सुकवि की वरनै षूव तमासा
॥४७॥

जम्बूदीप समुद्र वार भरि दिल्ली पति हद कीन्हा
तबहूँ परत विसारि साहिबी ऊन मानि मन लीन्हा
येते पर वह चढ्यो दच्छिने वढ्यो जदपि विरधाई
वढ़त बड़े को वड़ी आपदा कहा कमी घर आयी
॥ ४८ ॥

पातसाह औरंगजेब सो औरे अदल चलाया
कुलि आलम कौ जेरदस्त करि जोर जेजिया लाया
दिछिनी अैसा तषत छोड़ि कै दच्छिन सर की आसा
सव ते बड़ा तेज तिनहू का देषा षूब तमासा
॥४९॥

भाई मारि भतीजे मारे मारे घर के बेटा
अै उदार उमरावन मारे भले भले पठनेटा
मस्जिद फोर देवाले फोरे दोऊ दिये कलेषा
दिछ्छीपति औरंगजेब का खूब तमासा देषा
॥ ५० ॥

दिछ्छी तषत वखत का हद है येक छत्र का छाजा
जासौ दंड भरौ सिर नावै देस देस के राजा
ताहू सो पुनि अैडि वांधि कै कूटै कटक मवासा
हरम खजाने लै मरदाने देषै षूव तमासा ॥५१॥

सब उपर उद्दित महिमंडल महा तेज मति औरे
भरे भरे करतार तउ वह दौर आपने दौरे
दच्छिन पै जप स्वोसर करने सर मसाहि वैरष्षै
फिरि दच्छिन कौ फिरै साहि तौ षूव तमासा देखा
॥५२॥

वड़े वड़े की बड़े अदल है वड़ौ होइ सोइ जानै
रहै नैक नामी वदनामी वचे दोइ कर तानै
षलक नेक नामी कौ दौरौ वदनामी नहि भावै
होनी होइ होइ पै सोई अनहोनी नहि आवै
॥५३॥

बड़े रहे जिनके हद भीतर तिनके भले मनावै
नेत नेत सों कहे हेत की चेत अनेग दिषावै
साहिब होइ विचारवान तौ करि विचार अवरेषै
गाफिल होइ फलै नहिं कबहूँ षूब फजीहति देषै
॥५४॥

नवरस रसिक दार होई सों षवर षलक का राषै
आगे पाछौ देषि आपनौ मत आछो अभिलाषै
कहा साहि उमराव जो राजा रंक फकीर सिपाहा
सावधान सब ठौर रहे सो रहे षलक का लाहा
॥५५॥

राजा राजनीति करि जाने राज राज जस राजा
राजा राज अनीत करै तो बिगरत है सब काजा
बड़े राजधर राजा ह्वै के रिकरै राम के आसा
षूव षूव कछु परै ख्याल तौ देषै षूव तमासा ॥५६॥
राजा राजनीति मै वाढ़ै प्रजा राजपन पूरे
स्वामि धर्म तै सेवक बाढ़ै छत्री रन छत्री रन मै पूरै
मंत्री गुरू मंत्र ते वाढ़ै व्राम्हन तप की आसा
जन सब अपर षलक चलि जानै देषै षूव तमासा ॥५७॥

पालै प्रजा सत्रु की नाई सत्रु मूल षनि नाषै
षीझै करै षराव मारि कै रीझै रीझन राषै
कपटी चोर चुगल परपंची इनका करै विनासा
अैसा महरम भूप होइ तो देषै षूव तमासा
॥५८॥

सोषै नीर सूर सब जैसे यौ भूपति धन करषै
सर ऊसर नहिं गनै मौज में जहाँ तहाँ जल बरसै
भूपति षलक समान होइ तौ षलक करै सब आसा
अैसा महिरम भूप होइ तौ लष्षै षूव तमासा
॥५९॥

ज्यौं माली वेली फूलन की लघु को सींचि बढ़ावै
तौरे फूल कली सब राखै दीरघ वड़े नवावै
जो यह करम करे राजा तो करै कौन जिय साँसा
जिन कीन्हें तिन सबका सबकुछ देषा षूव तमासा
॥६०॥

जौ राजा डिठ राजनीति तौ कौन अनीति चलावै
जैसी करै तैसिअे ताके छलबल सीष लगावै
सावधान सब ठौर रहै तौ सबै साहिवी छाजै
अैसा ष्याल परै तौ सब दिन राजा राज विराजे
॥६१॥

प्यार यार पर कोप सत्रु पर ज्योति तमस् पर जोरा
सील सूर पर दया दीन पर गुनहगार पर कोरा
प्रीति राम पर नीति षलक पर जीति सैज पर रष्षै
अैसा महिरम भूप होइ सो षूव तमासा लष्षै
॥ ६२ ॥

दीननि पालै दीह उसालै करै काम सब पक्का
गुनहगार जो जैसा तिसको तिसी भांति का धक्का

चोर चवाई चुगलखोर को पास न कबहूँ रष्षै
अैसा महरम भूप होइ सो षूव तमासा लष्षै

॥ ६३ ॥

कहु छल तें वल तें कहुँ कल तें सकलन साल उसालै
वैरिन वधैं बुद्धि के वल तैं देस आपनो पालै
पास प्रवीन रहै निसिवासर करे सुमति परगासा
अैसा महरम भूप होइ सो देषै षूव तमासा

॥ ६४ ॥

सबको अंत सबै विधि लीजै अपने अंत न दीजै
मंत्री मित्र विचारि आपनो मंत्र अगोचर कीजै
सेवै सूर सहस में अकलैं पास आपने रष्षै
अैसा महरम भूप होइ सो षूव तमासा लष्षै

॥६५॥

कारन आदि अंत उर राषैं मध्य आपु करि जानै
साम दाम अरु दंड भेद ते भेद सत्रु कौं भानै
सोधि सोधि सव वुद्धि बुद्धि वल सर करि लेइ हिमवासा
अैसा महरम भूप होइ सो देषै षूव तमासा

॥ ६६ ॥

षल ऊखल को संग न राषै षवरदार रहे आगे
साहेब सोवै सावधान सौ तवहू सेवक जागे
साहेब होइ उदास कबहुँ तौ सेवक करै दिलासा
अैसा महिरम भूप होइ सो देषै षूव तमासा

॥६७ ॥

॥ दोहा ॥
घोरो अपत कुनारि घर चाकर चंचल चित्त
पाँचो सालक भूप के नेगी कुटिल कुमित्त

॥ ६८ ॥

॥ चौबोला ॥

घोरो अपत धसारन में सव मानुष टीक चबाई
लोग मवास सभा मूढ़न सों चलै कौन चतुराई
मंत्री मंत्रहीन बहुतेरे जे राजन के पासा
होइ विचित्र भूप तौ कलि में देषै खूव तमासा
॥ ६९॥

घोरो अपत मिलै मति काहू चाकर करै चवाई
साहेब अविवेकी मति मिलियो ज्ञानहीन गुरभाई
मिलौ न काहू नारि करक सो जो रस मेरि सभारै
देषै पूव तमासा सोई जो येता सब छाजै
॥७०॥

॥ दोहा ॥

ये चौबोला जे कहे चतुर भूप के हेत
सीषै सुने रु करि सकै कारन सुमति समेत
॥ ७१ ॥

अति विचित्र अति साहसी तमी छमी सु दयाल
परकाजी पुरषारथी छली बली भुवपाल
॥७२ ॥

॥ सवैया ॥

पालत गो दुज दीन प्रवीन
न दान अषेसन कौं झर लावै
जो जिहि भांति कौ देष क्रै
तिहि को तिहि भाँति कौ सीस नवावै
पास प्रवीन रहे निसि वासर
दंडि अदंडन देस वसाये
अैसे महीप प्रताप बली
प्रभुता तिनकी रघुबीर न ढाये
॥ ७३॥

॥ छप्पै ॥

मंत्र सरस मति सरस सरस मंत्री सुषदायी
ज्ञान सरस गुन सरस सरस कवि कै कविताई
नीति सरस हरि प्रीति सरस परतीति सरस सब
धर्म सखा कुल कर्म सरस संग्राम सरस जब
यह सील सरस, सच सरसमय सरस त्याग संसार पर
इहि भांति सरस भूपाल सों सु जाकर तर सब जगत कर

॥७४॥

॥ दोहा ॥

जैसे रंगत ना चढ़ै विना विवेक विचार
पचि पचि वृथा प्रपंच ते पचि गये सहित विकार

॥७५॥

॥ छप्पै ॥

मंत्रहीन सतहीन दीन दुषदायक दिन ही
ज्ञानहीन गुनहीन हीनता कहिये तिनही
धर्महीन धनहीन हीन जस रसहू भावै
भगतिहीन भगवान अंस भूपन नहि आवै
इमि अलप योग अवनीय कलि सु प्रबल कलुष जग संघरै
संताप सोक संतत पुहमि सुकाल चाल परिवो करै

॥७६॥

॥ चौबोला ॥

वड़े पुण्य ते राजा होइके वड़ो पुण्य करि जाने
वाढ़ौ वड़ौ के आषि लजाते सो मारग पहिचाने
तपबल राज राजबल प्रभुता प्रभुता धरम विसेषै
तौ सत वरष जिये कलि राजा पूव तमसा देषै

॥७७॥

नाहक ही अन्याय करै नहिं नहिं हारै भूपालै
षलहि न छंडै अरु पाषंडै सहि मंडै सब कालै

मंत्रिन मत में दैत्यन षेदै सपुतन दिल दै रष्षै
तब वह राजा षूव लहाजा कुलि आलम को लष्षै

।।७८।।

सब मत लीजै भेद न दीजै कीजै कारज अच्छा
कपटिन कपटै पर दल दपटै करै रैयतै रच्छा
सबगुन जानै सेवा मानै ठानै भोग विलासा
तब सब छाजा छाजै राजा देषै षूव तमासा

।।७९।।

मंत्रिन में मंत्री ह्वै बैठे भयो गयो सब जानै
सोच विचार विचारवान कौ पंच विचारै मानै
कारन परै आति जब जैसा तब तैसा दिल रष्षै
तब वह राजा षूव लहाजा कुल आलम को लष्षै

।।८०।।

दीनन भाषै अपतन राषै उर अभिलाषै रामै
संतन छांड़ै कीरति मंडै गुनही डंडै कामै
देसहि पालै सत्रु उसालै घालै मान मवासा
तब सब छाजा छाजै राजा देषै षूव तमासा

।।८१ ।।

।।दोहा ।।

अरि गंजै भंजै विपति सदा सु दिल दरियाव
षाइ षवाये षति करै सो राजा उमराव

।।८२।।

सिंघ वधै गजराज कौ सब वन जंतु अघाइ
अैसे विट यो येक कौं लै कुलि आलम षाइ

।।८३।।

।। चौबोला ।।

मारै महा मदोन्मत्त को ऊँचौ मग जनवावै
आपु अघाइ जाइ तजि तबही घने जीव अघवावै

करत झेर नहि कोपि झपत्ते सिंधु सुभाव विसेषै
अैसा मरहम होइ भूप सो षूब तमासा देषै
॥८४॥

राह चोर को राह लगावै राह न बिगरन पावै
जैसा दोष दंड दै तैसा नाहक नाह सतावै
जो जैसा दिल मालिक जानै सो तैसा भरि रष्षै
तब वह राजा षूव लहाजा कलि आलम को लष्षै
॥८५॥

षोटे खरे भरे बहुतेरे सवै सारिषे नाही
को जानै किसके दिल कैसा सवै धनी के माही
जाको जहाँ चाहिअै ताको तहाँ परषि के रष्षै
तव वह राजा षूव लहाजा कुलि आलम को लष्षै
॥८६॥

॥ दोहा ॥

राजधर्म सब में कहे सब राजन में अर्थ
हित करि जौ राजा सुने होइ सुबुद्धि समर्थ
॥ ८७ ॥

गुन औगुन सब कौ सुनै परषै मित्र अमित्र
चूड़ामणि चानक यहै राजा होइ पवित्र
॥ ८८ ॥

॥ छप्पै ॥

भेदै भेद अभेद भेद वल भूतल पालै
भेदै मंत्र अनेग भेद वल सत्रु उसालै
भेदै सकल प्रपंच पंच परपंचहि जीतै
भेदै आगम निगम भेद कैसो कवि जीतै
इहि भाँति भूप सब भेद वल सु सकल सुजस जुगजुग बढ़ै
नरनाह बुद्धि अवगहन हित सु चूड़ामणि चानक पढ़ै
॥८९॥

॥ चौबोला ॥

राजा जाने राज रसायन जोग रसायन जोगी
ज्ञानी ज्ञान रसायन जाने भोग रसायन भोगी
हरि को भक्ति रसायन होवै भजन रसायन आसा
रसना नाम रसायन चष्षै लष्षै षूव तमासा
॥९०॥

पारस वेधै लोहा सरसै पारद वेधै तामे
सूरज वेधै अंधकार को अघ को रघुवर नामै
व्याधि विषम कौ औषधि वेधै कुलि आलम कौ आसा
राजा भेदै राजनीति तौ देषै षूव तमासा
॥९१॥

ज्ञानी ज्ञानचंद कौ जानै पौन बंद कौ जोगी
कामी कामवंद कौ जानै तब कामिन कौ भोगी
हिम्मतिदार हथ्यारबंद को साहेब दिल अवरेषै
राजवंद मै राजा महारम षूव तमासा देषै
॥९२॥

पारद बंद होइ तौ तामै करै कनक बहुतेरा
सुधरै कहू लंगोट बंद तौ उपजै जंतु घनेरा
जौ कहू राजबंद मै राजा राज करै कोइ जानै
करै वंद सो दंद कहू तो षूव तमासा ठानै
॥९३॥

राषै सूर वीर वंद तौ हो न विवंद न पावै
ज्यो षेलक सतरंज का अच्छा चूकै कबहु न दावै
जीतै नजरवाज ह्वै वाजी दाऊ कुदाउ परष्षै
तब वह राजा षूव लहाजा कुलि आलम को लष्षै
॥९४॥

॥ दोहा ॥

राजनीति में नृप चलै सुफल फलै मन काम
सुष सम्पति संतत बढ़ै पढ़ै षलक जस नाम
॥९५॥

ज्यौं परजा राजा बिना विन गुन ज्यौं जल कूप
त्यों ही जानहु जान सब राजनीति बिनु भूप
॥९६॥

जव वलबीर आरि बलि सुत सम्पति जय सोइ
दिन दिन राजन राजश्री राजनीति ते होइ
॥ ९७ ॥

॥ छप्पै ॥

इहि विधि बरनत पंथ नाम चानक चूड़ामणि
आगम निगम निदान ज्ञान मानिक गन गनगनि
गूँथ सुमति गुन माल सुकवि गोपाल सुहायो
राजसिंघ भूपाल भूप भूषण मन भायो
जगमगत सुजस कीरति रतन सु जतन सहित हित कीजिये
कलिजुग नरेस उपदेश सुदृढ़ सुकलित कंठ करि लीजये
॥९८॥

॥ दोहा ॥

साम दाम अरु दंड है भेद भेद कहि दीन
राजसिंघ नृपराज हित सुकवि ग्रंथ रुचि कीन
॥९९॥

सव समुझै सब ही सुनै है सब ही कै काज
सव पूजै मनकामना राज करै नृपराज
॥१००॥

वरनि राज थल राज श्री राजनीति मति सार
अव कलि कर्म अकर्म को करत ग्रंथ विस्तार
॥१०१॥

।। इति श्री हैहय कुल कमल प्रकास भास्कर प्रताप
राजा राजसिंघ चूड़ामणि चानक गोपाल विरचितायां
नीति शतक समाप्तम् ।।

मंत्र शतक का प्रतिपाद्य

मंत्रशतक में मंत्रियों के भेद विस्तार से उल्लखित हैं। कवि कहता है, यदि दीवान या मंत्री सर्वगुण-सम्पन्न हो, तो राजा सुख की नींद सोता है। मंत्री के चार प्रकार बताये गये हैं। पहला, वह विचित्र नामवाला उत्तम बुद्धि से सम्पन्न होता है। दूसरा, वह भविष्य, भूत तथा वर्तमान की पूरी जानकारी रखता है। तीसरा, स्वामी की सेवा छोड़ उसे दूसरा कुछ अच्छा नहीं लगता और चौथा प्रकार, वह स्वयं कष्ट झेल लेता है,पर स्वामी को आँच नहीं आने देता।

इस तरह, इस शतक में मंत्रियों के गुणों का विस्तार से वर्णन मिलता है। वह वह राजा को अपनी सेवा से उसी तरह अपने अधीन कर रखता है, जैसे सुंदर नायिका अपने गुणों से नायक को अपने वश किये रहती है। इस शतक में विविध श्रेष्ठ मंत्रियों के दृष्टांत उपलब्ध होते हैं।

क्रमशः

२

।। मंत्र शतकम् ।।

जै जै विघन हरन गन नायक सुषदायक सब काजै
असरन सरन करन सुभ मंगल अपमंगल सब लाजै
दीजै सुमति करन हित चानक दीपक ज्ञान प्रगासा
महाराज श्री राजसिंघ हित वरनौ षूव तमासा
।।१।।

जो कछु भयो होत जो ह्वैहै कहो वरनि मति जैसी
चूक्यौ सुकवि सुधारि लीजियो जह जैसी हो तैसी
प्रगटै मंत्र सबहि सब कारन सबहि सुनै हित लागै
राजसिंह हित षूव तमासा जुग जुग कीरति जागे
।।२।।

मंत्रन के जे भेद होत हैं तिनको भला कहै को
जद्दपि सुकवि कहत सब हित की तद्दपि हरषि गहे को
जौ कबहू नर गहे हेत करि सुष वाढ़ै अनलेषे
षूवी करै षलक मै अच्छा षूव तमासा देखै
।।३।।

विन गुन चाप जुगति विनु जोगी सुकवि विना मृदुवानी
ज्यौं दीपक बिनु भौन देषि त्यौं मंत्रन विनु रजधानी
नर बिनु नारि नारि बिनु संतति संतति बिनु कुलनासा
जस बिनु दान दान बिनु दाया देषा षूव तमासा
।।४।।

घोरो सुपत सुनारि सदन मै सुष सपूत सुषदायी
मित्र सुहृद हद श्रीरस हरि कै रसिकन रसक महाई
राम नाम मुष सो निकसै नहि जंत्र मंत्र विश्वासा
मंगल गारि नारि दिन गावै द्वार दान कै आसा
।।५।।

मंत्री गुरू मंत्र ते गनुवौ राज गनू करि राषै
निरष परष सै वार हरषि कै साहिब सनमुष भाषै
साहिब सावधान सव जाने करे काम सब लेषै
सो राजा दिनमान दुनी कै षूव तमासा देषै
॥६॥

हिम्मत सूर सिपाह चाहिये हय चोषा मुष सच्चा
दिल मालिक दिल साफ चाहिअै बिनु सेवक मति कच्चा
सवगुन गन देवान होइ तो साहेब सुष भरि सोवै
तब लगि साषन ज्यो बिनु माषन छूछो माठ विलोवै
॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

महामंत्र मैं जे कहे मंत्री चारि प्रकार
चतुर भूप चित दै सुनौ तिनके सव व्यौहार
॥८॥

॥ छप्पै ॥

मंत्री येक विचित्र नाम उत्तम मति भारी
भावी भूत रु वर्तमान आगम अधिकारी
स्वाम धर्म दृढ जासु कर्म दूजो नहि भावै
सहै आप तन पीर साहवै आँच न आवै
सोच देस नृप कोस जिन सुभाँति भाँति सम्पति भरै
इह भाँति होइ दीवान तौ सु अभय राज राजा करै
॥९॥

॥ चौबोला ॥

वामन को वल लग्यो समर्पन टोटी सक्र समायो
प्रभु हित कर्‌यो प्रपंच तभै मकु आषि फोरायो
अजहूँ करत मंत्र निसिवासर कहत इंद्र पद लैहों
वलि को दै सुर लोक मंत्र वल इंद्र पताल पठैहों
॥१०॥

मंत्री सरस राम के कहिए महामंत्र जिन कीन्हें
वांधे सिंधु सहेत न वंधन रहे पैजपन लीन्हें
लंक पंक करि दनुज दीह हरि करि कीरति अनलेषा
श्री रघुनाथ साथ कर मंत्रिन षूव तमासा देषा

॥११॥

इक मंत्री इह भाँति के धरत पच्छ दुहु लाज
आप काज प्रभु काज कौ कबहु न करत अकाज

॥१२॥

॥ सवैया ॥

बहु भेद निषेद निवेदन कै
सम भाव प्रभाव न जानि परै
कछु लोभ अलोभ अमान क्षमा
कहु टेक अनेगन चोरि धरै
निजु देस सुबेस वसाइ सबै
परदेस कौ सम्पति देषि परै
अपने हित को प्रभु हेत सुतौ
मति मंत्री ह्वै मंत्र कहा न करै

॥१३॥

॥ दोहा ॥

निज प्रभु कौ निज दास सम पर प्रभु को प्रभुराज
जाके मंत्र अनन्त सो सव मंत्री सिरताज

॥१४॥

॥ छप्पै ॥

छल अनन्त सो छलै छली कोइ छल नहिं पावै
बल अनन्त सो प्रबल बली कोई निकट न आवै
धन अनन्त सो धनी धनी सो मनी न राषै
सकल तसाल उसालि साहिबे सुष अभिलाषै

इमि राजसिंघ हित संग्रही तौ मंत्रन पर मंत्री सरस
संसार सुजस विस्तार वर नर न पारस परस
॥१५॥

जोरै दाम काम साहिब के लेषा षाइ षवावै
दिन दिन बढ़ै साहिबी सालिम अैसा मंत्र उपावै
हिम्मति सूर सिपाह वंस सो ठीक ठाक रन रष्षै
तव सो राजहि मंत्री छाजहि षूव लहाजहि लष्षै
॥१६॥

मंत्री सुघर नायका जैसी नायक वस करि राषै
कहू हाव कहु भेदभाव करि छिन छिन मति अभिलाषै
सुकिया होइ सकल रस रंगनि नृपति विचित्र परष्षै
सो राजा दिवान षलक का षूव तमासा लष्षै
॥१७॥

सार सार मत ग्रहै रूप ज्यों तुच्छ छोरि कन राषै
यो दिनमान नृपति हित अपने कुमति दूर करि नासै
कबहु न होइ अकाज राज कौं राज राज जस राजै
जुग जुग चलै अहान कहानै मंत्री कबहुँ न लाजै
॥१८॥

॥ दोहा ॥

इक यह लोकी होत है इक वह लोक प्रमान
इक यह ऊ वह ऊ लहै इक यह वहन निदान
॥ १९ ॥

॥ छप्पै ॥

इक यह लोकी होइ जिसौ पृथुराज उजागर
इक वह लोकी होहि सुतौ हह चंद विभाकर
यह वह लोकी येक भयो वलि वलि ज्यों जस गायो
इह भाँति चतुर मंत्री नृपति सु जिन जैसो कछु संग्रह्यो
तिन पायो गति तैसीअै सु अव सव कौ हित करि कह्यौ
॥२०॥

॥ दोहा ॥

देस देस पुर सीष रचि षेत षारि निरधारि
यह लौकी पृथु चक्कवै भयो सुमंत्र विचारि ॥२१॥

॥ चौबोला ॥

तज्यौ न सति हरिचंद भूप मकु तज्यौ राज रजधानी
येक आस विस्वास पकरि कै भर्‌यो डोम घर पानी
सकल भूमि संकलपि अलपि करि करि कीरति आसा
भयो अटल वह लोक संत्र वल अैसा षूव तमासा
॥ २२॥

राजा बलि सत जज्ञ ने सुले सत मष हौन विचार्‌यो
हाँथ पसारि तनक से प्रभु पुनि त्रिभुवन पाइ पसार्‌यो
दै पाताल पुनि भये पौरिया इंद्र भोग की आसा
यह वह लोक सुधारि मंत्र बल अैसा षूव तमासा
॥२३॥

येक हजार वाहु को राजा महा दोष सिर लीन्हों
इंद्र हिमाद्रि नंदिनी मुनिवर नृप को न्योता दीन्हों
लोभी भूप भयो लषि अचरज कुमति ताहि वनि षोयो
परसराम तिहि वैर विरचि कै नीकै करि कुल धोयो
॥२४ ॥

इंद्रचंद सौ वड़ी मिताई रूपवती गुरु नारी
छल बल वृथा पापरत दोऊ करी धरम की ष्वारी
सुरपति के तन भयेउ सहस भग करे नैन दुरवासा
चंदहि चढ़्यो कलंक सदा कौ अैसा षूव तमासा
॥२५ ॥

राजा सगर हजार साठि सुत महाबीर मन भाये
सो करि करै अस्वहित सवहिन षनि षनि माटी षाये
घोरो देषि कपिल मुनि पाछे घने कोप उर धारे
चितै नैन रिषि राज राज सुत सवै भसम करि डारे
॥२६॥

राजा नल सो भयो मंदमति छिति छल बल ते हारा
दमयंती अति रूपवती स्यो दीन्हों देस निकारा
चारि चारि दिन होत न काके संपति विपति संघाती
देषै षूव तमासा राजा जाने होती जाती
॥ २७ ॥

राजा सुरथ राज सब अपनो सौंपि दिवानै दीन्हौं
औरे करत और कछु वीती राजा हाथ न कीन्हौं
निसि दिन नृपति रहत मृगयारत भयो अंत में नासा
महामंत्र बल महाराज कोइ देषै षूव तमासा
॥२८ ॥

राजा नृगु गोदान कोटि विधि दिन प्रति विप्रनि देतौ
दुसह करम तै भयो गिरगिटा पर्यौ कूप दिन केतौ
तारे कृष्न कृपाल ताहि पुनि सुतौ पुरातन वातै
मत बिनु राजा षूव लहाजा लहै न छाजा जातै
॥ २९ ॥

निरषि परषि सै वार हरषि के तौ मुख वाहेर आने
भावी भूत रु वर्तमान सव भूप वरनि सब दानै
सावधान दीवान होइ सव सोधि वुद्धि उपजावै
सो राजा कुल आलम छाजा षूव लहाजा पावै
॥ ३० ॥

राजा अजर अमर करिवे कौ सुफल विप्र लै दीन्हों
राजा रसिक जानि नव जोवन प्रान प्रिया कह कीन्हों
रानी पगी वपर या ऊपर सो गनिका कों भोगी
देषि षलक का खूव तमासा भया भरथरी जोगी
॥३१॥

विद्यावीर विलास सकल गुन राजा विक्रम जानी
व्रजहू कहत वतीस पूतरी सरसै सरस कहानी

तिनके रहे रतन नव पंडित करे कावि अनलेषै
ता राजा के वड़े सुकवि सब षूव तमासा देषै
॥३२॥

राजा धरम धीर मोरध्वज समै सन्त नहि हार्यो
रानी पुत्र करौ सीस तै आधौ देह उतार्यो
डिढ विसवासनि रषिकै श्री हरि हरषि आपने जाने
जुग जुग चलै अहान कहाने जे षूवी सब जाने
॥३३॥

पर दुष हरै करै पुरुषारथ धरै धरम उर रामै
साहसीक संकै न सैनपति सदा सकल पति जामै
दिल दरियाव अजीत न जीतै तोरै मानि मवासा
अैसा महरम होय भूप तो देषै षूव तमासा
॥३४॥

सोई राज सोइअै राजा जो राजी सव राषै
रजाचंद को ठीक ठीक का राजनीति अभिलाषै
जौन करम ते होत जो न कछु तौन तुरत अवरेषै
सो राजा कुलि आलम छाजा षूव लहाजा देषै
॥३५॥

राजा परम प्रवीन परीछित परम पुण्य पन धारी
विधिवस कुमति वृथा नृप मुनिवर उरग मृतक लै डारी
लषि रिषि तात श्राप ततकालहि देतहि भयो विनासा
राज-भयो ते गयो जान सब देषै षूव तमासा
॥३६॥

पीपा गांगरौनि कौं राजा सदा भवानी पूजै
येक आस विसवास सकति बिनु जानै और न दूजै
भेदी पाइ भेद सब पायो राम भगति अनुरागी
देषा षूव तमासा सबका इक राजा वैरागी
॥३७॥

परसि कृष्ण पद पाइ छाय जिन प्रगट कर्‌यौ महिमाही
संष चक्र के दाग लगत ही पाप पुरातन जाही
वोध्यो वाध वुजायो चंदा राम भगति विसवासा
वूड़े सिंधु कनक द्वारिका देषा षूव तमासा
॥३८॥

रूप सनातन भये भूप वे देस गौड़ वंगाला
हैय गय भौन भंडार सकल सुष रूपवती वहु वाला
मंत्री पुत्र पंच परपंची सब अपने अनुरागी
देषि षलक का षूव तमासा भये त्यागि वैरागी
॥३९॥

वूड़त वंस कपूत पूत में होत सपूत उधारै
मेटै कुल कौ सकल कालिमा आपु तरै कुल तारै
ज्यौं दीपक तम पुंज निगलि के उजियारे ते मोहै
काजरु नेन कामिनी आंजे अंक कागदै सोहै
॥४०॥

होत कपूत वंस में जैसे वास अगिनि पर काढ़ै
सबको होइ कलेस आनि कै आप उठै वन ठाढ़ै
ऐसे अपत होइ सब ठौरनि सबके करै विनासा
ठाकुर ठीक अपत को ठोंकै ठानै षूव तमासा
॥४१॥

॥ उदाहरन ॥
हृदय माहि घर भये प्रबल ज्यौ तैसो वेटा हारी
राजकरन कों गढ़ा राज सों षाष स्वाह करि डारी
करि ऊधम मिलि गये धूरि में भये सबनि दुषदायी
घर को षोइ भये घर घर के कै दिन करे रजाई
॥४२॥

राजा वधे राज के कारन कहा राज उन कीन्हें
प्रवल पाप ते हरी यही मति कुल कलंक सिर लीन्हें

कहा भयो कीन्हें पुरिषारथ सवै अकारथ लेषा
मिल गै षाष साष बिनु तिनका षूव तमासा देषा
॥४३॥

अति के वंधु विरोध वुद्धि विनु अति गाफिल अति लोभै
अति आंडिल अति चतुर रसिक अति विना विचार न सोभै
अति अति माम अतिहि परपंचिन वढ़े पंच अति के है
अति अपवाद विषाद भेद ते गयो गढ़ा मिलि पेहै
॥ ४४ ॥

हित की बात लगै अनहित सी अनहित सी हित लागै
सोवै सुमति जहाँ निसि वासर कुमति जगावै जागै
इक कोढ़ी अरु कही खाज तन वाढ़ी व्याधि वुढ़ाई
पौरुषहीन हीन के भाषे कहि को करै निकाई
॥४५ ॥

ज्यौं चलनी तजि सार सार सब चोकर सौ हित मानै
यों ही मूढ़ सुमति तजि हित की अनहित कुमतिहि ठानै
छुद्रन के मन घने छिद्रता करते तुसहि सकेला
जासौं काम परै सो डारै ताते सूप दुहेला
॥ ४६ ॥

परपंची सव राज बिगारे काज बिगारे लोभी
रन कायर कुलि कटक विगारे हिम्मत विना असोभी
भेष लालची भेद विगारे करे कहा लौं लेषा
कान सुने की कहा चली हम षूव तमासा देषा
॥ ४७ ॥

॥ दोहा ॥

सकल सुमंत्र कुमंत्र जे कहे सोधि सब तंत्र
फुरै मंत्र हित गोप ते फूटै फुरै न मंत्र
॥ ४८ ॥

।। छप्पै ।।

आगम निगम निदान ग्यान जप मंत्र जंत्र गति
कहि कहि सकल विचारवान सुविचार नृपति मति
प्रगट करै संसार सकल मारग सव कारन
उत्तम मध्यम विविध भेद भूपन निस्तारन
अव जहि जौन मन भावई सो तैसो सब सग्रहै
यह कहत सुनत कछु दोस नहि सु जैसे करै सो त्यौ लहै
।।४९।।

।। चौबोला ।।

कियो बिभीषन गोत वद्ध जौ सव हित को मन भायो
थापे राम समुन्दर सेतरु चंद्र आरि बल पायो
गोतवद्ध के प्रवल पाप तै घटै बढ़ै षनमासा
करै सुभोग भोगवै तैसा अैसा षूव तमासा ।।५०।।

।।सवैया ।।

आपु कुमंत्र में जात बहे
वहकावत और अनेक वृथा ही
ग्यान अनंत कथे सब हेत
पै आपु समीप न ज्ञान के जाही
और सो धूत कहे धन धामु है
आपु पचे धन धामहि माही
आनिहि देत महामति है पुनि
आपु में येक रती मति नाही
।।५१।।

।। चौबोला ।।

अपनो दोस आप नहिं देषै हंसै और के दोषै
आपु भरे अपराध लाष दस औरन के नस भाषै
सीष देहि कोउ जुआ नहि षेलौ आपु जिये लषि जूवा
सवसों कहे देषि पग धरियो परत आपु है कूवा ।। ५२ ।।

वैद पानरत मूढ़ प्रगट नट दुज अचार विनु फीको
कायर पुरुष जुद्ध मै धरि कै घोरो अपतन नीको
राजा मंत्र हीन विन मंत्री कौन मंत्र तह लागै
दुसह भरम ते वसै देस नहि कलह काल ना जागै
॥५३॥

॥ चौबोला ॥

बिनु मद दुरद विना सर पंकज निसि ससि बिनु ज्यौ पूरौ
सील प्रमुद विनु अस्व चालि विनु बिनु मंगल धर धूरौ
विना व्याकरन संसकृत जैसो सभा सुकवि विनु फीको
कुल सपूत विनु नरहरि जस विनु लागत नर नहिं नीको
॥५४॥

जौ तन छिमा कवच कहा कीजै क्रोध सत्रु विनु तन में
ग्यान अनल ते और अनल का रहै सुमति जो मन में
निकट सत्रु तौ और सरप का लाज लाष का गहना
ठीक सुकवि तौ ठौर घनेरा वारवार क्या लहना
॥ ५५ ॥

नाव नीर कौ दीप कुमत कौ पौन वीजने आवै
मत्त गजन कौ अंकुस वस कों सबको सबै उपावै
चिंता येक रहत निसि वासर जदपि सकल गुन ज्ञाता
दुष्टन के मनहरन औषदै हार्‌यौ ढूँढि विधाता
॥५६॥

पानी प्रबल आंगि कौ औषद छाँह धूप मम खेदा
गदहे गाइ भैंस पसु जैसे तिनको मूल लवेदा
व्याधि विषम कौ मंत्र औषधी सब ग्रंथिन के माही
पंडित सुकविन ढूँढि थके सब मूढन को कछु नाही
॥ ५७ ॥

कौन मगर मुख तै मनि काढ़ै पैरि सिंधु को जैहै
सिंधु सरप कै पुच्छ पकरि कै कौन षैंचि घर अैहै

कौन हलाहल पिऔ पेट भरि षलक करै को लेषा
मूरख को के मंत्र द्रिढावै षूव तमासा देषा
॥ ५८ ॥

तातौ तऔ नीच की संगति वारि बूंद वरि जाही
कमल पत्र पर परत हरत मन जदा तहाँ सरसाही
सोई परत सीप सप संगति अति पानी परगासा
जैसी संगति बुद्धि तैसिऔ ऐसा षूव तमासा
॥ ५९ ॥

स्वाति वुंद सतसंग पाइके मुकता नाम कहायो
वहै षात सुष होत गात पुनि वहै खात मरि जायो
वहै बुंद परि केरि गाभ मे वास कपूर सुहाही
सोहै षूव मिलै तो सव को षूवी षूव सराही
॥६०॥

वडो परै लघु परै संग तौ तिनहू देत वड़ाई
होत फुलेल फूल तिल वासे वहै वायु सरसाई
नीच गलिन कौं मलिन नीर बिनु गंगाजल ह्वै जाही
संगति सरस परै औसर सें षूव तमासा माँही
॥६१॥

वड़े भाग ते राम भगति कुल भागवान सो लैषै
बड़े भाग ते षूव तमासा नर विरला कोइ देषै
कपटी मित्र कुटिल घर सेवक कायर कटक सुजाती
लीन हलाल करे साहव के घर राषै अहिवाती
॥ ६२ ॥

नृपति अमान मंत्र नहि मानै कहा करै कोई मंत्री
सुनै न तान कान दै कोई कहा वजावै जंत्री
॥६३॥

पूरन पाषै मौजनि वरषै लोभ न करषै घर मै
पैज सुधारे दीन उधारे वैरिन फारे फरमे
जानि निवाजै आवे काजै कर्‌यौ विराजै राजै
तौ पर काजै कीरति राजै षूव लहाजै छाजै
॥६४॥

॥ दोहा ॥
सोई भूपति साहसी सोई भूपति सूर
सोई भूपति मंत्र द्रिढ़ देस चढ़ावै नूर ॥६५॥

॥ चौबोला ॥
दान धर्म पर ज्ञान ब्रह्म पर ठीक कर्म पर लग्गै
काम वाम पर टेक राम पर येक नाम पर पग्गै
रीझ मौज पर वीर फौज पर धीर चौज पर रष्षै
तव वह राजा षूव लहाजा कुल आलम का लष्षै
॥६६॥

घरी धरी पर पहर पहर पर दिल मालिक सो बोलै
आपु राषि रुष राष रसिक वर गूढ़ मंत्र नहि षोलै
होसियार अरु हिम्मति वाला पहरू राजा रक्खै
तव वह राजा षूव लहाजा कुलि आलम का लष्षै
॥६७॥

साहस साधै राम अराधै छलबल वैरिन वांधै
मरदाने कै किम्मत जानै हिम्मति ठानै काँधै
जो सब सूरौ मंत्रिन पूरौ कीरति रूरो रक्खै
सव गुन सूरो मंत्रिन पूरो कीरति नूरो रष्षै ॥६८॥
राजा जाके वसै देस में वड़े वड़े धनुधारी
लाषन देहि लेहि लाषन के करि करि साहूकारी
हरषै घर घर देषि सम्पदा सव अपनाकर बोले
षलक षजाना भूप सयाना समय समय ही षोले
॥६९॥

जाके राज सकल सुष सम्पति दिन दिन दया निकाई
षान पान सनमान दान सव है सबको सुषदायी
सम्पतिवान सकल नर उद्धित भागवान वसवासा
जारा जाका षूव गुलुथ सो देषा षूव तमासा
॥७०॥

घर घर नारी सव सुषकारी मंगल गारी गावै
रसिक रसीली परम लजीली पिय को रीझ रिझावै
सील सकोच न सबके लोचन विरह विमोचनकारी
देषै षूव लहाजा राजा पुसी देषि नरनारी
॥७१॥

और देसि को जेरदस्त करि अपना देस वसावै
रहै मंडोई अैडदार कोइ मेडे और न पावै
भुमिया भूमि महा मरदानै हुकमी वंदा रष्षै
तब वह राजा षूव लहाजा कुल आलम को लक्खै
॥७२॥

नाहक हतै जीव नहि दाया धरम करम नहि धारै
दोष देषिकै सीष लगावै विना दोष नहि षोरै
नासौ राजनीति सब समुझै ताहि औगुनो लष्षै
अैसा महरम भूप होइ सो षूव तमासा देषै
॥ ७३ ॥

अमल आरसी अंध न जाने जाति न जानै कामी
मंत्री मूढ़ मंत्र ना जानै नैना नोन हरामी
रीझ मौज गुन सुमन न जानै रन कायर का लेषा
साकत रास भगति नहिं जानें षूव तमासा देषा ॥७४॥
सुकिया रसम नहिं और सुंदरी सुरसरि सम नहिं सरिता
कृष्ण रसिक सम रसिक न वरने मदनदास के दरिता
रघुवर से नहिं सूर समर कों नहिं लष्षन से छाजा
मंत्रन कौ सब गुप्तहि राषै करै सुमंत्री राजा ॥७५॥

वोझिल जाति वोझ सिर दीजै जो भरि मजिल निवाहै
नत वै करै अकाम बीच ही कहियतु जाहै ताहै
गज को भार गादहे दीजै कहा गरीब चलावै
वित्तमान जब भारहि लादै तव षूवी सच पावै
॥७६॥

नाव तनक सौ भार सौ गुनौ गहिरे धार धसावै
आषर वूड़ि मरै हलकोरन दोऊ पार नसावै
जो षेवक वह पौत तौल तौ करै धार अनलेषै
अैसा महरम होइ भूप जो षूव तमासा देषै
॥७७॥

जस कौं भार कहा सूमन कौ कहा भार रस राडैं
राजभार सव कहा मूढ़ कौ लाज भार कहा भांडै
गज को भार कहा गादह को रन कायर का लेषा
साकत को हरि भगति भार कह षूव तमासा देषा
॥७८॥

राजा भार न लद्यो पुहकरै आगन पाछ विचारो
करिकै भली फजीहति नृप को दीन्हों देस निकारो
भारी होइ भार सब झेलै ताहि आपनो कीजै
भार झेल कै रहै वीच तौ षूव गरदनी दीजै ॥७९॥
भार वड़े कौ वड़ौ भार ते वड़ी वड़ाई पावै
वड़ौ भार जौं ओछहि दीजे अंतहि सवहि नसावै
साहेब होइ विचारवान तौं कर विचार अवरेषै
गाफिल होइ फलै नहि कबहूँ भली फजीहत देषै
॥८०॥

सबते वड़ो कहत करनी को जौ कोइ ओर निवाहै
सोई बड़ौ वड़ाई लायक वड़ो साहिबी चाहै
पूरी परै सरै सब कारज टेक न कबहू छूटै
तौ राजा कुलि आलम छाजा षूव लहाजा लूटै
॥८१॥

॥ दोहा ॥

मंत्री मंत्र विचित्र अति अति वाढ़ै अति माम
अति हुस्यार साहसी यह मंत्री कौ काम
॥ ८२ ॥

विना मंत्र सब स्मारिअै कहा रंक कहु राउ
चौपरि सारि सबै मरै जुगहि न मारै दाउ
॥८३॥

जुग वाध्यो जिन मंत्र वल जुग जुगननि कों आउ
वाजी जीतै जगत की जुग फेरै कोउ दाउ
॥८४॥

॥ कवित्त ॥

सील बल सज्जन विसाहि लेत हेत करि
धनबल लोभित कों लोभ गहि भानिये
छलबल वैरिन कों छेंकि मारै छहराइ
नीति वल षलक निकाई नित ठानिये
दया वल दीनन प्रवीनन को प्रीति वल
प्रभु को सदाई सुषदायी दास जानिये
दल वल दान वल सकल सयान वल
मंत्रवल मंत्री महि मंडल में मानिये
॥८५॥

देस को दयाल परदेस को विसाल साल
सत्रुनि उसालि करै इंधनु अदाह कों
राषै सब राजी सूरवीर का चढ़ावै वाजी
जीति जीति वाजी चीन्हें हिम्मति सिषाह कों
झेलैं सार झार कुलि षलक षवरदार
सकल विचार करै सव के निवाह कों
रीझै गुनगाह करै कीरति को चाह करै
मति अवगाह सोई मंत्री नरनाह कौं
॥ ८६ ॥

॥ दोहा ॥

मंत्री औसे मंत्र मैं करै सदा सुभ राज
दिन दिन वाढ़ै साहिवी कबहुँ न होइ अकाज
॥ ८७ ॥

मंत्री परै कुमंत्र में करै राज सब नष्ट
बांस जरै इत, वनस्पती को पर होवत है कष्ट
॥ ८८ ॥

॥ चौबोला ॥

चंदन करत सकल वन चंदन सरस सुगंध उमेदै
अरस परस ते रहत सरस तें वाद वाद ते भेदै
येते पर नहि तजत वाहि को प्रगटै अगिन सुजी कों
आपु जरत सब जरत कानने याते अपतन नीको
॥८९॥

भैरो ललित विभास सांझ प्रति तेर अपालै मारू
रीझै रसिक रीझ तिहि वकसे उच्चै गुनी विचारू
वूझै राहै कहो पछिम की दक्षिन करै पयानै
भावै जाइ जहाँ यह घोरा हमै आगरे जाने
॥९०॥

अैसो मंत्री करै मंत्र तो कहौ ताहि का कीजै
भिदै न भेदनि षेद वेद कौं वहुनै ताहि पतीजै
भावै जाइ जहाँ यह घोरा हमै आगरे जाने
मन आवै सो करै मौज में अपने मगज विकाने
॥९१॥

विमुषनि सीष लगैं सुष मुष सों दिन दिन सठनि मिटाहीं
जिहि ते बढ़ै कलेस जीव कों वहै अपत रुचि पाहीं
जैसे नीम प्रथम ही करुवो पुनि सब सुष को जाता
यह अैसा है षूव तमासा लहै सो पूरन ज्ञाता
॥९२॥

औगुन हरै करै गुन पूरन सूरहि नूर वढ़ावै
प्रभुता वढ़े घटे नहिं कबहूँ जो मक पढ़ै पढ़ावै
मंत्र अनेग होइ दृढ मंत्री लहै सुमति सुष छाजा
महरम होइ करै सब षूवी षूव विराजै राजा
॥९३॥

॥ सवैया ॥
येकन के मत लोचन येक से
येकन के नहिं जात है हेरे
येक वड़े वड़े लोचन झावरे
येकन हू नहि सूझत नेरे
येकन से सरसे वरसे रस
लोल अमोल करे जिनि चेरे
लोचन छै सबके सब देषत
सालिम लोचन अंतर केरे
॥ ९४ ॥

॥ दोहा ॥
सोई सवल सराहिये जोतिन बुद्धि प्रकास
वुद्धि वृद्धि ते वृद्धि है वृद्धि नास ते नास
॥ ९५॥

षलक निकाई जौ चहै सुमतिहि कुमतिही कौन
षलक रषैया राम है षल नहि जानत तौन
॥ ९६ ॥

ये दिन जात अकारथै ये दिन वहुरि न होइ
ये मन ये दिन राम रटौ काम न आवै कोइ
॥ ९७ ॥

भव भय के उद्धरन कौ दीन्हीं बुद्धि विसाल
जानौ वृज गोपाल कौ वृजभूषन गोपाल
॥ ९८ ॥

इहि विधि मंत्र विधान सव वरने कवि गोपाल
राजसिंह नृपराज हित संग्रह सुमति रसाल

॥ ९९ ॥

सवै राज के काज कौ संग्रह सार समाज
ग्रंथ राज उधृत कर्यो राजसिंघ नृपराज

॥ १०० ॥

राज राज राजा पढ़ै वढ़ै धर्म धन धाम
अभै होइ सब भयनि तैं भजि सुंदर श्रीराम

॥ १०१ ॥

॥ इति श्री हैहय कुल कमल प्रकास भास्कर प्रताप राजा राजसिंघ चूड़ामणि चानक गोपाल विरचितायां मंत्र सतकं समाप्तम् ॥

(२)

क्रमशः

शिक्षा शतक का प्रतिपाद्य

इस शतक में विविध प्रकार के उपदेश हैं। इसके उपदेश सामान्य लोगों से सम्बद्ध हैं। कवि ने सुप्रसिद्ध पुस्तक 'शुभाषित रत्नाकर' से भी शिक्षा के विषय ग्रहण किये हैं। विविध पौराणिक कथाएँ भी उपदेश के रूप में चर्चित हुई हैं।

कवि ने स्वभावतः अपनी बात आलंकारिक रूप में प्रस्तुत की है। उदाहणार्थ, वे कहते हैं- 'बिना अकल कछु अकल न आवै।' अर्थ स्पष्ट है, कि बुद्धिमत्तापूर्ण बातें समझने के लिए भी बुद्धि की आवश्यकता है।

इस तरह, कवि ने विविध ग्रंथों से उपदेश ग्रहण तो किये ही हैं, इस विषय में अपने विवेक का भी उन्होंने भरपूर उपयोग किया है।

क्रमशः

३

॥ शिक्षा शतकम् ॥

जै जै जै व्रज चंद नन्द सुत सुर कुल आनंदकारी
सकल लोक नायक सुषदायक वृंदा विपिन विहारी
अघ भंजन गंजन अरि संतन सव घट घटनि निहारे
हरि भक्तन हित रहत कृष्ण वर संख चक्र कर धारे
॥१॥

नव नीरद अभिराम स्याम तन काम कोटि मन मोहै
नव नीरद अभिराम स्याम तन काम कोटि मन मोहै
सुंदर वदन सदन सुषमा को सब सुषरासि विशेषा
प्रगट सकल संताप हरन कौ हरि सो हितु ना देषा
॥ २ ॥

॥ दोहा ॥
सीष सवन कौ दीजिये सवकी लीजै मानि
सीष सदा सीषै सुनै होइ न कबहूँ हानि
॥ ३ ॥

हितू हितू को जानि के कहै हेत की बात
अनहित कबहुँ होति हित हित अनहित ह्वै जात
॥ ४ ॥

॥ चौबोला ॥
सोई चतुर सूर गुन ज्ञाता सुषदाता कृत मानै
देस विदेस विचारि आपनो समौ जानि चलि जानै
देह धरे सब जतन कीजिये जब लौं लेषा भरना
नदी उतरि जव भये पार तब कहा नाव लै करना
॥५॥

वकतर कुंड राग हय पष्षर तेग नरक से ठाले
गजमुष नाक चूनवति वांधे घोरे घने उछाले

ऐसे मरद जरद बिनु हिम्मति अंत गरद मिलि जैहैं
हेत धनी के षेत रहत जे तीन लोक जे जैहैं
॥ ६ ॥

॥ कवित्त ॥

धाये धाये फिरत धरा में छाये गढ़ि गढ़ि
पठि पठि मंत्र जंत्र तंत्रन समेत में
साधत पवन पया पावक लपट कोटि
कोटिक उपाइ करौ जानि किहि हेत मैं
कहत गोपाल तप मारग सुगम है न
काहे को पचत गति हेत कहि देत मैं
हा हा करि मुकति फिरति आगे पीछे होइ
सूरन के येक षग्ग षोल्यो जाइ षेत मैं
॥ ७ ॥

बिचलिबो न जानत न ऊन मन मानत है
घाईल गे जानते न आनत न संक है
करे रन जूहे जे सराहें दीन टूटे नहि
समर फतूहे सूर ताको वे नरक है
कीरति अपार जुग जुगनि गोपाल कहि
कलप अनेगन तें मेटत कलंक है
सोई तो मरद जाकों लरिवे बिलोक नैन
लरै उरवसी सातों भरिवे को अंक है
॥ ८॥

॥ दोहा ॥

लरै भोगने उरवसी जिये करे महि भोग
दुहूँ भाँति उपमा तिन्हें यह जाने सब लोग ॥ ९॥
लरे भोगने उरवसी जिये उरवसी जौन
जौ न उरवसी लाज तौं हसी कभी तिहि कौन ॥१०॥

|| चौबोला ||

जैसा काछ काँछिअै नीके नाच नाचियै सोइ
रीझै धनी षलक षस माने भला करे सब कोई
अपने लाजे नहीं किये, ते किये लाज कुल लाजै
तब तब तैसा तान मोरना जव जव जैसा वाजै

||११||

लागै वड़ो नीच की संगति कहा बड़ाई पावै
संगति दोष जाइ कबहूँ ना थोरा बहुत जनावै
मति बिनु मत्त गजन कों हरता पर्यो पर्यो पल लेषै
अंधकूप में डार सिंह को षूव तमासा देषै

|| १२ ||

|| दोहा ||

वड़ो परै लघु संग तै तजै न अपने सूर
तोरा भरि तोरा करै षरि के संग कपूर

|| १३ ||

वड़ो येक जिहि ठौर मै और घने लघु पासा
ऊँच नीच तरु ना गनै चंदन करत सुवासा

|| १४ ||

चंदन चंदन लेत करि वन द्रुम कटुक सुधारि
वास वास नाहिन भिदै भीतर भरी भगारि

|| १५ ||

|| चौबोला ||

व्याधि सेष रिन सेष न गुनिये सत्रु सेष मति जानौ
वाढ़े वढ़े विषाद वाद वहु सीष सुकवि को मानौ
तीनै सूर मरद जो मेटै सो सुष सकल विसेषै
षूवी करै षलक मैं अच्छा षूव तमासा देषै

|| १६ ||

देषे चतुर विचारि सोचि चित मारग विदित घनेरे
पाये लहै सवै सुष मानै षलक लोभ के घेरे
निरलोभी निरभै निहकामी कोई विरले लेषा
चटक मटक सौ सव सुष माने षूव तमासा देषा

॥ १७ ॥

विना अकल कछु अकल न आवै विना सोच को रीझै
विन उपदेस होइ नहि गरुता विनु सतसंग न सीझै
जामैं निगिन प्रगट सोइ कीजै सोइ मति जोइ हितदायी
येक वार पढिवो सव गुनिबो येक और चतुराई

॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

आतुर प्रीति पतंग की परत दीप मैं आयी
लष्यो निकाई नेह की निहकारन ज्यौ जाई

॥ १९ ॥

तम पतंग तै प्रीति अरु देष न सकै विरुद्ध
मित्र हेत वह तन तजै करि दीपक सो जुद्ध

॥ २० ॥

॥ चौबोला ॥

आतुर प्रीति पतंग अंग दै देषि दीप मै पर ते
वह बेपीर पीर नहिं आवै नाहक जरि जरि मरते
जदपि अयान जीव जड़तावस लषै न अपनी ष्वारी
सरनागति पै मरन दिये तौ कहा वड़े की यारी

॥ २१ ॥

धिक जल को धनि मीन लीन कौ नेह न कबहूँ तोरै
तन मन धन करि धर्‌यो वारि कों कबहु न काहि निहोरै
येते पर वह नीर निरदई हरि विधि विधि की आसा
ताहू कौ सव प्रीति कहत हैं अैसा षूव तमासा

॥ २२ ॥

धनि धनि प्रेम चकोर नेंम ते चंद्रहिं सो टक वांध्यो
जरत न चोंच जदपि अति कोमल गिरत अंगारहु कांध्यो
वह ससि के कहों कौन कसक जिय परी परनि कछु न्यारी
येक ओर ते नेह न होवे तौ सठ से का यारी
॥ २३ ॥

कमल सूर सौं बड़ी मिताई जग जानै सब कोई
वड़ो जानि पहचानि कर्‌यो तउ जरै तुसारन सोई
विधि सौं पूत रहत श्रीहरि कर वड़े वड़े सो यारी
को कहि सकै काहि कहि आवै करता की गति न्यारी
॥ २४ ॥

मार्‌यो लात कोपि भृगु उर में प्रभु भूसन कर लीन्हैं
जुग जुग रहत मिटत नहिं कबहूँ कहू काहु नहि दीन्हें
अैसो साहेब मिलै सेवकै तव पूजै सब आसा
औगुन को गुन मानि लेहि सो देषै षूव तमासा
॥ २५ ॥

हरद चून की लषौ चतुरता छवी मिताई छाजै
सेत पीत तजि देत हेत ते रोचन मंगल राजै
चढ़त सीस सुभ पाइ सवन के यौ सज्जन हित जोरा
वड़े वड़े सो वढ़ै नेह तौ वड़ी साहिवी तोरा
॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥
सेत धरा सिर पर धरा गंग धरा त्रिपुरारि
वड़े धरत जा धरन को फिर नहि धरत उतारि ॥ २७ ॥

॥ चौबोला ॥ (॥ २८॥)
भेस धर्‌यौ जो धरनि सीस तौ वहई धरनि धरोई
पथिक भयो जो सूर गगन तौ वहई परनि पर्‌योई
वड़े परेज पैंड अैपर जो तेई अैड निबाहे
सरवस जाइ आउ मकु सरवस ये के टेक सदा है

।। कवित्त ।।

मिल्यौ जब नीर तब आपु मिल्यो नीके छीर
एक गहि होत गहि आगे पर लै धर्‌यो
जान्यो जब नीर छीर आगे ही जरैगो तब
छीर के जरत नीर आपु आगे ह्वै जर्‌यो
नीर के जरत अकुलाई छीर उफनानो
आगि के परन लाग्यो नीर परे ना पर्‌यो
कहत गोपाल देष्यो सज्जन की अधिकाई
प्रीति की निकाई नीर छीर में सही कर्‌यो
।। २९ ।।

।। चौबोला ।।

बिन गुन चाप चलै नहिं सायक जस न चलै बिन दाने
नीर बिना नहिं चलै नाव बिन हिम्मत चलै न बानै
बिन दिल साफ चलै नहिं यारी अन्ध धन्ध का लेषा
मन के मीत मिलै नहिं एको झारि झटक सब देषा
।। ३० ।।

खल की प्रीति प्रात की छाया पहिले बढ़ा घनेरा
घटत घटत घट जाय पाँय तर ज्यौं ज्यौं चढ़तो बेरा
सोई फिरत छाँह पूरब कों अैसे पड़े निबाहे
शठ सज्जन की प्रीति प्रगट ही कहै देत है चाहै
।। ३१ ।।

राजभया मद छके रहत जे धन यौवन के मारे
रहत मगन नित विषयन मोही विनही मंत्र सँवारे
पक्का अमलदार कोई पचवै ताहि अमल अवरेषै
देषा देषी चढ़ै पनो तौ धनी फजीती देषै
।। ३२ ।।

तपवल धीर धर्मबल सतबल न्याय नीति बलदायी
दल बल छल बल बलनि राजवल राजा करै रजाई

तप बल नेग त्याग बल कीरति जस बल अमल विशेषै
भूतल राम भगति बिनु भूपति षूव तमासा देषै
॥ ३३ ॥

ज्यौ अरुनोदय हृदय कोक नद कोकिल हरष बढ़ावै
षलक हुलास विलास प्रात हित सव अपने कृत धावै
अैसेहि नरन प्रताप वढ़त ते राज भया ते भारे
दिन दिन वढ़ै सहिबी तोरा सुमति चाहियै सारे
॥ ३४ ॥

॥ दोहा ॥

राज भया मद के छके सुधि न रहत कछु गात
समुझि होत सव आइ कैं समुझि पाछिली वात
॥ ३५ ॥

॥ चौबोला ॥

सत्त वरावर मित्र चित्र नहिं जोर चित्त मिलि आवै
सत्त रहै तो लहै साहिवी साहेब वजै कहावै
ज्यों हरिचंद नंद वै लोचन भये सत्त ते भारे
जुग जुग चलै अहान कहावै जे सत कबहुँ न हारे
॥ ३६ ॥

सत्त महा धन धरै धनुष तौ हारि न कबहूँ आवै
जीतै सकल जगत की वाजी वाजे गीत वजावै
सत्तहीन जो भयो सहस भुज येक गाइ के सोहै
करि अकच्छ छोनिप के छतृन परसराम सब काटै
॥ ३७ ॥

जो दिन आँषि उलूक न सूझै कौन दोष रवि दीजै
जौ न करील होति नव पल्लव रितुपति को नहि छीजै
प्यासो राति राति दिन चालिन कौन दोष सुर राजै
अपनै दीन मान मैं सबको उपजै काज अकाजै
॥ ३८ ॥

गरजी सदा लहै लघुताई ऊँचे पतन सदा ही
कामी सदा कलंकी कहिये कपटी कपटहि जाई
लोभिन महा पातकी कहिये गाफिल सदा विनासा
सवही समै सबै को सूझै जाहिर पूव तमासा
॥ ३९॥

॥ दोहा ॥
धन विद्या को लोभ कैं सच लीन्हें अपनाइ
धोषी धोषा चतुरई चतुरा चलै ठगाइ ॥ ४० ॥

॥ चौबोला ॥
भौंरा येक पलास कुसुम भ्रम सुक मुष पैठ्यो आवै
वह जान्यो यह पक्यों जम्बु फल अलि कौ चोंच चलावै
धोषेहि सबै अपनपौ भूलै धोषहि होत विनासा
धोषा छोड़ि धनी कौं जानै ठानै पूव तमासा
॥ ४१ ॥

महामदोन्मत्त लषि कुंजर अलि कुल सव अकुलाये
तजि अरविंद वृंद तृष्णावस जहाँ तहाँ ते धाये
गह गह सहित जाइ गज डारिन मीडि माडि मलि डारे
तजि मकरंद पियन मद लागे मरे कुमति के मारे
॥ ४२ ॥

जे कोइ अंग संग तजि अपने और ठौर हित मानें
ते सब जान आपने षोये करनी कर मन जाने
जिनके जौन आचरन कहिये सो आचरन विसेषै
महरम होइ षलक मै अच्छा पूव तमासा देषै
॥ ४३ ॥

कनक वनक अवलोकि केतुकी भंवर लालची भूले
विन अपराध कमल सो प्रभु तजि आन फूलपन फूले
रहत न वनै जाइ कहु कैसे गरे परे चतुराई
रहत न वनै जाइ कहु कैसे गरे परे चतुराई ॥ ४४ ॥

।। दोहा ।।

सात सयाने एक मति वहुमति मूढ़ विचारि
येक मतै मूसरि भये कुंजर लसै उवारि ।। ४५ ।।

।। दोधक छंद ।।

राजा विश्वकेतु इक भये । मंत्री धरम दत्त तिन ठये
वह भूपति लीन्हों अपनाइ । उपज्यो पंचद्रोह अधिकाइ
पंचम ते कीन्हे कव कूत । जीवत मंत्रिहि कीन्हें भूत
।। ४६ ।।

।। दोहा ।।

सब सो सब मति लाजिये परषि सयाने ठौरि
सव जाने उनमान भरि जा कौ जितने दौर ।। ४७ ।।

।। कवित्त ।।

आठो धाम धावतु हैं कहाँ धन पावतु हैं
मारग वसावतु है करम करै क्यौं
अटक्यो अटक जाइ भटका अनेक खाइ
फटका उठाइ कै लटकाय मारे त्यों
ययो नरनाह सीषि हार्‌यो गुनगाह भयो
चाहै पातसाह पेत धोषा मन कौ गयो
कान हू लौं फूटा वढ़ै सीस लौ सफेद जटा
करन सत्य कौं नटा नट को वटा भयो ।। ४८ ।।
ममता के मारे कहू समता न आयो हाथ
सीष्यो गुन गाथ सदा गथ पथ धायो रे
परतर षोयो पर तरुनिन जोयो
तरुनाई गयो इते जरा नियरायो रे
डोलै वितायो मन नेक न अघायो
भरमायो पै भयो न मन भायो रे
षलक रिझायो रीझ मौज भरि पायो वड़े
नरन रिझायो किंतु हरि न रिझायो रे ।। ४९ ।।

॥ दोहा ॥

लाष सयाने पके सिरे द्वै वातों से काम
राम दिषावै दीजिये कै रामहि को नाम ॥ ५० ॥

॥ कवित्त ॥

राम कौ प्रताप सब काम को कलप तरु
राम कौ प्रताप सदा संकर को जापु है
राम कौ प्रताप लोक तीनों को अभय दान
राम कौ प्रताप ते विलात भव दाप है
राम कौ प्रताप ते भयभीत चतुरानन है
राम कै प्रताप ते काँपत त्रय ताप है
कहा प्रभुताई कौ प्रताप करि मान्यो वर
जब लौ न जान्यो राम नाम को प्रताप है
॥ ५१ ॥

कबहूँ अषंडल समान महि मंडल मै
कबहूँ अधीन ह्वै विसूरि मौन गहिअै
कबहूँ सुषासन सिंघासन वगसि देत
कबहूँ पाये सेर साहि वीसी ताहि लहिये
कहत गोपाल रघुराई के अमित ष्याल
काहू की कमी न है भरोसा येक चहिये
छोड़िये न हिम्मति विसारिये न हरि नाम
जेही भाँति राषै राम तेहि विधि रहिये
॥५२॥

धन्य वीत रागी अनुरागी चरनारविंद
जागते रहत हरि जगत रहत हैं
षाई षनि कंद रहै कंदर अदंद अति
इंद्रिय समेत देह दिन ही दहत है
कहत गोपाल तेउ धन्य हैं रसिक वर
श्रीफल से कुच पानि स्वच्छै गहत है

लाष लाष भाँति अभिलाषन सौं भीर अंक
वैठे परजंक (पर्यंक) सुष लाषन कहत हैं
॥ ५३ ॥

जोग भ्यास उत आस वास तीरथन जग
ते न निरास ह्वै के रहै कृष्ण गात ह्वै
देव दुज राधन न साधन कौ सतसंग
दान कौन विसन कुदान लै लै षात है
सुष कौ न सेज नव सुंदरी सुहाइ निसि
भरिबे को अंक रंक कैसे ललचात हैं
कहत गोपाल अैसे जीवन के फल कौन
जैसे फूलि फूनि वन फूलि झरि जात है
॥ ५४ ॥

॥ दोहा ॥
सुर गुरु से ज्ञाता महा मति गति पति से पाइ
हरि गुरु भगति हिये न तौ सबै अकारथ जाइ
॥ ५५ ॥

ज्ञाता चतुर कलाधिपति जौ न भगति गोपाल
सकल कुविद्या जान ज्यौं विधि का कालिष भाल
॥ ५६ ॥

॥ सवैया ॥
धनि ते जग में जिनके जिय में
समता सव मैं मिलि ही हुलसै
परमारथ प्रीति उदार विभौ
तिन सो जब ही दुष सो न त्रसैं
अति आनन्द मोद गोपाल सदा
मुष वैन सुधा सम से निकसैं
तिनके सम कौन कहौ वसुधा
जिनके मन मोहन लाल वसै ॥ ५७ ॥

धनि ते धरनी जिनकी करनी
वरनी पर हूँ वरनी न परै
गुनि सील सरूप सुभावन के
जस कान भरे मन चित्त हरै
गज ऊपर उद्दित वंत गोपाल
कृपा कलपद्रुम फूल फरै
जिनके मति में रहते गरुवौ
तिनके समता कहि कौन करै
॥ ५८ ॥

धनि ते महिंमडंल में रनधीर
धनी हित जाई अनीह धसैं
जिनके नहि संक सरीर कहूँ
कहुँ धायन हूँ नहि धूम त्रसै
भट जंग जुटै गजमुंड कटै
जहँ मूकत श्रोन कबंध हंसै
तिनके वरिवे कहि मैनक हूँ
मनुहारि हहा करि हाथ मसै
॥ ५९ ॥

॥ दोहा ॥
ध्रुव सो कहै बिभीसनै गोपी चंद सुजान
मातन ही के सीष ते भये सकल कल्यान
॥ ६० ॥

॥ चौबोला ॥
राजा सहित उतान पाद की पाट वर्दना रानी
पिता गोद सुत देषि द्वेष ते षैषि वांह अनखानी
हरि से हेत मिलाय विदित हो ध्रुव को ध्रुव कर लीन्हें
रोवत पुत्र मात ढिग आयो माता सीखहिं दीन्हें
॥ ६१ ॥

कहत सभा मैं वात बिभीषन रावन लात चलायो
लाजनि तजति प्रान तव लागे माता मंत्र बतायो
जो ह्वै गयो होत जो है है कहि आगम मत छाजा
जब लौं राम चरित महि तौ लौ लंक विभीषण राजा
॥ ६२ ॥

झलकत पीक कंठ लगि माता अति ज्ञाता हितदायी
यह सरूप विनसै गौ कबहूँ जोगी अमर सदाई
जननी सीष मानिकै नीकै दयो छोड़ि भ्रम दंदै
देषहु षलक अजहुँ लौ गावत राजा गोपीचंदै
॥ ६३ ॥

राजा राज धर्म ढिग तातौ कौन आचरज मानै
वाम्हन कौ यह कौन आचरज पढ़ै जो वेद पुरानै
अचरज यहै रूप गुन जोवन तरुनि चित्त ढिढ राषै
वड़ी आचरज निधन पुरुष ह्वै धनहि दीन नहि भाषै
॥ ६४ ॥

राजा येक दिवान पचासक समै समै सुषदायी
येकै येक अनेक भेद तै भूपहि करे चवाई
ठहरन ठीक मंत्र नहि पावै मन भावै सोइ कीजे
कहै कहा लौं षूव तमासा साषि सयाने दीजै ॥ ६५ ॥

महाप्रसाद दोष यक राजा अपनो हाथ कटायौ
दवना भयो तासु के कर ते श्रीपति सीस चढ़ायो
धनि धनि प्रेम नैन धरि धीरज जगत धूत अवरेषै
यह वह लोक सुधारि आपनो षूव तमासा देषै
॥ ६६ ॥

जनम्यौ सुधा सिंधु ते जद्यपि अमर तीरथै भोगी
सीतल सुभग जानि सिर धारे महादेव से जोगी
तदपि न मिटत कलंक अंक तन करन भोग सब वरनी
कहा राज कहँ रंक आपनी करनी पार उतरनी ॥६७॥

येक पार की प्रीति जानि ज्यौं येक हाथ की तारी
दीप पतंग कुरंग राग जल मीन मरै करि यारी
दोइ ओर प्रीति जब उपजै तव षूवी सब लूटै
हाँथ न लगै येक कनुका भी राति दिना भुस कूटै
॥६८॥

घरर घरर घहरात होत है झकरि झकरि झकझोरै
सर ऊसर भरि चलत उमग जलि तऊ चोंच नहि वोरै
धनि धनि येक टेक चातिक को सदा स्वाँति सच मानै
अपनी वोर निवाहि देत वो वाकी गति वह जानै ॥ ६९ ॥

सबते वड़ो सुमेर कनक को कहौ कनक कौ ल्यायो
संजीवनि बूटी यौ कहियतु जगत जीव को ज्यायो
गहिरो वड़ौ वड़ौ जिहि गजिवो वड़ो धाक जिहि जाको
प्यासे पथिक जात जल देषत वरौ वड़ाई ताकौ
॥ ७० ॥

सागर वड़े कहत सब सातौ सकल रतन ते पूरे
मनि मुकुताहल वड़े पदारथ कहौ कौन घर घूरे
गहिरो वड़ौ वड़ौ जिहि गजिवो वड़ो धाक जिहि जाको
प्यासे पथिक जात जल देषत वरौ वड़ाई ताको
॥ ७१ ॥

जालिम जगत भयो जालंधर जीति जगत जस लीन्हौं
देव अदेव सेवको सनमुष इंद्र आपनो कीन्हों
सिव सो सिवा लेन जब लाग्यो प्रभु प्रपंच करि मारे
पतिव्रत मेटि प्रगट व्रत अपनो हरि तुलसी सिर धारे
॥ ७२ ॥

दुरजोधन के मेवा त्यागे साग विदुर घर षाये
जूठे बेर रंक दुज तंदुल लेत लाज नहि आये
आदर भाव भगति के भूषे भगत वछल हू कहिये
परपंचिन को वड़े प्रपंची साहिव सांचे लहिये ॥७३॥

छलबल कल ते महावीर सब कपट रूप करि मारे
भये ईत पुनि सूत समर में मंत्री मंत्र विचारे
आपुहि करै हरै सव आपुहि कहे आपु सव साँची
कहा करे परपंच पंच जहँ परमेस्वर परपंची ॥ ७४ ॥

परम सुंदरी नारि कुंति मा करन कुवारे जाये
पाँच पुरुष ते पाँच पूत भय पंडव पाँच कहाये
येक बाप के सबै कहावे भेद मात सब जाने
करनी करत धरम जिहि जैसो तैसो तिहि सव माने
॥ ७५ ॥

पतिव्रता अति रूप द्रौपती पाँच पुरुष की प्यारी
पाँच सरूप पाँच सौं विलसै छवि करि न्यारी न्यारी
येक नेम प्रेम ता येक्कै येक सुमति सति दाने
येक पुरुष करि गनी पाँच कौ षलक पाँच करि जाने
॥ ७६ ॥

माता येक जनम की दाता माता राज की रानी
माता सासु मित्र की नारी गुरु माता अति मानी
माता पाँच जगत में कहिये विरलै इन्हें सकातौ
इनकौ अनल समान लेषिये और षलक कौं नातौ
॥ ७७ ॥

मातु येक जौने जनमायो वाप दूसरो राजा
वाप सुमति जो सदा पढ़ावै वढ़ै जाहि ते छाजा
वाप एक जौ संकट काटै वाप जौन प्रति पालै
वाप पाँच सुषदायक कहिये चलि आये सब कालै
॥ ७८ ॥

पारासर सै महा ब्रह्म रिषि रति कोटिन सो मानी
जनमे व्यास देव से तिनके हरि अवतार वषानी
काको पिता कौन को माता देह धरे का नाता
करनी करै सुनाइ तैसिऔ अैसा षूव विधाता ॥ ७९ ॥

वासुदेव वसदेव के जनमे नंदकुमार कहाये
जनम न करम व्रह्म परिपूरन वपुधरि नाउ धराये
करि करि वड़ी वड़ी करतूतै वड़े भये सबही ते
जाति पाँति कुल वड़े काम नहि वड़े होत करनी ते
॥ ८० ॥

वड़े वंस मै वड़े वाप कौ बेटा होत कपूतौ
वोरै नाउ गाउ कुल करनी कहा राज रजपूतो
होत सपूत नीच कौ जायौ करै षलक परतोरा
सब आधीन होत करनी ते पल पल करत निहोरा
॥ ८१ ॥

परदल गंजै दारिद भंजै हरि रस रंजै अरि गंजै
गाढ़े गढ़ ढाहै अैड निवाहै सूर सिपाहै तन रंजै
जाहिल दिल संका जालिम वंका जग जस डंका निज वज्जै
सव षलक हुलासा भोग विलासा षूव तमासा तव सज्जै
॥ ८२ ॥

रीझ मौज मै साहेब लषिअै जोग जुगुति मै जोगी
भरि जोवन मै जती देषियै सरस भोग में भोगी
हिम्मति सूर सिपाह देषिअै चाल परै नहि चालै
सो देषै कछु षूव तमासा घाइ सरो तर घालै ॥ ८३ ॥

पैज निवाहै अरि पुर दाहै गुन अवगाहै षगवाहै
सूर वढ़ावै नूर चढ़ावै दुवन ढहावै गढ़ गाहैं
सबको माने सब जाने दुष सव मन आनै सव रष्षै
तव वह राजा षूव लहाजा कुल आलम का तव लष्षै
॥ ८४ ॥

जेते सिलह मेल जम डाढ़े गढ़ि गढ़ि मरे लुहारे
दै दै वाढ़ सरस रजपूतन जे रन टरै न टारे
जैसी करवै हरै भगौती ताहि दाहिनी कैसी
सूर करे तव षूव तमासा करते कूर अनैसी ॥८५॥

॥ कवित्त ॥

भारी धीर धरि धरि गाढ़ी छाती करि करि
परि परि पैंड पर भूमि दहियतु है
करति विसाहैं कवि गोविंदहि ही चाहे कह्यो
वोल को निवाहैं ताके ठौर रहियतु है
जाने सब अंगनि कौं राजरूप रंगन कौ
जीते सब जंगन कौ मौजि लहियतु है
कहत गोपाल राज राज में विराजैं जस
ताकों देसपति गढ़पति कहियतु है
॥ ८६ ॥

सब ते अमोल अति वोल हैं वड़ेन ही के
जानि कैं वड़ेई प्रतिपाल कीन्हें जात है
रहिबे को कीरति अकीरति अवनि पर
और सव साहिवी के साथ ही विलात हैं
कोई काछ काछिअै सो नाचिअै गोपाल कहि
झेलिवे कौं सार झार छत्रुन को गात है
राजन के बात गजराजन के दाँत ये तो
वाहि रे निकरि कहू भीतर समात है
॥ ८७ ॥

॥ दोहा ॥

नोवन चित्त विरक्त नर रहे से दानहि येह
काल पाइ दिन चरि को वरे सवनि सौ नेह ॥ ८८ ॥
धन के गाहक चारि हैं, धर्म अनल नृप चोर
जेठ भ्रात अपमान ते करै अनुज अति जोर ॥ ८९ ॥

॥ सवैया ॥

फूलतु है लषि के प्रभुता कव लौं प्रभुता इहि भांति निबैहै
सेवतु सेमरि के सुक सौं सुष तूल उड़े लषि तूप छितैहै

चेतु रे चेतु अचेत अजौ घट चेत घटे मुष राम न अैहैं
धावतु जो धन धामहि सों धनधाम धरोहि धरा रहि जैहैं
॥ ९० ॥

॥ सोरठा ॥

धन न दयो करतार का घट जातौ देत कछु
दयो जु कोटि हजार तामें कहू न आध तिल
॥ ९१ ॥

॥ चौबोला ॥

कै करतार देहि करवा दृढ़ होतो पीन उदासी
वन गिरि वास ग्रास का भोजन सुमति सदा अविनासी
कै धर देह साहिवी साहिब षलक करै सव आसा
षूव भोग कैं षूव जोग मै देषै षूव तमासा
॥ ९२ ॥

॥ कवित्त ॥

गुरु कौ न देइ गुरु-भाई कौं न देइ सगो
भाई कौं न देइ मन भाई की जियतु है
दुज कौ न देई कवि कोविदै न देई मानि
दानी कौ न देई दीन (को) मारि लीजियतु है
नट को न देई नट चेटको न देई भूप
षाने गनि (गिनकर) देई इहि भाई छाजियतु है
स्वारथै न देई परमारथै न देई ताते
अैसे धनधारी मुष धूरि जीजियतु है
॥ ९३ ॥

॥ दोहा ॥

जो कोउ काहू देत है सोई सम्पति सार
कोपै सुवरन करन को कोने भर्‌यो भंडार
॥ ९४ ॥

॥ कुंडलिया ॥

षेलत हालैं षेलिऔ राजा राषै दाउ
वाजी लगी कपट की ले निरभय हरि नाउ
राजा राषै दाउ हारि ते लाज न पावै
विचरै समय विचारि पंच सिर दोष न आवै
जीव उधारन मुक्ति करे स्वमित कै काजी
दगा दगी सौ देषु कपट की लागी वाजी

॥ ९५ ॥

॥ दोहा ॥

इहि विधि सिच्छा सतक हे राजसिंघ नृप हेत
जथा उक्ति गोपाल कवि वरने सुमति समेत

॥ ९६ ॥

॥ चौबोला ॥

कहे वेद उपवेद भेद गति ज्ञान सुमति सब काजै
राज धर्म राजन कौ वरनै राजनीति जिहि राजै
सब के हेत सकल मति भाषे जो हित हिय में रष्षै
षूव षूव सब षलक मुलुक का षूव तमासा देषै

॥ ९७ ॥

॥ दोहा ॥

राजनीति राजा करै वढ़ै षलक मै नाउ
सीष मानि सव बंद करि ज्यौं सत राज को दाऊ

॥ ९८ ॥

राजनीति राजा करै ब्राम्हन पढ़ै अपार
पनधारी सेवक रहै योकौ कौन विचार

॥ ९९ ॥

धन मद जोवन राजमद छके रहत परिवार
छकै रहत हरि नाम नहिं परे छढी में छार

॥ १०० ॥

सुष सम्पति कौ देषि कै रे मन मूढ़ न भूल
कालि परौ धरि जाइगौ ज्यों तरवर के फूल

॥ १०१ ॥

॥ इति श्री हैहय कुल कमल प्रकास भास्कर प्रताप राजा राजसिंघ चूड़ामणि चानक गोपाल विरचितायां सिच्छा सतकं समाप्तम् ॥

कलि शतक का प्रतिपाद्य

कलि शतक, इस नाम से ही इस शतक का प्रतिपाद्य सूचित होता है कि इसमें कलियुग के वैयक्तिक व सामाजिक आचरण तथा व्यवहार का उल्लेख होगा। मानवीय ही नहीं, प्राकृतिक स्वभावों ने भी अपनी विपरीतताओं के प्रति कवि को अपनी ओर आकर्षित किया है। उल्लेखनीय है कि 'भविष्य पुराणादि' आदि प्राचीन संस्कृत ग्रंथों में आनेवाले युग कलियुग का वर्णन किया है। यह परम्परा हमें तुलसी के श्रीरामचरित मानस में भी मिलती है ।

इन ग्रंथों में मात्र मनुष्य ही नहीं, अपितु अन्य प्राणियों व निर्जीव पदार्थों में भी कलियुग का प्रभाव निरूपित किया गया है। इस शतक में कलियुग का प्रभाव हमें निम्न रूपों में दिखाई पड़ता है। यथा, शिष्य गुरु की निंदा करता है। स्त्रियाँ पुरुष की निंदा करती हैं। सत्यवादी सबका शत्रु बन जाता है और झूठ बोलनेवाला लोकप्रिय होता है। शासक बिना अपराध के साधु पुरुषों को दंडित करता है तथा क्रूर, कुटिल व कायर का सम्मान करता है। आदि।

क्रमशः

४

।। कलि शतकम् ।।

।। सवैया ।।

सव देवनि तै निजु देव अनादि
सदा सव कों सुषदायी कहै
भुज चारि धरे अघ ओघ हरे
विपदा हि विदारन लायक है
गुन ज्ञान के कलपद्रुम है परिपूरन
सील सुभाव को का कहना
सरनागत आरतवंतनि को
जु सायक येक विनायक है
।। १ ।।

।। दोहा ।।

जे चरित्र कलिजन करै तजि अपने सत धर्म
कहौं कछुक संक्षेप में जानहु कर्म अकर्म
।। २ ।।

।। सवैया ।।

कलिकाल विहाल कियो सब कों
सब ही अपने मति मारग भूले
न्याइ विवेक विलात दिनों दिन
काम के मार जहान वितूले
भागत डोलत ज्ञान गरीब सो
संकट वेद पुराननि सूले
मारत नारंग दोष अनारग
पाप पुरातन के तरु फूले
।। ३ ।।

॥ चौबोला ॥

वरषा मंद मंद फल भूतल स्वाद मंद रस रूषे
ज्ञान मंद गुन मंद मदन ते जती भोग के भूषे
मंद सील अरु मंद चरित अरु मंद आरि वल आसा
सवै मंद कलि रामचंद भजि देषै षूव तमासा
॥ ४ ॥

पति को पतिभरता नहिं भावे भावै पर की दासी
भोगन हूँ कों भोग न भावै भोग करै संन्यासी
राम जनन को सरे ना दीज्यौं रामजनी को जोरा
महरम होइ तमासा देषै अैसा कलि का मोरा
॥ ५ ॥

॥ सवैया ॥

व्राम्हन वेद पुरान न जानत सुद्र समुद्र समान पठैहैं
सूर कहू टटुवा नहि पावत कायर ताजी तुरंग चढ़े हैं
है कलि मै यह रीति अपार प्रवीन दुषै सुख मूढ़ मढ़े हैं
ऊँचन के घर सेर को संकट नीचन के घर दाम वढ़े हैं
॥ ६ ॥

॥ चौबोला ॥

सूर कहू टटुआ नहिं पावत कायर पावत ताजी
कवि पंडित पर नजरि न कीजै जगन कली सो राजी
जो विसवास करै सब ही को करे ताहि की आसा
कान सुने की कहा चला हम देषा षूव तमसा
॥ ७ ॥

बहुत भये परलोक दिवैया मोल लिवैया थोरे
प्रबल लोभ ते पतित होत है जात नरक में वोरे
सारी गजी करम हू नाही पहिरो चाहैं षासा
नंदलाल पर मौज सुकवि की वरनौ षूव तमासा
॥ ८ ॥

सुखदायी दिन दिन दुष पावै सुष पावै दुषदायी
विष सी लगै सीष कै वाते तासौ कहै चवाई
साहेब के सिर षोर देत है अैसो चाकर पासा
कान सुने की कहा चला हम देषा षूव तमासा
॥ ९ ॥

॥ सवैया ॥
मित्र तके निजु मित्र की सम्पति
वाप तकै सुत की वर नारी
भूप तके सव रैयत कौं धनु
भाइ तकै भगिनी सुकुमारी
सासु दमाद को प्रीति निरंतर
कंत सो अंतर मानत प्यारी
मारि के काम निवारिये पातक
तारिअै या कलि में गिरधारी ॥ १० ॥

॥ चौबोला ॥
आपु वड़े अवधूत कहावै संग चलावै चेली
चारि पहर निसि कहर मचावै दिवस परै तलबेली
जटा जूट तन भसम लपेटे करै कुटी कै आसा
कान सुनी कै कहा चला हम देषै षूव तमासा
॥ ११ ॥

गनि गनि दान देहि गनिकन कौ अैसे भोग विलासी
आपु फिरे घर घरन घात तें धरनि फिरे मस वासी
अधरम कों सिगरो धन षोवै षेलै जुवा रु पासा
कान सुने की कहा चली हम देषा षूव तमासा
॥ १२ ॥

फूले फिरे फूल लपकाये पाग लटपटी वांधै
घरन येक टंटू को सामा उमरावन को कांधै

चिहरा देयि जोर वाले कौं करै चाकरी आसा
कान सुनै की कहा चली हम देषा षूव तमासा
॥ १३ ॥

विन मांगे कौड़ी नहि पावै मांगे निलज कहावै
पंडित पास रहै भकुआ तौ मूरष गाल बजावै
घर को दाम अकारथ षोवै षेलै जुआ रु पासा
कान सुने की कहा चला हम देषा षूव तमासा
॥ १४ ॥

प्रभु सौं वैर करे प्रभुता ते मगज आपने फूले
जिन ते वढ़्यो साहिबी तोरा ता साहेव को भूले
करत रहे करनी सव जैसे वहै करन की आसा
कान सुने की कहा चला हम देषा षूव तमासा
॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

गुरु को निंदत सिष्य है पुरुषहिं निंदत नारि
वेदहि निंदत विप्र है त्राहि करो नरकारि ॥ १६ ॥

पंच विरोधी भूप जहाँ भूप विरोधी पाँच
मंत्र जहाँ विपरीति कलि तहाँ कहाँ सो साँच ॥ १७ ॥

॥ चौबोला ॥

चहे और कछु करे औरई वात करै कहे हम साँची
सो साहेव कैसे सुष सोवै जहाँ पाँच परपंची
भीतर काम करै मनमार्नें वाहेर रहे उदासा
कुलि आलम का कलि मा भाई देषा षूव तमासा
॥ १८ ॥

॥ सवैया ॥

साहेव सों कहि और की और
करे कछु और तके निज औसर

भीर परे नहि धीर धरे
घर के धन कों पन कौन डरे डर
जे प्रभु काज करे न अकाज
करे सुष राज सुषी अपने घर
लाषन षाइ पचाइ घने तउ
फूले फिरे परपंचन ऊपर
॥ १९ ॥

ऊपर सील सकोच भरे वहु
भीतर भारे अनेग भरे हैं
ऊपर न्यायि निरूपन उत्तम
भीतर भारे अनेग मरे हैं
ऊपर लोभ न येक रती
उर भीतर लालच लाष भरे हैं
वाहेर भीतर येक समान
सु ते विरले करतार करे हैं
॥ २० ॥

॥ चौबोला ॥
सील संकोच करै को काको पाँच लाँच सो राजी
साहेब के रुष सौं कहि आवै हाँजी हाँजी हाँजी
राषै धनी मनहि सो मन में तिहि के सदा विनासा
नंद लाल पर मौज सुकवि की वरनै षूव तमासा
॥ २१ ॥

साहेब जाहि निवाज पढ़ावै फौजदार ह्वै फूलै
सोइ कहूँ को मनहि न आने मगज आपने भूलै
पान पाइ साहेब की रैयत पान पान करि डारै
देष षलक का षूव तमासा चेतै क्यों न संवारै
॥ २२ ॥

अपने तनक वात के काजैं राजकाज कौ नासै
करि साहेब सौं कानावाती कुलि आलम को त्रासै
साहिब रहै साहिबी गाफिल तहाँ कौन वसवासा
सावधान सब ठौर रहै सो देषै खूव तमासा
॥ २३ ॥

घर घर घेर चलै सवही के तके आपनी घाते
मारे गाल सभा में वैठे सुष पावै सव जाते
तनक वात ते तरकि जाति हैं अैसे लोग मवासा
कान सुने की कहा चला हम देषा षूव तमासा
॥ २४ ॥

सरमदार को सेर न दीजे वेसरमन को सोनौं
षोवत तनक वात को भोंदू धरम करम ते दोनों
वूड़े नरक लोभ के मारे करे सरग की आसा
कान सुने की कहा चला हम देषा षूव तमासा
॥ २५ ॥

आगे करम करे मनमाने फिरि पाँछे पछितावै
अपने दोष आप नहि देषै नृप पै दोष लगावै
अपन मगज ते ते जन नासैं करै अकाम अलेषा
कान सुने की कहा चला हम षूव तमासा देषा ॥ २६ ॥

साँचो पटकै मूड़ पाँच में झूठो गाल वजावै
अैसे जहाँ चौंतरा वासी तिन सो कहा वसावै
राम राम कोंउ करै सामुहै देषै आपु अकासा
कान सुने की कहा चला हम देषा षूव तमासा
॥ २७ ॥

जौ प्रभु येक आपनो जानै प्रभु न ताहि ढिग राषै
दिन दिन देषि आपदा दूनों दीन सवन सो भाषै
मलिन देष मन दया न आवै सबसों रहै उदासा
मलिन देषि मन देहि तासियै अैसा षूव तमासा ॥२८॥

॥ सवैया ॥
होइ भले करतूत उजागर पायनि आगर पैजनि वाहै
राज को काज अकाज करै नहि ना कहे मालन काहू को चाहै
साहेव के सुष ही सुष संतत आपु सुषी सुष देत सदा हैं
अैसे सरोतर बुद्धि बली नर को नहि भूतल ताहि सराहैं
॥ २९ ॥

॥ चौबोला ॥
साँच कहै सों सव को वैरी झूठ कहे सो प्यारो
जो सवही वातन मै महरम ताहि राषिअै न्यारो
सुकरम सवै साल सों लागैं कुकरम की सव आसा
साहेव साँच सदा निरवाहै देषै षूव तमासा
॥ ३० ॥

बिनु अपराध साधु को त्रासें अरु उलझै वसुधा तें
कूर कुटिल कायर को आदर करे वहुत सरसाते
साषे को हरि भाँति सुषी करि करे षलक परतोरा
देषि षलक का षूब तमासा कवि ने अैसा जोरा
॥ ३१ ॥

साहेब को धन धरै गाड़ि के मिलै जीव के पाछे
अगल वगल सों काम चलावै भगल घनेरा काँछे
कैसो षाइ कोंन विधि षरचै रहे मरे हू प्यासा
नर तन पाइ नरक का साया अैसा षूवतमासा
॥ ३२ ॥

साहेव कहै लेहि का इनसों हम ही सबकुछ दीन्हें
वड़े हमारे इनके पुरुषन वड़ी वड़ाई कीन्हें
चलै आइ विधि जौन जाहि के ताहि तौन विधि मानै
सावधान कोइ लहैं साहिवै सहिव सवकी जानै
॥ ३३ ॥

॥ सवैया ॥

तन हूँ मन हूँ धन हू जन हूँ करि
जान तजे प्रभु को उर माहे
सोचत है सव साहिव के हित
कौन समैं कव कौन सु चाहे
साहेव होइ प्रवीन गोपाल तौं
राषै कृपा कलपद्रुम छाँहै
राम वड़े न वड़ोइ करे सब
समरथ होत वड़ेन की वाहै ॥ ३४ ॥

॥ चौबोला ॥

अपने प्रभु को आपु भूलि कै और प्रभुहि उर आने
ता नर को नरकौं नहिं ठाह मिलै इति वेद वषाने
प्रभु ह्वै वृथा दास कौं त्रासैं ऊपर ढासा लावै
और होइ तौ सवै वसावै प्रभु सौ कहा वसावै
॥ ३५ ॥

साहिव जाहि आपनो जाने सो साहेब नहिं जाने
करि करि घने षुसामद उनकै आपु महा षुस माने
लेत रहे मौजे निसि वासर दै दै मन विसवासा
कान सुने की कहा चला हम देषा षूव तमासा
॥ ३६ ॥

साँच कहे सब को दुःष लागै झूठ कहे सुष लागै
तिनके सतसंगति के कीन्हें ते पुन्य पुरातन भागै
कीजै कहा कोन वस अपनो करै सो दाना पानी
जैसो करै लहै वह तैसो जग में रहै निसानी
॥ ३७ ॥

कहै सुनै की कहा चली है देषै कलि की होती
तीनि वरन को चाकर ह्वै के वाम्हन धोवै धोती

दै रिन मरे षाइ विष तापर निहचे नरक निवासा
भरमै भूत होइ चौरासी ऐसा षूव तमासा
॥ ३८ ॥

सवकी वात सवै कोइ जानै कहै कौन सो काको
कहे सुने ते कबहुक समुझैं समुझावत कवि तासौं
समुझदार हरि भगत न समुझैं अस वुधि को अनलेषा
कहे सुने कछु दोष न लागै षूव तमासा देषा
॥ ३९ ॥

चटक मटक सौं फिरे लटक मे धन जोवन के माते
प्रभुता पाइ प्रभु न उर आने रहे षलक पर ताते
बूझै कछू कहे कुछ और रारि करन के आसा
साहेव के दरबार तिनहु का होगा षूव तमासा
॥ ४० ॥

जेई मौज लहै वहुतेरे तेई गाल वजावै
काम परै साहेव को कबहूँ कौड़ी काम न आवै
साहेव उन पै करै साहिवी तव वै होहि तमासा
साहिव सावधान रहि आवैं देषै षूव तमासा
॥ ४१ ॥

नाग वेलि यह भली वापुरी फूलै फरै न कवही
पाये राजसिंग के कर ते फूलै फरै जु तबही
रंक होइ सोलहै साहिवी साहिव रंक विशेषा
वह कर पान अभै जिन पाया षूव तमासा देषा
॥ ४२ ॥

॥ छप्पै ॥

उत्तिम मध्यम अधम आदि कर ताकी कीन्हें
उत्तम सहसनि येक मध्य सैकनि मह लीन्हें
अधम अपार न पार बुधि वल सो सव कीजै
अपने चाड़ि विचारि षलक राजी कर लीजै

जिहि भांति जौन तहि भाँति तिहि चतुर भूप पालन करै
जग तृविध विधान विचारि करि सुगुन औगुन काको धरै
॥ ४३ ॥

॥ चौबोला ॥

षोटे षरे मरे बहुतेरे षलक षजाने माही
चुनि चुनि साहब दूरि करै तौ तिनहि ठौर कछु नाही
अपना किया सवै भरि पाये कहाँ रंक कह राजा
देषै षूव लहाजे सोई राग देइ तिहि छाजा
॥ ४४ ॥

सेवक हरू होत वहुतेरे साहिब हरू न चहिये
जो साहेब गरुवो है सबतें हरू गरू निरवहिये
राजा सकल विस्व के ईस्वर सवके करै दिलासा
राषै सकल षुसाल धनी से देषै षूव तमासा
॥ ४५ ॥

साहेव रीझे साहेब वूझे साहेव सब कुछ जाने
चूक परै ते साहेव चहिये औगुन गुन कै मानै
हरि के लात हिये भृगु मार्‌यो कीन्हें बहुत दिलासा
कोमल चरन पलोवन लागे अैसा षूव तमासा
॥ ४६ ॥

साहेव सुरुष पुरुष पुरुषारथ दिन दिन वढ़त सवाई
साहेव सुरुष पुरुष पारथ सौं काबनि नारिन गाई
सेवक अमल सवल साहेव सों जो पुजवै प्रभु आसा
साहिव षूव मिलै तौ सेवक देषै षूव तमासा
॥ ४७ ॥

॥ दोहा ॥

कलि समान जुग और नहि जेहि लीन्हें सव मोहि
जती सती अरु सूरमा देषत तन मन टोहि
॥ ४८ ॥

दाता सूर सुजान नृप जती सती हरि कोइ
कसे कसौटी मेटि कै सो कलिमंडन होइ
॥ ४९ ॥

चालि कालिमै में परषिऔ दाता सूर सिपाह
यौ कलि मै कोइ परषिऔ जिनते धर्म निवाह
॥ ५० ॥

॥ सवैया ॥

देषत के तप पुंज समान
गुमान भरे मद मोह भरे छके हैं
सीस जटा सन से भये सेत सो
साठि औ सत्तर हू के दिषत है
ते पन में धन में वस ह्वै
मृगनैननि हू हिय जाके जके हैं
यौ कलि काल को ष्याल लषौ
कर माल लिये पर माल तके हैं
॥ ५१ ॥

॥ चौबोला ॥

धरम हेत दस कौड़ि नहीं गनिकनि को गनि गनि दामै
कहा करै परलोक विचारा जहाँ पगे पर वामै
तरके तनक वात कौ प्रभु सो करि प्रभुता की आसा
ऊधम करत अधम वहु धन तै औसा षूब तमासा
॥ ५२ ॥

धरम करै सो सव धन षोये अधरम करै सो आछो
पचत फिरै भूतन के पाछै गहे न हरि कौ पाछौ
भैरो भूत देवता देवी इनही के विसवासा
को जानै सहेब आगे होगा कौन तमासा
॥ ५३ ॥

पैठे चोर साहु घर में सूरी को संन्यासी
दंड कमंडल मुंज मेषला लिये वगल में फांसी
वेस धरे दरवेस कहावै करैं षलक की आसा
कान सुने की कहा चला हम देषा षूव तमासा
॥ ५४ ॥

वड़े भोर पूजा में वैठे जपि जपि जाप जनावै
सिर के केस भये सव सन से चेरिन सैन चलावै
सुमिरन छाँड़ि सांझ ही सटके अटके भोग विलासा
विरही विरध चिकनिया वावा करते षूव तमासा
॥ ५५ ॥

॥ सवैया ॥

कान फटे बहु सीस जटैं
प्रगटे जग जोग कला नट के हैं
मुंड मुड़ाइ दिये तिलके धरि
भेष धरे धरनी भटके हैं
षोरि कहा तिन को रचना कलि
ज्ञान के मारग तें हटके हैं
भूलिगे राम मिल्यौ जव दाम
सु लै पर वाम कहू सटके हैं
॥ ५६ ॥

॥ दोहा ॥

तपी कहा कलि तप करै करत विघन करतार
सत मरग संतोष के सवही हटकन हार
॥ ५७ ॥

विन दाया कौ दान ज्यौं सरवर ज्यों विनु नीर
ज्ञान विना वैराग त्यौं भाल विना ज्यों तीर
॥ ५८ ॥

॥ चौबोला ॥

धोती वड़ी जनेऊ कांधे पढ़े भागवत गीता
साँझ सहेट ठौर यो रपटे ज्यों मृग ऊपर चीता
संध्या धरम करम सत मारग इह विधि सवै विसारे
पूजा वाम पियन को मदिरा बाम्हन कोइ मतवारे
॥ ५९ ॥

देषा देषी परे नरक में कहै सरग हम जैहैं
मन मुष ज्ञान विमुष हरि गुरु सों जम जालिम दुःष दैहैं
राह चोर को राह न कितहूँ निहचै भयो विनासा
जहाँ जाइ तहँ षूव गरदनी लागै षूव तमासा
॥ ६० ॥

जो कछु करै आपु मन भायौ साहेब कों सब छाजैं
और करे तौ षाइ मुंड में कुल आलम मै लाजैं
को जानै साहेब की बातैं कछु ते कछू बनावैं
षूव षूव कछु करै ष्याल तौं साहेव षूव लहावै
॥ ६१ ॥

तव को तप ते लहै साहिबी रषत वखत बहुतेरा
अजहू साँच रहै साहिव सौं आगे वढ़ै घनेरा
तव धूनी पानी जे करते ते अव करै विलासा
देषि साहिवी साहिव हरषै परषै षूव तमासा
॥ ६२ ॥

ईंद्रीजीत अतीत अवनि अति दिल दरिया सुखदाता
पालक विस्व पुण्य फलदायक महानीति गुन ज्ञाता
जागै दिसा घोस कछु सोवै सदा सुमति परगासा
तौं सतायु सोहै कलि राजा देषै षूव तमासा
॥ ६३ ॥

मंत्रहीन सतहीन हीनतप ज्ञानहीन गुनहीने
साहसहीन हीन कुलकरनी देत हीन मतिहीने

आलस नींद काम के मारे चढ़ै आपने छाजा
सै सै वरष जिअै करवालै पाँच पचासै राजा
॥ ६४ ॥

॥ दोहा ॥
दान धर्म कुलकुर्म सत सव सोहै समताइ
सात सयाने येक मति जुग समान करि जाइ
॥ ६५ ॥

॥ चौवोला ॥
सुमति वढ़े ते सव सुष वाढ़ै कुमति वढ़े कड़ुवाई
वड़े सुकृत में सुमति रहत है दुरमति नीच अथाई
ऊँचे नर की ऊँच नजरिया नीच नरन की नीचै
कारग जासौं रचै मेडुकी राचि रही ज्यौं कीचै
॥ ६६ ॥

जे राजा गरुवे है सवते सवन गरू वह कीन्हें
उन सवके वल प्रवल आपु ह्वै जाति वड़े जस लीन्हें
पठिक पुरान पुरान स्रवन सुनि सीषै चालि पुरानी
तिन देषा सव खूव तमासा जिन सव षूवी ठानी
॥ ६७ ॥

जौ राजा निजु राज सुधारै सुधरत वार न लागे
ढेर करै तो ढेर पसारा राति दिना रन जागै
सव को मन करि हाथ आपने सव को अवरेषै
येकै येक अभेरि भेदवल षूव तमासा देषै
॥ ६८ ॥

देषि सकै नहिं येक येक कौ मगज आपने फूले
किस पर कैसा मिहर धनी का कुढ़ते अहमक भूले
साहेव जिसी भांति सौं रष्षै तिसी भाँति सो रहना
देष षलक का षूव तमासा वार वार क्या कहना
॥ ६९ ॥

॥ दोहा ॥

कहा करै नर वापुरो सव करता को ष्याल
करत कछू ह्वै जाइ कछू महा दुसह कलिकाल ॥ ७० ॥

॥ सवैया ॥

तजि भोग वियोग जे जोग गहै
गुनि ज्ञान कहे धरि ध्यान यहै
डोलि कै तीरथ तीरथ हेत
रुलाइ गयी विरधाइ धरे हैं
ते पन ते धन में वस ह्वै
मृगनैननि हूँ हिय लाइ लये हैं
देषहु या कलि की रचना
जु तपी तप में वितताइ गये हैं ॥ ७१ ॥

॥ दोहा ॥

यह कलि की रचना सवैं कही कौन सौ जाइ
कही कछुक संकोच नृप आयसु मेट न जाइ
॥ ७२ ॥

पर घरनी सौ प्रीत अति घर घरनी सो रारि
अपने अपने स्वाद में सवै षुसी नर नारि
॥ ७३ ॥

॥ सवैया ॥

घर की घरनीहि घिनात घने
गनिकानि हि को गन दीजतु दामे
चेरि के जाये चिराग भये
कुलपूत कपूतन आवत कामे
या कलि में यहई जु अपार
न भावतु साँचु भलाइ हौं जामे
भूतन सौ परतीति वढ़ावत
जी परतीत न आवत कामें ॥७४॥

पूजि के मूरति पानि पियै
पिय सों तिय ऐसिऔ नेमु निवाहै
देवर जेठ सराहति सासु
कहूँ कवहूँ नहि काहुँ ते चाहे
घात वने ते घने घर घालत
काम भरी अति काम कला है
देष विचारि विचित्र महा कोइ
या कलि में विरली वनिता है
॥ ७५ ॥

॥ चौबोला ॥
पिय सौं रारि रात दिन माँढ़ै वात कहै नहिं बोलै
पिय करि देहि पान की वीरी तऊ न घूँघट षोलै
सूने रसिक फिरे सरसाने सिमिटी पाँच पचासा
कान सुने की कहा चला हम देषा षूव तमासा
॥ ७६ ॥

॥ दोहा ॥
पान विना पल ना जिये रहे सिंगारति आंग
या कलि विधवा प्रात ही उरै सवाँरति मांग ॥ ७७ ॥
॥ चौबोला ॥
अहिवाँती रूषी सिर डोलै राँड़ मांग चिकनावै
अपनी चटक मटक के आगे वेटा वहू ना भावै
सुने न कान आँषि नहि दैषै तऊ षसम की आसा
कान सुने का कहा चला हम देषा षूव तमासा
॥ ७८ ॥
कन्या वरष सात की काजै वर सत्तर के चाहैं
दुलहिन वरस वीस की काजै वालक वर को व्याहैं
वेटी भये वहुत सुष मानै दाम लेन की आसा
कान सुने की कहा चला हम देषा षूव तमासा ॥७९॥

वहू सासु के केस पकरि कै वेसम्हारि करि डारै
वेटा सुनै कान ज्यौं कवहूँ फेरि ताहि पटतारै
वहै निगोटी अैसी तापर चाहै भोग विलासा
कान सुने की कहा चला हम देषै षूव तमासा
॥ ८० ॥

सूने ससुर फिरे सरसानो देषि वहू कौं वारी
सासु दमाद स्वाद सौ अपने करे काम की ष्वारी
भाई वहिन करै अधमाई प्रवल पाप परगासा
कोन कहै कलिजुग की रचना अैसा षूव तमासा
॥ ८१ ॥

॥ दोहा ॥
जे जाके गुन दोष हैं हुकुमहि ते सव कीन
अनजान्यो जाने नहीं जाने जान प्रवीन
॥ ८२ ॥

॥ चौबोला ॥
काहू भावे काहु न भावै कहै वात हम आछी
दुष के साथी येक आध कोई और विभव के माछी
जौ लौ पाये तौ लौ षाये निघटे निघटी आसा
षवरदार सव ठौर रहै तौ देषै षूव तमासा
॥ ८३ ॥

यह औजूद अजब साहिव का अजव अजव उपजाया
अजव अजव कछु करै कमाई इहे वड़ै अजमाया
भरा षलक सव भरम भीर मै अकला अकल परषै
वह साहेव सौ रहै साँचु तौ षूव तमासा देषा
॥ ८४ ॥

धन मद जोवन राजमहा मद तीनौं मद मतवारे
अंध धुंध में षवर न काहू महा महामद भारे

चेतै क्यों न अचेत औजहूँ जौ लों जोति प्रगासा
सावधान हरि नाम भजै तौ देषै षूव तमासा
॥ ८५ ॥

करै फकीरी दिल दलगीरी यह किसने फुरमाया
झाल भेष लै अगल वगल सौं मारि घनेरे षाया
साँचे दिल सौं साहेव साँचा झूठे झूठी आसा
येक आस विसवास रहै तौ देषै षूव तमासा
॥ ८६ ॥

स्वांग धरे नहि साधु हूजिऔं साधि धर्म जो जानै
जोगी जंगल सेष सेवरा षलक भेस कों मानें
विरदै वान वड़ा साहेव का सरमदार कोइ वांधै
और सकल सोभा लसकर का को न कोन सो कांधै
॥ ८७ ॥

लोभी गुरू लालची चेला झूठा मंत्र सुनावै
नहि विसवास दुहुन कौ उपजै कलि में दम्भ पुजावै
देषी देषा दिन भर दस दस माला तिलक सुधारे
विभौ बढ़े ते विमुष राम सौं रामभगत कौ मारे
॥ ८८ ॥

कोटि भाँति साहेव को रिझावे साहेव कबहुँ न रीझै
जो रीझै तो करै मसखरी तरकि उठै तौ षीझै
कोन कोन नहिं करम कीजिये पतित पेट के साँटे
कोटिहुँ करै मिटै न मिटाये प्यास वोस के चाटे
॥ ८९ ॥

अनप्यासे को भरि भरि दीजै नहिं प्यासे को पानी
सूषे खेत धान बिनु वरषा ऊसर आवादानी
उनवो कितहुँ करे झर कितहूँ क्वार मेघ काले का
कहे कहा लै षूव तमासा ठीक ठीक सव देषा
॥ ९० ॥

॥ सवैया ॥

जो जिनके पन मैं रहे लीन
सुतौ दिन ही दिन होत दुषारौं
जाके नहीं पन कौ परवाह
सुताके वजैं दिन द्वार नगारौ
पास रहे गुनवंत गनेस सो
नाहिन आदर मान विचारौ
है कलि चाल गोपाल कहै
कोउ दूर को मान सुमेर ते भारौ
॥ ९१ ॥

॥ चौबोला ॥

भोंदू गुनी वरद कै आगे वन वनि वीन वजावै
वह जानै यह रीझ रीझ कै चितै मोहि पगुरावै
त्यों त्यों तान तोरि सुर बांधै लग्यो होन भुनुसारौं
आलप ताल लग्यो जब गावन जग्यो चरावनहारौ
॥ ९२ ॥

गप्पी गप्प छाँड़ि वहुतेरे चित साहव के चोरे
मन मन होत षुसाल षात पर पल पल करत निहोरे
गठि गठि क्षोलि क्षोलि सव वातें वात कहै तिरसल्ली
देषा हमने षूव तमासा षाते माल सटल्ली
॥ ९३ ॥

येक सूर से कायर मारे सुधि आये सरमाये
कायर येक मारि थरुआ को दिन दिन गाल वजाये
वैठे सभा सिंघ की नाई भेद न पायो कोई
अैसा षूव तमासा देषा साहेव मानै सोई
॥ ९४ ॥

॥ सवैया ॥

वाधत पान सवारि भले सिर

छाँह निहारत हेरति वामे
अैंठत मूँछ मुछारे भयो मुड़ि
चारिक भाड़ भकोसत तामैं
हाँथ कमान औ तीनक तीर
तनेने चलै वड़े नोन हरामे
सार के झार तैं झार तके
वहि वातन के झरि हार सभा में
॥ ९५ ॥

कलिकाल की चाल कही न परै
जस चाल परै रनषेत चढ़े के
हिम्मति नाते हलाल की होत
न होत महादुःख प्रान कढ़े के
और घटे तें वढ़ै बहुतै पै
और घटे तें वढ़ै बहुतै पै
वढ़ाइ घटे न वढ़ाइ वड़े के
अैसे भगे अति लोभ सो कीरति
जैसे भगे रजपूत ठगे के
॥ ९६ ॥

आपु भरे बहु दूषन सों पुनि
और कौ दूसन देत सदा है
जो कबहूँ सपने न कियो रन (युद्ध)
ताहि कहे गजराजनि ढ़ाहै
कायर कूत कपूत की कीरति
ना समझैं अपकीरति काहै
जे कहि मेरु पे जाइ करें मृगया
हम तो मनिहैं केवल कविता है
॥ ९७ ॥

॥ दोहा

नरम गरम सव सो कही परम धरम की बात
आज भंग न कीजिये राजा गुरु पितु मात
॥९८॥

॥ छप्पै ॥

मित्र अमित्र विचित्र तृविध विधि ज्ञान उजागर
सेवक सकल प्रवीन राज काजी गुन नागर
कपटी कुटिल कठोर चोर लंची परपंची
औगुन सुन गोपाल कहि सव ही सव साँची
राजाधिराज कुल कल समति सुराज सिंघ सम नहि लियो
संसार सार मत सोधि कैं सु चूड़ामणि चानक कियो
॥ ९९ ॥

॥ दोहा ॥

यहि कहि चानक चतुर कौं चेते सव निरवाह
वसुधा सुधा प्रवाह किय रजसिंघ नर नाह
॥ १००॥

कही जथा मति वरनि कै यह कलि जुग की रीति
कहवाई तव कवि कही राजसिंघ के प्रीति
॥ १०१ ॥

॥ इति श्री हैहय कुल कमल प्रकास भास्कर प्रताप राजा राजसिंघ चूड़ामणि चानक गोपाल विरचितायां कलि शतकं समाप्तम् ॥

संदेश

मूल्यवान मानव-योनि में हमारा जन्म विश्व-नियन्ता की अहैतुकी कृपा का प्रतिफल है। कलियुग के कथित प्रदूषणों से मुक्त होकर एकमात्र आत्मज्ञान ही मानव जीवन की अमूल्य व अद्वितीय उपलब्धि है। जब कोई आपसे आपका परिचय पूछता है, तब आप कहते हैं, आप अमुक के पुत्र व अमुक के पिता हैं। आप अपना परिचय संसार से सम्बद्ध करके बताते हैं। आप नहीं जानते कि आप का यह परिचय नितांत क्षणिक है। प्रश्नकर्ता भी अंधेरे में होता है और उत्तरदाता भी। दोनों नहीं जानते कि दोनों अविनाशी आत्मा हैं। सारा खेल भ्रम मात्र है, स्वप्न की तरह। सारी सृष्टि ब्रह्म की एक लीला है। वह चाहता है- 'एकोऽहं बहुस्याम्' और सृष्टि के नानात्व के रूप में प्रगट हो जाता है। वस्तुतः, एक ब्रह्म के अरिरिक्त कहीं कुछ नहीं है। इस ज्ञान से अज्ञान के बदल छँटते हैं और सृष्टि का सच हमारे सामने होता है। यह आत्मज्ञान दीर्घकालिक सघन साधना का प्रतिफल है।

(कोटेशन के रूप में कलि शतक)

५

कर्मपाप शतकम् का प्रतिपाद्य

इस शतक में कवि ने प्रकृति-स्रष्टा के सृष्टि-निर्माण, उसके क्षरण आदि का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया है। ब्रह्मा को सृष्टि का सृजनकर्ता, विष्णु को पालनकर्ता तथा शिव को संहारकर्ता बताया है, जो शास्त्रोक्त विवरण है। कवि कहता है कि भाग्य को भोगना ही पड़ता है। कर्म-फलों का भोग प्राणिमात्र की नियति है। इससे वह छुटकारा नहीं पा सकता। कर्मफल-भोग के लिए स्रष्टा ने स्वर्ग-नरक का निर्माण किया है। चार युग मानवजाति के पुण्य-क्षरण की क्रमिक कहानी कहते हैं। कवि ने सेनापति आदि का अच्छा रूपक प्रस्तुत किया है। चौबोला छंद में कवि कहता है कि इस युग में कामदेव सेनापति है तथा महामोह मंत्री है। कपट को दरबारी बताया है। अपने रूपक में कवि कहता है कि कपट, तृष्णा आदि रूपवती रानियाँ हैं। सभी बली हैं तथा चिंता नवेली रानी है। कवि ने रूपक के माध्यम से ही प्रभावकरी वर्णन किया है। वर्णन के लिए उपमा और रूपक को सशक्त माध्यम बनाया है तथा इन्हीं से मानवीय सतोगुण व तमोगुण का मार्मिक किया है। कवि ने अपने रूपक में जोगी और कवि को भी समेटा है। कहता है- जोगी जती तपी संन्यासी सबके सत्त डगायो। समूचा कर्म-पाप शतक राजा, रानी, प्रजा आदि के नैतिक विघटन का ब्यौरा है।

क्रमशः

५
कर्मपाप शतकम्

।। चौबोला ।।

जै जै सकल लोक चिंतामणि संष चक्र के धारी
धरनीधरन हरन भुव संकट हरि भक्तन हितकारी
करता धरम करम के सव दिन पाप पुण्य परगासा
सकल मूल मैं सकल कला करि करते षूव तमासा
।। १ ।।

मनसा सकति तृगुनि तें त्रिभुवन सुर अरु असुर उपाये
सुमति कुमति दैं जीव जड़नि कौ नाहक नरक पठाये
जिन जैसे गुन ग्रहे आपु ते तिनहि तैंसियअै आसा
आप तमासा करते साहेव लषते षूव तमासा
।। २ ।।

।। दोहा ।।

सब घट साहेव येक हैं रचना किये अनेक
बंधे करम की डोर ते जीव न उबरे येक
।। ३ ।।

।। छप्पै ।।

करम मूल करतार पार पावै नहि कोई
व्रह्म विष्णु सिव सक्ति आदि पूरन सव कोई
रचना सकल चरित्र लोक लोकनि उपजावै
सुर नर मुनि हूँन सदा नाच वह अमित नचावै
आगम सव सुविचार हित सुचित धर्म मति धर्म को
सुषदायक गोपाल भजि सुबंदहु नित नर कर्म को
।। ४ ।।

।। चौबोला ।।

व्रह्मा कर्‌यौ कुलाल गठन कौं जीव लक्ष्य चौरासी

तीनि लोक मैं जितने कीन्हें येकै येक मवासी
चलै न जोर जेर सो जकरे पकरें डिढ के आसा
अैसे षेल करम का देषौ करता षूव तमासा ॥ ५ ॥
आवागवन जिनहु के नाहीं तेऊ आवै जावै
जिनके रूप न रेष वषानै तेउ नर रूप कहावै
पुण्यवान अवतारी की लीला का हो क्या लेषा
जे निहकरम करम ते करते षूव तमासा देषा ॥ ६ ॥
औरन की कहि कौन चलावै सिव से कीन्हें जोगी
देत दान वरदान आन कौं आपु हलाहल भोगी
गंगा मुंड माल मुंडन की अजर अमर पद पाये
अैसा षूव करम तिनहू को घर घर भीष मंगाये
॥ ७ ॥
सव ते तेजवंत सूरज हैं तृभुवन ज्योति सदा ही
गगन पथिक रथ येक चक्र कों हाथ सारथिहि नाही
आवत जात जात जुग केंते प्रतिदिन करत प्रकासा
तेउ करम भोग कों करते अैसा षूव तमासा
॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥
अमित कर्म गति जानिये तृविधि प्रसिद्ध प्रकार
उत्तम मध्यम अधमता करत भोग संसार ॥ ९ ॥
बंधनकारी कर्म रचे हैं उत्तमादि करतार
उत्तम मध्यम प्रेरतें उत्तम भोग विचार
॥ १० ॥

॥ छप्पै ॥
भावी अरु न बंध धर्म के अज्ञाकारी
तिनके उद्यम दूत प्रेर करि देत विचारी
होनी होइ सु होइ वीच तामें कछु नाहीं
सुष दुष भोग अनेग लोक लोकन के माही

इहि भाँति अदृष्ट वलिष्ट अति सुनहि तिनपर समरथ्थ कोइ
इक सारभूत सव पर सपा सु होनी होइ सु होइ सोइ
|| ११ ||

सव पर सव दिन प्रबल कर्म गति करै करावै सोइ
तासों कौन दूसरी ठानै होनी होइ सो होई
यातैं जीव जोर करि अैसें करै आपनो भायो
सवतें सार वषत की वाजी सव को वांधि नचायो
|| १२ ||

देव अदेवनि करै जेर धरि जालिम जोर जमानें
साधक सिद्ध वांधि तपधारी गर विन गरव भुलानें
सेवक सवै भागि कै अपने रहे करे नित आसा
अटल अजीत जीति कै राषै अैसा षूव तमासा
|| १३ ||

राजन को राई कर डारै रंकन देत रजाई
जोरावर को जेरदस्त करि अवलन को वलदाई
अवगति गति जाकी सव दिन ह्वै अैसा वखत मवासा
लेषै अवलेषै अवरेषै देषा षूव तमासा
|| १४ ||

करम करे सो मरे न कोई करम वुद्धि अनुसारै
पलटै नहीं करम की रेषा कौन करम कौं टारै
करम घटावै कुमति लगावै करम वढ़ावै छाजा
करै करावै करम भोग सव कहा रंक कह राजा
|| १५ ||

पाप पुण्य दीवान कर्म कें सुमति कुमति द्वै रानी
सरग नरक सें सहर वसाये दुष सुष आवादानी
लष चौरासी योनि जीव सव भू त्रिलोक के वासी
आवा गमन राह नहिं टूटै विरले करै मवासी
|| १६ ||

साँच झूठ कौ लेन देना जो करि जानै जैसा
जितना भरि कै करै करम को सो भरि पावै तैसा
सांझी नाहि कहू को कोई आप आपने आसा
अैसा येक षेल साहेव का जिसमें षूव तमासा
॥ १७ ॥

साँच वसत है आदि विष्णु में तहाँ साँचु लै मेलैं
झूठ वसत है महा नरक में महानरक लै ठेलैं
और जुगन मै साधि प्रवल तौं यह जुग प्रवल लवारी
ताते साँचु भयो द्वै विस्वा पाप भयो अधिकारी
॥ १८ ॥

झूठी साँचु होइ नहि कवहूँ साँच होइ नहि झूठी
मूठी साँच लहै सव सौदा झूठी मूठी झूठी
झूठी नर नारी कों कहिये सव साँचे ते होई
साँच झूठ के मूरति साँचे पाप पुण्य ये दोई ॥ १९ ॥
सतजुग राजा महासत्त तौं घटत घटत घटि आयो
अव ह्वै पाप प्रवल भुवमंडल सव की सत्य डगायो
राज राज परजने जने गनि दिल सवका अवरेषै
मौन पकरि कै पुण्य विचारो पूव तमासा देषै
॥ २० ॥

साँच होइ तौ साँची मानै झूठा झूठी मानै
साँच होइ तो डगै न कबहूँ झूठा झूठी ठानै
साँच समान और तप नाहीं झूठे पातक लहिये
सांचे मैं सव खूव तमासा याते झूठि न कहिये
॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥
सतजुग त्रेता द्वापरै कीन्हों सुकृत राज
यह कलि वगस्यो आपु तैं पापहिं राज समाज ॥ २२ ॥

पाप दाप सव पर करै प्रभु ते प्रभुता पाइ
सैनापति किय काम कौं चमू समूह चलाइ ॥ २३ ॥

॥ चौवोला ॥

लाग्यो कलुष करन रजधानी महावीर पहिराये
सैनापति किय कामदेव कौं सकल सैन सिर नाये
वरषत वान कटाक्ष तरुन ते तपी तपहि भहराने
वकतर कुंड राग ज्ञानिन के करे चूर मरदाने
॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

लोभ प्रवल मंत्री कर्‌यो दूजे मोह दिवान
क्रोध षवासहिं सीपु सी षिन षिन लागत कान
॥ २५ ॥

॥ चौबोला ॥

लोभ प्रबल को दयो दिमानी सव कारन को करता
तसों धरम करन को पावै सकल मुकुति को हरता
महा उदारन कियो ष्वार धरि धन लै धरनि धराये
वासो वचे वीर कोई वाजे सो धन षाइ षवाये
॥ २६ ॥

दाता करे करंद मारि के देत लगै दुष भारी
दंड कमंडल मुंज मेषला तिनहि किये घरवारी
जटा जूट तै भसम लपेटे तिनहि लपेटी माया
कनक मेरु को सिला गनत ते तिनहि लोग धरि षाया
॥ २७ ॥

कै धनि गाढ़ पताल धराये कै गनिकानि षवाये
आगि जरै कै चोर चुराये कै जू वे हरवाये
लगै न दाम येक परमारथ सवै अकारथ लेषा
दुनी माह दीवान लोभ का षूव तमासा देषा
॥ २८ ॥

भले भले भूले मतिमारग कै अपतन कौ वूझै
जाति पाँति कुल तजै अकारथ धन स्वारथ कौ सूझै
सो धन धूरि धूम ते मिलिये रहै सदा वदनामी
महा प्रवल वा नैन वीर यह सवको लोभ अकामी
॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

करत अनीतन की वहै द्वारपाल अविस्वास
अपमारग सेवक सवै सदा रहे कलि पास
॥ ३० ॥

सुजस अकीरति जासु कौ सुषदायक संताप
अहंकार मद कागदी प्रोहित सो कसु आप
॥३१ ॥

रानी तृष्णा राज की अति रति मैं सुष देत
चिंता नित नव जौवना निरषत चित हर लेत
॥ ३२ ॥

परनिंदा दुर्मति वड़ी लिये सहेली संग
तृष्णा रानी रसिकनी करति हरति रस रंग
॥ ३३ ॥

॥ कवित्त ॥

सुंदर सुघर घर घालति अनेगन को
सव सों सनेह करि सवके अकाज की
रति में नवेली अलवेली लै सहेली संग
करति विहार तप हरत न लाज की
सिद्धति समाधि टारी साधुन दै दुःष भारी
ऐसी अधिकरी जग तृष्णा राजी राज की
रति ते नवेली अलबेली है सहेला संग
करत विहार तप हरति न लाज की ॥ ३४ ॥

॥ दोहा ॥

कलुष महा नृप कलि भयौ उद्दित परम उदार
प्रवल प्रताप प्रकास है अष्टादस संसार
॥ ३५ ॥

॥ चौबोला ॥

सैनापति किय कामदेव को महामोह कौ मंत्री
क्रोध षवास कपट दरवारी कर्यो न कवि को जंत्री
महाकामदी महा लोभ सौ करै षलक का लेषा
अष्टादस परताप तेज का षूव तमासा देषा
॥ ३६ ॥

श्रम जे करत निरंतर ताको सफल सुमारग सारे
वैर सोक संताप आदि कौ सत्कवि अजस उचारे
रानी रूपवती अति तृष्णा चिंता सदा नवेली
पर निंदा दुर्मति रति रस को सोहै संग सहेली
॥ ३७ ॥

दारिद राजनि करै उधम तौ वाहिर भीतर आवै
कलह कलपना नाइन मालिन दुर्गति महल सिधावै
इतने कलुष राज के काजी विलसत सकल विलासा
वाधक महा धर्म के कलि में करते षूव तमासा
॥ ३८ ॥

॥ दोहा ॥

येक येक तैं प्रवल हैं महा कलुष के वीर
वलकत अपने वल सवै समर सूर वल धीर
॥ ३९ ॥

॥ सवैया ॥

मोह के होत महा नित आनन्द
मान अनेगन के जिन मारे

लोभ के भीर रहै निसिवासर
होत अलोभिन को दुःष भारे
ज्ञान विवेक विना सत काम
सु कोक कला रस राचत सारे
राजत यौ प्रभुता कलिराज के
वाजत पाप के पौरि नगारे
॥ ४० ॥

॥ दोहा ॥
प्रवल वीर वाने भये सवके करत अकाज
अपने अपने अैंड तैं वलके सुभट समाज
॥ ४१ ॥

॥ सवैया ॥
लोभ से जाके महा भट भूतल
मोहित मोह करै सुन लीजे
क्रोध सो जुद्ध जुरै को धरा पर
कायर होत छमा अवनी तै
को मकरध्वज ते जु धनुर्धर
संकत संतत ज्ञान वितीते
पातक कौ प्रभुता महिमंडल
लायक कौ कलिराज हि जीते
॥ ४२ ॥

॥ दोहा ॥
वैठे सभा अनीत कें करत कुमंत्र अधीर
वलकत अपने वल सवै कलुष राज के वीर
॥ ४३ ॥

॥ सवैया ॥
लोभ कहैं सुनि मोह सिषावनु
काहे कौ येक न कौं तू नचावै

मो सम के सवही विधि पूरन
मो सो को और सपूत कहावै
ज्ञान कौ वेरि दै मेरि कहो
करि मेटु भलाइन भाग न पावै
तौ वदिहो कलि में वलवीर
जों वांधि विवेकहि नाच नचावै
॥ ४४ ॥

॥ दोहा ॥ ॥ ४५ ॥
सुनि सवके करतूति कहत कलुष वल आपु
हो कलिराज प्रताप तें दलौं सुकृत को दाप

॥ सवैया ॥ ॥ ४६ ॥
पाप कहैं कविराज सुनो
करिहों करतूति कछूक कर्‌यो मैं
तेरे प्रताप ते पुन्यरु पापहि
दोउन को दुष भार भर्‌यो मैं
काम सो मेरे महारन मंडन
लोभ सो भूतल ज्ञान हर्‌यो मैं
भागत हो भहराइ भर्‌यो डर
नन्दकुमार को मार मर्‌यो मैं

॥ सवैया ॥ (४७)
ज्ञानहि मारि विहाल करों
ततकाल हि गाल विवेक को फारो
कैसे छिपोगे क्षमा क्षिति मंडल
मान महातम दूरि कै डारौं
सूरिऐ देउ सवै सुनिचारहि
नेम अचार को मारग मारो
संकत राम के नामहि तें न तो
यौ कलिराज को काज सुओधारो ॥

॥ दोहा ॥

यह सुनि कलि कोपित भयो कीन्हों आप विचार
तीनों जुग लघु मोहि करि आपु भये सिकदार
॥ ४८ ॥

अव हो मद सवको दलो छलो पाप ते धर्म
प्रगट करो करतूति कों तजो न अपने कर्म
॥ ४९ ॥

॥ सवैया ॥

यौं कहिकै गहिकै धनुवान
गुमान भर्यो रन रंग मचायो
साँचि समूह चमू चतुरंग
वड़े चतुरंगन मारि चलायो
दान सों लोभ भिरे दल में
इत मोह महा वलवीर षसायो
भागि चले भहराइ तपी
जव ज्ञान के ऊपर काम धसायो
॥ ५० ॥

॥ चौवोला ॥

जोगी जती तपी सन्यासी सवके सत्त डगाये
जप तप नेम धर्म सव लूटे धरि धरि जटा मुड़ाये
मारे विरथ महा विहवल के घायल घने घरक्कै
मृगनयनिन के नैनवान ते रति रन षेत फरक्कै
॥ ५१ ॥

ग्यान मस्त गहि जेरदस्त करि जकरे पंडित पक्के
निरषिउ रोज सरोज मुंड से छैल विरह में छक्के
हरि के ध्यान धरै को हिय में हरिन नेन ये हेरे
कानन में तप करै कोन सुनि काम कोकिला टेरे
॥ ५२ ॥

॥ मरहठा ॥

सुंदर नारी लषि व्रतधारी सुमति विसारी सारी
लालच भारी सव लै टारी काम कटारी मारी
वैस तिवारी जोवन वारी तपै विरागी चारी
जित कित यारी ग्यान विरागी जोग निवारी नारी
॥ ५३ ॥

॥ कवित्त ॥

महातप धारी धूम पीवत पवन पय
झूलत अरध मुख ऊरध विचारे हैं
वकतर राम कुंड ज्ञान के संजोहिल जे
मोहित कै सेनवान विरह के जारे हैं
निरषि उरोज कलधौत के सरोज सम
भँवर मनोज करि रसनि निहारे हैं
लीन्हें ताप माल लूटि सुरति में डारै कूटि
मति गयी मारी मृग नैनन के मारे हैं
॥ ५४ ॥

॥ सवैया ॥

जे सुष भोग विलास तजे
वसि कैं वनवास निसा-दिन जागै
लैकर वा परवाह तजे जिन
भामिनि भोग ते डोलत भांगे
ते क्षिति की दुलही उलही
लषि भौन निरूप के भीषनि पागें
॥ ५५ ॥

॥ दोहा ॥

प्रवल काम चहु जुग वली वाचे विरले वीर
षट मुष गोरख गरुड़ के हनूमान से धीर
॥ ५६ ॥

कै लच्छन सनकादि सुक नारदादि मुनि सर्व
हर सों हार्‌यो नीठि कै हर्‌यो सवनि को गर्व
॥ ५७ ॥

काम कुतूहल हाँलते हारे सव संग्राम
फूटे कटक तपीन कै लूटे ज्ञान सुग्राम ॥ ५८ ॥

॥ कवित्त ॥

मीन मृग हारे दीन षंजन विचारे देषि
नेन कजरारे मारे मुकुति तवारे हैं
सुंदर उरोज विधि सोने कैसे राज मानो
मोरचा मनोज महामोह के मुनारे हैं
वेधि वेधि डारे हाव भावन के भालन सो
वालन सो वचि कौन तपी तप धारे हैं
चाहि चंद आनन कों भूलि भूलि ग्यान को
कहा करे वीत राग विरही विचारे हैं
॥ ५९ ॥

आठहू पहर कामदेव के कहर माह
मोह के सहर छोड़ लीन्हें मृगछाला है
देस देस दीप दीप कंदर हू ढूंद देत
देषि देषि भूलि रहे रूपन को साला हैं
पंडित प्रवीन ग्यान मंडित विहंडित कै
कीन्हें सव जेर अैसे मनसा के लाला हैं
जोगन के आला पाइ जोवन रसाला धाई
लै लै माला वाला डारे जप माला हैं
॥६०॥

कहा पीर कहा मीर कहा साहिऔ फकीरी
कहा तप धारी कोइ वीरवल कहत हैं
काम के कहर लूटैं ज्ञान के सहर जोर
कौन को विरह कें न सेल सलकत हैं

टूटि टूटि जिरह जंजीर जात जोगन के
भोगन के साला देषि वाला ललकत हैं
आसन करत तेई आस न जुरत जंग
सुरत में नाथन के मुद्रा झलकत हैं
॥ ६१ ॥

॥ चौबोला ॥
कौन कहे करतूति काम की चारिव जुगनि दुहेला
करे जेर तिहुँ लोक जेर तें जवरनि मारि मुहेला
महा महा वानैत मुनीसन तपसा करे विनासा
श्रृंगी रिषि से मन में फूटे अैसा षूव तमासा
॥ ६२ ॥

॥ दोहा ॥
महामोह वानैत तव सजि धायो चतुरंग
रह्यो घेरि तिहुँ लोक मै करै कौन सो जंग ॥ ६३ ॥

॥ चौबोला ॥
महामोह जालिम सों जंगनि नहि येको ठहराने
तपी जपी जोगी जग जंगम जहाँ तहाँ भहराने
ताकों प्रबल प्रताप उग्र अति चराचरन बस कीन्हें
दलवल साजि सकल घट घट में घेरि जीव जिन लीन्हें
॥ ६४ ॥

वेध्यो कौन हेतु के मारे तपी जपी व्रतधारी
परिपूरन सब भांति सवनि के सबकी सुमति विगारी
विविध विचारवान भरमाये षलक करै को लेषा
षबरदार कोई विरला अैसा षूव तमासा देषा
॥ ६५ ॥

॥ दोहा ॥
महामोह में सव वध नाहिन छूटै कोइ
जगमाया मनमोहिनी मोहि लिये सव कोइ ॥ ६६ ॥

।। कवित्त ।।

कहा सुर नागर नर किंकर सकल लोक
पूरन प्रतापवंत व्याकुल कहल मैं
पंडित प्रवीन दीन जोगी कै जुगति हीन
लीन ह्वै जहान लागे जाही के टहल मैं
भूति भूमि संजम जमाति तप धारिन के
मनसा चकित भये चिंता के चहल मै
रूपरस रंग अंग संगति उमंग नितै
कौन रह्यो मोहि महामोह के महल में
।। ६७ ।।

।। चौबोला ।।

पचे मोह ते रचे भाँति बहु नचे नाच वहुतेरे
दारा पुत्र कलत्र मित्र हित करत प्रपंच घनेरे
परिपूरन सव भाँति उग्र अति सवै अपनपौ हारे
करते षूव तमासा सव हैं महामोह के मारे ।। ६८ ।।
महिमा महा मोह कों अद्‌भुत तृभुवन व्यापि कपूरे
देव अदेव भाव नहिं पावै उबरै विरले सूरे
कहत न वनै करम कौ जाकी करै जेर सव आसा
सावधान कोइ रहे षलक तौं देषै षूव तमासा
।। ६९ ।।

।। दोहा ।।

धायो वीर सनाह कसि सवहीं के करि त्रास
कलह धनुक धरि कामसुत उह्यौ क्रोध षवास
।। ७० ।।

।। चौबोला ।।

महावीर वानैत देषिअै अति ही प्रवल मवासी
काल व्याल सम क्षमा दमन कौ कोपहि दियो षवासी

सद मदमत्त मदन को नन्दन पल पल दंद वयेषैं
साधें कलह वान निसिवासर षूव तमासा देषै
॥ ७१ ॥

कहत कोप चंडाल जगत में कागहि गरु वदनामी
प्रगट कहत चंडाल येक वद प्रभु के नोन हरामी
परनिंदक चंडाल कहत जें परमारथ विनु लेषा
रामभगति विनु धका कात जें षूव तमासा देषा
॥ ७२ ॥

॥ दोहा ॥

ध्यान धनुक धरत न वनै निसि वासर को दंद
जित कित भूले चौकरी तपसी तरकस वंद ॥ ७३ ॥

॥ सवैया ॥

कोप कमान गह्यौं कर सैं जव
जालिम जोगिन जंग मचायो
व्याकुल कै वल ते ममता
मद सम्मत मत्त दुरद्र धसायो
सारे वड़े उमराव महीपति
के विन नाहिंन कीरति गायो
॥ ७४ ॥

॥ चौबोला ॥

येक क्रोध ते होत सिद्धि सव येक क्रोध अधमाई
येक क्रोध बिनु लहै न कौड़ी येक क्रोध अधिकाई
येक क्रोध करि आठ प्रहरहू कलह जंग वैं जागैं
जहाँ जाइ तहँ षून गरदनी षूव तमासा लागैं
॥ ७५ ॥

जप तप दान ध्यान ज्ञानन को अधम क्रोध करि नासै
महा प्रबल षल करत नास सब घट घट घनो प्रकासे

व्यापत कोप काहि नहि जग मैं सकल विधन को करता
रन मै होइ प्रवल कवहूँ तौ प्रवल वलिन को हरता
॥ ७६ ॥

मन की करैं सकल अविवेकिन तेऊ कहै कहाँ लौं
उन सव रीति आपने ठानी पाये ठौर जहाँ लौं
जाकौ जहाँ चाहिये ताकौ तहाँ ताहि नहि रष्षै
करत और की और आप ते षूव तमासा लष्षै
॥ ७७ ॥

जहाँ चाहिअै महा सुमति तहँ कुमति करै परगासा
जग में अविवेकन के चलते महा तबाही पासा
जहाँ चाहिये हिम्मत वाको कुमति प्रदेत निरासा
यों अविवेकन कीन कलहि में करते खूब तमासा
॥ ७८ ॥

जाकी चालि जहाँ जो चहिये ताकी तहाँ न ठाये
जाको महा मुकुति पद चहिये ताकौ नरक पठाये
जहाँ सदा हर भगति चाहिअै तहाँ विषै का लेषा
जहाँ तहाँ अविवेकन की हम खूब तमासा देषा
॥ ७९॥

॥ दोहा ॥
ग्यानवंत गुनवंत कों पास न बैठ न देत
नकली नकल मिलाइ के मन सबको हर लेत
॥ ८० ॥

॥ सवैया ॥
नाचि चलै कर तालिहि दै
अरु गाइ चलै कछु ते कछु प्यारो
हासन ही वस कै सब को
वह लेत रहे नित मौन मौज अजारो
जौ सब कौ न कलै कल लेत

जौ सब कौ न कलै कल लेत
भलो सबते सुरिझावत हारौ
आगम वेदनि वेदन हार ह्वै
सोचत पंडित पौरि विचारौ
॥ ८१ ॥

॥ चौबोला ॥

कीन्हों द्वारपाल अविस्वासहि सो विस्वास विगार्यो
करि परतीति प्रीति ते आधिक हितू हितू को मार्यो
प्यार यार सों प्यार होय सो कपट करै परगासा
कलुष नृपति के कपट पौरिया करते षूव तमासा
॥ ८२ ॥

राषै कपट गुरू चेला सों चेला गुरू न मानै
सेवक कपट करै साहेब सों साहेब अपनो जानै
मित्र मित्र सों बाप पूत सों नारि षसम षसम अनलेषा
पासवान अपमारग सिगरे कलुष नृपति के भारे
॥ ८३ ॥

पासवान अपमारग सिगरे कलुष नृपति के भारे
करत प्रपंच रहत निसिवासर राह सुमति के मारे
पर धन पर नारी पर निंदा सव परतर कौ आसा
साहिव के दरवार तिनहु का होगा षूव तमासा
॥ ८४ ॥

महा वैद है सो के पाप को करत सदा वैदाई
औषध देत वियोग सकल जग जानत करत निकाई
मंत्रन मूलि गढ़ै पर उनका अंत अकारथ आसा
महा पतित घरि दे न नरक कौं करि करि षूव तमासा
॥ ८५ ॥

तलफत फिरत प्रान अति आरत वृथा देत दुष भारी
सालक सकल जीव को जग में महा नरक अधिकारी

त्रिविध ताप कौं आप रूप तन राम कथा सुनि भागै
पुन्य पौरि संताप प्रोहिते षूव गरदनी लागै
॥ ८६ ॥

यह कलि कलुष करम काजर सों भर्‌यो भौन सो मोहै
तामे रहत राति दिन प्रानी विना कालिमा को है
केते गये हेतु अरु ह्वै हैं दिन सत करि करि आसा
है निकलंक येक वह करता जिसका षूव तमासा
॥ ८७ ॥

अपने भयो गये सब जेतौ मन मन सब कोइ जानै
तऊ न साँच रहत साहेब सों नेक हारि नहि मानै
जोरावर सों कौन जोर है लिखा करम जो रेषै
हारि मान हरि नाम भजै तौ षूव तमसा देषा
॥ ८८ ॥

पातक औ पर निंदा घट घट जामै पैडी डोलै
सव सों कहै सवै द्वै वातें भली अनभली बोलै
जौन कहै तौ लहे न आदर कहे अकारथ लेषा
कुलि आलम का कलि में भाई षूव तमासा देषा
॥ ८९ ॥

दुषदायक लायक अपमारग दुरमति दुसह सहेली
अति रति रमित तपोधन धरकत महा विषय विषवेली
कौन कौन कित सुमति बिगारी कर यारी अनलेषा
षूव षूव धरि करी ष्वार है षूव तमासा देषा
॥ ९० ॥

दारिद जरा जरी जग जीवति होहि परम दुखदायी
करहिं दंद दिन मंद ज्ञान गुन इनकी अकथ कहानी
अति असंक नहि राज रंक डर सब पर समय जनाये
षूव षूव कछु परे ष्याल जिन देषा षूव तमासा
॥ ९१ ॥

दारिद जराजनी जग की वनि होहि परम दुषदानी
करहिं दंद दिन मंद ज्ञान गुन इनका अकथ कहानी
अति असंक महिराज रंक डर सवै राम जनवाये
ष्वार करै षूवी सव षन में जापर जोर जनाये
॥ ९२ ॥

कलह कल्पना नाइन मालिनि कलकलाति जग डोलै
सव कौ सकल भांति व्यापिक ह्वै करहिं अनेक कलोलै
ये पर वार प्रवल पातक के करे षलक परतोरा
कुलि आलम का देषि ष्याल कवि षूव तमासा जोरा
॥ ९३ ॥

॥ दोहा ॥
सवको करत निरोध है जिनके पूरन ज्ञान
ज्ञान विरोधी नरन को केवल नरक निदान ॥ ९४ ॥

॥ सवैया ॥
ज्ञान विवेक विलोकि विलोकि
किये कलि चानक को कलि माही
चंचल पारद हू ते रहें मन
हाँथ न आवत जोग दसाही
श्री हर नाम प्रताप की वात
न भावत मूलि विषै सरसाही
सीषै न आजु सिषावत है
कहि आवत है करि आवत नाहीं ॥ ९५ ॥

॥ दोहा ॥
मूरष मन पाषान में भिजे न कैवर तेल
कोटि भँति के पेरिअै दारू रहै न तेल ॥ ९६ ॥

॥ सवैया ॥
सिष लागतु है विष सौं सव को
सवही सव मारग भूलि गये हैं

ज्ञान कहै जुग वीसनि के
विस सी अपना मद मोह भये हैं
भावत श्री भगवंत कथा नहिं
काम कथा को कान दये हैं
पाठ पठे अविवेकनि के
सठ काठुहि ते सो कठोर भये हैं ।। ९७ ।।

।। दोहा ।।

इहि विधि पातक राज के वरने उग्र प्रताप
व्यापि रहे संसार मैं साधुन को संताप ।। ९८ ।।
वरने भँति अनेक करि पूरन ज्ञान प्रकास
सुमतिवंत को मुष सदा कुमतिन को परिहास ।। ९९ ।।

।। निश्चल ।। (छंद प्रभाकर, पृ ६१)

इहि विधि साजि समाज कलुष कलिकाल प्रवल अति
महावीर वानैत येक ते येक उग्र मति
राति दिना दव देत लेत सव लूटि षजानै
जप तप संजम नेम धरम के मारे थाने
थर हरहि संत संकनि अमित सु पुण्य हि करत पुकार है
सुनि करत साज सुकृत समर सुदये नगारा द्वार है ।। १०० ।।

।। दोहा ।।

जोधा सुकृत राज के धाये सव समरथ्थ
षंडहु पाप प्रचंड कौ धनुष बान धरि हत्थ ।। १०१ ।।

इति श्री हैहय कुल कमल प्रकास भास्कर प्रताप राजा राज सिंघ चूड़ामणि चानक गोपाल विरचितायां कर्म पाप शतकं समाप्तम्

६

पुण्य शतक का प्रतिपाद्य

इस शतक में पुण्य की प्रशंसा तथा आवश्यकता निरूपित गयी है। पुण्य कर्मों का सुफल ही मानव को सद्कर्मों की ओर प्रेरित करती है। पुण्य कर्म व्यक्ति व समाज दोनों के लिए हितकारी है। इसके अतिरिक्त मरणोपरांत भी यह स्वर्गादि लोकोत्तर जीवन या स्वर्गभोग का भी कारण बनता है। कवि ने विभिन्न रूपों में पुण्य की प्रशंसा की है। इस शतक में भी कवि की काव्य-प्रतिभा का अच्छा परिचय मिलता है। पुण्य को राजा का रूप देकर पाप कर्म का फल निरूपित किया है। वह अपनी सभा में सेवकों से कहता है कि पाप के टुकड़े-टुकड़े कर दो। और, राजा पुण्य की आज्ञा पाकर पुण्य के सैनिक पाप-समूह पर टूट पड़ते हैं। राजा पुण्य की आज्ञा पाकर उसके सेवक क्षमा, विवेक, बुद्धि आदि सैनिक पाप-समूह पर टूट पड़ते हैं। ज्ञान पुण्य का सेनापति है। सद्विचार उसका फौजदार है। वेद, पुराण व स्मृतियाँ उसके दरबार के पंडित हैं। वैराग्य छड़ीदार तथा विश्वास उसके दरबार का द्वारपाल है। इस तरह, कवि की काव्य-प्रतिभा ने इस शतक में सांगोपांग रुपक प्रस्तुत किया है।

क्रमशः

६

पुण्य शतकम्

जै जै गणनायक सव सुष दायक सव लायक दारिद हरने
जै जै वरवानी त्रिभुवन जानी सव सुष दानी तुव सरनै
जै सुंदर वदनं सव सुष सदनं अरि मद हरनं अघ तरनम्
है सव कुल राजा राम निवाजा जग जै कीरति उच्च रशम्
॥१॥

॥ छप्पै ॥

पूरन पुरुष पुरान पुन्य तृभुवन को मंडन
अजर अमर के अकल महा पापन को षंडन
जोग जाप संताप आदि जाके श्रुति गावे
पारायन भनि होहि रूप नारायन पावे
गोपाल भनत जिहि चरिन सुनि नित नव मंगल जाहिने
षल दल कलेस दल मलन कलि सुधर्म प्रवल जिहि दाहिने
॥ २ ॥

॥ चौबोला ॥

पुन्य प्रवल जिहि होत दाहिने ताहिन नक्को कोई
तीनि लोक पर अमल चलावे जो चाहे सो होई
दिन दिन वढ़ै घटै नहिं कवहूँ जो दिल में कोइ रषैं
षूवी करै षलक मै अच्छा षूव तमासा देषै
॥ ३ ॥

कहा साहि उमराव जु राजा रंक फकीर सिपाहा
दिल में रहै धनी सो सच्चा लहै षलक का लाहा
कहा साहि उमर कल सो लेना डिढ़ करना विस्वासा
रहै ठीक ठहराइ कोइ सौ देषा षूव तमासा
॥ ४ ॥

।। तोमर ।।

इक समै सुकृत राइ । वैठे सभा हरषाइ
सोहे सवै मनि धीर । ज्ञान गुन के भट भीर
कलि कलुष कीन्हें जोर । धुनि सुनि परी चहुँ ओर
विचले चमू तप जोग । अव करौ वेगि प्रयोग
।। ५ ।।

।। दोहा ।।

सुनो सभा सव श्रवन दैं कहत पुन्य वलवंड
साजहु सुभट सम्हारि कैं करो पाप सत षंड ।। ६ ।।

।। चौवोला ।।

कोपे सुभट सुकृत सुनि सुनि कै सैना प्रवल सजाये
महावीर वानैत जंग कों सजि आतुर ह्वै आये
वड़े वड़े जोधा पहिराये यहै सीष सव लीजै
आधै करै अधिक सी पापै षूव तमासा देषै ।। ७ ।।
ब्रह्मज्ञान दीवान पुन्य को सकल ब्रह्म सम जाने
मंत्री दृढ विस्वास दूसरो दया षवास वषाने
पासमान सत मारग सिगरे साँचु कागदी पासा
सील सकल उपकार सुभट रन ठाने षूव तमासा
।। ८ ।।

पंडित वेद सभा में जाकें सुमत न्याइ निरवारे
क्षरीदार वैराग त्याग सव दान पौरिया द्वारे
वैद जुगति पुनि जोतिष जोसी सुकवि सुजस विरदाई
जुग जुग प्रवल प्रताप अटल पद सुकृत करत रजाई
।। ९ ।।

रानी सुमति कुमति है चाख्यो सहर सत्य पुर माही
सत संतोष विचार सुसंगति समरथ दूत सदा ही
क्षमा विवेक वुद्धि वहु सेवक कौ सवने अवलेषा
येक येक तै सभा उजागर षूव तमासा देषा ।।१०।।

॥ दोहा ॥

सैनापति किय ज्ञान को फौजदार सुविचार
पंडित सुति सुमृत रहैं राजनीति के द्वार
॥ ११ ॥

जाको दया षवासु है दान लगै दिन काल
परमारथ संसार को करनहार कल्यान
॥ १२ ॥

क्षरीदार वैराग हैं द्वारपाल विस्वास
सतमारग संतोष सु सदा रहे प्रभु पास
॥ १३ ॥

जाकी रानी रसिकमयी मुकति सुहाई चारि
नवल नवेली भगति सों जिहि रीझै नरकारि
॥ १४ ॥

सरस सरस सत लोक है गढ़ वैकुंठ विलास
वड़े वड़े सब सुकृत तें पावत तिहि पुर वास
॥ १५॥

वहु विधि जाके जानिये प्रभुता तृभुवन मान
जुग जुग कीरति करत है जिनके वेद पुरान ॥ १६ ॥

॥ चौबोला ॥

वैठक सभा मंत्र के मूरति आगम निगम वषाने
अव यह पाप मुंड कै लीन्हों अदव नेक नहि माने
प्रवल ताप कलि काल उग्र अति को न झार तिहि झेलै
देषै षूव गरदनी नर को वड़े नरक में ठेलै
॥ १७ ॥

कीजै कहा कोन वस अपनो जीति पाप जस लीन्हें
अपने समय सवै गुरु उत्तम दुष जुग जुग कौ दीन्हें
दावादार सवै इकदाई कहा वड़े अरु छोटे
नजरा होइ परष सव छोड़ै कहा षरे कहँ षोटे ॥ १८ ॥

॥ सवैया ॥

ज्ञान विवेक विचारि किये अव
कीजै कहा कोइ नाहिन चाहैं
है प्रभुता दिन पापहि की कहि
पुन्य पुनीत की कौन सदा हैं
है हरिनाम प्रताप कि ओट
हमे रहते कहते अब काहे
या कलि साँचहि राचत नाहिं
लबार को आदर मान सदा है
॥ १९ ॥

॥ छप्पै ॥

कहत सुकृत सुनि ज्ञान काम नहि तोसो हारै
करि ऊधम अति क्रोध क्षिमा कों मगज उतारै
दानहि दै दृढ़ लोभ मोह नहि कानिहि मानैं
इहि भाँति प्रवल कलि काल रिपु सो समय जानि जिय कहि जक्किअै
हत जोग जज्ञ श्रुति भंग दुज सु सरन कोन को तक्किअै
॥ २० ॥

॥ चौबोला ॥

भागे देव सक्ति तजि देवनि भक्ति भाव भहराने
जप तप नेम धर्म व्रत संयम जहाँ तहाँ हहराने
वाह्मन वेद गाइ वध कैं कैं कीन्हों नरक निवासा
कलिजुग जंग जोर सौ जालिम अैसा षूव तमासा
॥ २० ॥

भागे देव त्रास भूतन के मंत्र जंत्र भये झूठे
रहे दिगंत भागि के जब ते स्यार सिंघ पर रूठे
सम्पति सिद्ध वृद्ध सिद्धन कें भागें जात निरासा
जालिम जमन जोर जंगम सौं ठानै षूव तमासा
॥ २१ ॥

भागे देव त्रास भूतन के मंत्र जंत्र भये झूठे
रहे दिगंत भागि के जब ते स्यार सिंघ पर रूठे
सम्पति सिद्ध वृद्ध सिद्धन कें भागें जात निरासा
जालिम जमन जोर जंगम सौं ठानै षूव तमासा
॥ २२ ॥

॥ सवैया ॥

ज्ञान कहै सुनि सुक्कृति यो मत
डारि सवै डर धीरज धारौ
जद्दपि पातक पुंज महा वह
तद्दपि सूर करै उजियारौ
आदि वड़ो सो वड़ोइ वड़ौ अरु
नीच सो नीच निदान विचारौ
आयुध चारि धरे भुज चारि सों
राषि है राषन हार हमारौ
॥ २३ ॥

॥ चौबोला ॥

यह कलिकाल व्याल जग खायो महा विषय विषधारी
जिनको सदा सुधारस रसना ते निर्भय भुव भारी
निशिवासर हरि कथा प्रेम भर भजन ताप परकासा
तिनको त्रास डरत जम जालिम अैसा षूव तमासा
॥ २४ ॥

॥ सवैया ॥

ज्ञान सों ठेरि विवेक कहैं
नर भूले हमै तिहि भूलन दीजैं
जो पन धारि हमारे धरा पर
नारि सहाइ सवै मिलि कीजै
पातक कों प्रभुता जिहि ठौर सो
ठौरन भूल रतीक पतीजै

चाहत हैं हमकूँ नहि काहु कों
काहे को कोउ सुमारग छीजै
॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

सुनि विवेक के वात कौं सभा उठे हरषाइ
कहत भये कारन सवै पंडित श्रुति सुष पाइ ॥ २६ ॥
सत्यसील सुविचार सुनि दयावान गुन रूप
इनको निपट निरास करि कहाँ गये वे भूप ॥ २७ ॥

॥ कवित्त ॥

सत्त विललात है ललात सील दिशा दिन
दूसरो सुकृत होत द्वैज के से चंद है
आरत विचार सुविचार होत चकृत है
गुन विलषात देषि गाहक करंद है
नीति को न नींद निसिवासर गोपाल भनि
कीरति हँसति देषि भूपन को छंद है
प्राची सुष पाइ सुधि आये करे हाइ हाइ
आनन्द को कंद कलि करत निकंद है
॥ २८ ॥

॥ चौबोला ॥

कहाँ दधीचि गये पृथुराजा जिन ये पृथी सँवारे
कहाँ गये हरिचंद क्रूर जे वाजी कबहुन हारे
कहाँ मानधाता है जिनकौ वेनुज जाति वषाने
कहाँ गये लषि षूव तमासा जिन सव षूवी ठानै
॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

सत्रह लच्छ वर्ष कृत जुग के अष्टाइसै हजार
मच्छ कच्छ वाराह भे श्रीनरहरि अवतार
॥ ३० ॥

।। चौबोला ।।

सूरज पर्व सहस्र तीस कहि चंद्र सहस चालीसै
नर नारी ऊँचे सव तामें भये ताल इक्कीसै
आयू वरष कोटि के कहिये महा सत्त अनलेषा
सतजुग सवै साँचु में सव कोई देषै षूव तमासा देषा
।। ३१ ।।

राजा भये सात सतजुग में राजा मीन वषाने
मुंज भोज राजा महि मंडल अंक वली नृप जाने
महिषासुर राजा पुनि कहिये कपिलभद्र पुनि राजा
सुकृत पर्वत भे पुनि राजा धाता भानु सु छाजा
।। ३२ ।।

अैसे राजा सतजुग छाजा महानीति के करता
धरनी पाप होइ नहिं पावै सव कीरत के भरता
जिनके कहत पुरान साषि सव व्यास देव के भाषे
जिनके सुनत श्रवन जस तन के पातक येक न राषै
।। ३३ ।।

।। दोहा ।।

द्वादस लच्छ छियानवे वर्ष सहस्र प्रमान
जेता त्रेता युग भये ता सुनि लेहु पुरान
वावन ह्वै केवल छले परसराम परचंड
रामचंद्र अवतार मनि कलुष करे सत षंड
।। ३४ ।।

।। राम छंद ।।

सुर्ज पर्व सहस्र वारह चंड तीस वषानि
महाराज धुर्माल धरा में राजा अंधक जाने
जगत पाल राजा पुनि जाने रूपवान से राजा
येकादसी महाव्रत धारी देषा षूव लहाजा
।। ३५ ।।

॥ चौबोला ॥

महाराज राजाधिराज रघुराजा धर्म वषाने
महाराज धुर्माल धरा में राजा अंधक जाने
जगत पाल राजा पुनि जाने रूपवान से राजा
येकादसी महाव्रत धारी देषा षूव लहाजा
॥३६ ॥

मंगद राजा धन पुनि वरने राजा अवहिं कहाये
राजा भये विधूम धरनि में श्रीहरि चंद कहाये
राजा रोहितास सव जाने राजा संतन भाषे
तिन सुत के भारथ मैं श्रीपति वजे प्रतिज्ञा राषे
॥ ३७ ॥

राजा धरनि दिलीप धरम के राज विशेष वषाने
विस्वामित्र राज करिवै कौं औने सृष्टि उपाने
राजा अजैपाल महिमंडल राजा दसरथ राजैं
महाराज राजाधिराज श्री रामचंद वर छाजे
॥३८॥

॥ दोहा ॥

वृषभ वली राजा भये राजा कुवलै राज
ये त्रेता राजा भये धर्म करे सिरताज
॥ ३९ ॥

॥ छप्पै ॥

आठ लच्छि चौसठ हजार सव वर्ष वषाने
कृष्ण वौध अवतार विस्व मंगलि मनि जानै
षोडष वर्ष सहस्र होत रवि पर्व धर्म व्रत
चंद सुदी सहश्र ताल सातक के उन्नत
असु सहस्र दस के सुत वसु पुन्य सु विस्वावाद है
वह द्वापर विस्वा आठ ह्वै सुपाप कर्‌यो विस्तार है
॥ ४० ॥

॥ दोहा ॥

तीर्थ नाम कुरु क्षेत्र है राजा सत्रह जानि
द्वापर के कीरति सवै कहै पुरान वषानि
॥ ४१ ॥

॥ चौवोला ॥

राजा सोम सकल जग जानें राजा नरपति पूरे
नृप नल घोष भये अवनी पर अरु मदघोष हु सूरे
राजा मानधाता महिमंडल चित्रांगद से राजा
पंडुराज धृतराष्ट्र वषाने वहै जिनहि के छाजा
॥ ४२ ॥

राजा धर्म युधिष्ठिर गनहू राजा धन से मानी
राजा महावाहु अर्जुन से नृप अभिमन्यु सुज्ञानी
राजा धरनि भये पारिक्षित नृप जन्मेजय जाने
सांतन से राजा जग जाने जिन सव षूवी जाने
॥ ४३ ॥

राजा भये सलिवाहन से घरनी साठ चलाये
राजा महावेनु वसुधा मैं राजधर्म अधिकाये
राजा सवै कहे द्वापर के येक येक पर लेषा
राज धर्म वल राज करै सव षूव तमासा देषा
॥ ४४ ॥

॥ छप्पै ॥

चारि लच्छि वातिस सहस कलि वरष वयानें
सूरज पर्व सहस्र चंद्र द्वे सहसति माने
मानुष अपने हाथ अहुट के सव कोइ देषैं
आयु वर्ष सतविंस सत्य के चले सुलेषें
जहँ तीर्थाणाम् प्रयाग कहि धर्मसु विस्वाचारि हैं
जाके पाप पै विस्वासो ते सुनिश्चित हारि हैं
॥ ४५ ॥

।। दोहा ।।

कलि मैं राजा नौ भये सुनौ तिनहि कै नाम
प्रथम सरिवाहन भये धरनि धर्म के धाम
।। ४६।।

।। चौबोला ।।

राजा भये प्रसस्त धरनि में नृप हरि ब्रह्म कहाये
सुंदर वच्छ राज छिति मंडल नृप हरिचंदहि गाये
राजा वीर साधि भये विक्रम राजा भोज वषाने
आयुषमान भूप भूतल में गोविंद चंदहि जाने
।। ४७ ।।

ये ते राजा भये चारि जुग राजनीति मत मारे
जनके पुण्य पुराननि गाये दान धर्म अधिकारे
केते भये और सव नरपति कहै कौन गुन काके
देषि देषि सव षूव तमासा धरनि चलाये साके
।। ४८ ।।

।। दोहा ।।

पंडित श्रुति इहि विधि सवै वरनि कहे नृपराज
भये कृतारथ भूप ते करि करि धर्म समाज
।। ४९ ।।

कलि की महिमा लेहु सुनि सास्त्र पुरानै भेद
अव यह कलि मह भूप जे होत विदूषक वेद
।। ५० ।।

अवनी करत अतीत ते वाढ़े अमित अधर्म
संक न मानै तनक हूँ ठानत कर्म अकर्म
।। ५१ ।।

।। कवित्त ।।

लीजै लूटि परजा अनाथन कै अकारथ ही
व्राहमन निवेरी दै दै भाकसिन डारिअै

जिनकौ न लोक परलोक कों प्रवाह विन
चोर को रु चौतरे दिवान को जोहारिअै
नीचन सों नेहु नीच लोगन को रीझ टेहु
नीच मति लेहु नीच चरचा विचारिअै
पातक अगाध पुन्य पाये कौन पल आध
विना अपराध साँध वांधि वांधि मारिअै
॥ ५२ ॥

॥ दोहा ॥
जो राजा निजु राज में करत अनीत अकाज
ता राजा के राज मैं प्रगट रहत कलिराज
॥ ५३ ॥

॥ कवित्त ॥
न राजनीति मेटि कै अनीत रीति कीजिअै
विन अपराध दंड साधु को न दाजिअै
न मानिये जु वेद विप्र लूटि मारि लीजिअै
सु मंत्रहीन भूप को न भूलि हू पतीजिअै
॥ ५४ ॥

॥ सवैया ॥
जो वलि राइ उदार भयो तौ
भये हरि के वस वेद वषाने
जो दुरजोधन मान धन्यौ
कुरु नास कर्‌यौ हर भारत ठाने
जे जग कीरति वंत गोपाल
चले तिनके है अनाह कहानै
जानत है नर लोभ भलो वह
काहु को लोभ भलाई न जानै
॥ ५५ ॥

॥ त्रोटक ॥

इहि अंतर पाप महीपतवैं
अपने भट वोलि लये सुसवैं
कहि देस दिगंत हैं पुन्य वली
सजि सैन करौ अव जुद्ध मली ॥ ५६ ॥

॥ दोहा ॥

अपने हू तनि सौ कह्यो कलुषनि कौं सर मौर
अपने हू तनि सौ कह्यो कलुषनि कौं सर मौर ॥ ५७ ॥

॥ नराज ॥

सुवेस देस दीप दीप दूत देषि आवही
अनीति द्रोह दोष दाप भेद सों वतावहीं
जहाँ जहाँ जौन भाँति धर्म कर्म सों कहैं
सुरावरे प्रताप पुण्य दीह दुर्ग में रहे ॥ ५८ ॥

॥ सवैया ॥

दूत विलोकि विलोकि कहे कलि
रावरे पूतन दाह दल्यो है
दूज के चंद सों जद्दपि है जप
कामहि तद्यपि लच्छ लह्यो है
झूठन की गठरी वैठी सर
जीवन किंतु सुधारि सक्यो है
सो नहि काहु को संक करै
सरनागत श्रीपति जी कौ गह्यो है
॥ ५९ ॥

॥ चौबोला ॥

सुनि सुनि प्रबल कोपि कै पातक सुभट संग सस लैके
वढ्यो सुरन रंग जंग कौ चढ्यो नगारा दैके
पसरे वीर धीर है जित कित आप आपने आसा
देष करन कों कहै काम अव देषै षूव तमासा ॥ ६० ॥

॥ त्रोटक ॥

करि कोप उठ्यो अघ मौं कहि कै
अव आजु करौ रन हो सहि कै
वहु भाँति अवै जुटि जंग करौ
अविवेक कै वान निपेट भरो
अव जो वसुधा कोइ दान करै
तिहि कों धनु लालच चिंत धरै
रिस कै सु सुभट टन वागु लियो
अपनो अपनो रथ साजु कियो
ममता गज झुंड अनेग गजैं
पर द्रोह निसान सदीह वजै
विपरीत घने हय पाप वढ़े
तिन धूत वड़े रजपूत चढ़े
मति मूढ़ धनुरधर धावतु है
वकवाद उमेदनि आवतु है
सत मंत्र उचारत भट्टन है
ठहराइ रहे पर पट्टन है
मकरध्वज सों जह सैनपति
जिन ते नर हैं तप येक रती
भट दुज्जन सज्जन गज्जन हैं
निरलज्जन वज्जन वज्जत हैं
वहुधा सु अकीरति फौज ठये
तव कीरति आनंद देषि भये
॥ ६१ ॥

॥ दोहा ॥

कीरति लषि आनन्द भये केतक पाप समाज
कोटि लच्छ गजराज पर ज्यौं येकैं मृगराज ॥ ६२ ॥

॥ कवित्त ॥

सुनि कै सुभट धाये सुकृत महीप जू के
करिकै कवच ज्ञान सैनापति आये हैं
कवतर कुंड राग पप्पर विवेक साजि
गाजि कै नगारा देत समता धसाये हैं
चोषे चोषे षेतसु विचारि के चलत बान
होत घमासान कल कहर मचाये हैं
लालच को पारे कर कोपे कामदेव कर
मारिकै विरह सर फौज विचलाये हैं
॥ ६३ ॥

॥ त्रोटक ॥

लषि सैन महावलि वीर तवै
लये बोलि विवेक सुभट्ट सवै
सजि साज धनुद्धर आवहु रे
गुन ज्ञानहि मारि भगावहु रे
जव सोर भयो चहुँ वोर भलें
चरचा अरचा रथ साजि चलै
सव ज्ञान चमू चतुरंग ठनें
घमसान ते येक तें येक वनें
तन सत्त सनाह अभेद कसे
दिन दान निसान तदीह वजै
समता गज झुंड अनेग गजै
हय हर्ष हजारन मौज नमै
फहराति फिरे रस फौजन मैं
वलवीर वड़े वल तें वल कै
मति मूढ़न कें उर में सलकै
सव ज्ञान विवेकनि मंडित है

अघ षंडित आनन्द पंडित है
तपसी तन जोग सनाह कसे
लषि काम तिन्हें हहराइ हंसे
भट सज्जन सज्जित सील भरै
उपकार दया दल मत्त षरे
मति उत्तम प्रीति पुनीत घने
सजि चारन मारग वंदि जने
दल देषि सुकीरति जोर वढ्यो
तब ज्ञान विवेक के रोस चढ्यो
दुहुंधा दल येक ते येक बड़े
रन मंडन को दुहुंधा उमड़े
दुहुंधा घमसानहि वीर सजे
दुहुंधा घन से सुनि सान वजे
इहि भांति सवै गलगज्जि तकैं
ठहराइ रहै दल सज्जि सजै
॥ ६४ ॥

॥ दोहा ॥
दल सज्जित कै वीर सव महावीर अवगाह = (अथाह)
सटपट मच्यौ अस सेन मैं सुजस सेन उच्चाह
॥ ६५ ॥

॥ छप्पै ॥
इनहि उनहि दुहु ओर साजि सैना ठहराये
दोऊ ओर निसान घोर घन से घहराये
उमड़े वीर मंत्र वान लै तीर तहाँ जुरि
कसम षाइ के लरैं न भागैं कवहुँक मुरि
गोपाल सुकीरति क्षत्रपति सुचह जुग चक्कह अमर
प्रानहि कै परवाह कहु कौनहि करहि समर ॥ ६६॥

॥ दोहा ॥
इहि प्रकार दुहुँ दल वली सजि सैना चतुरंग
चढ़ैं षेत अति रोष ते करत महा रन जंग
॥ ६७ ॥

॥ चौबोला ॥
जुटे येक ते येक समर में टरे न कोऊ टारे
इतै पुण्य दल महा प्रवल उत घातक पातक वारे
छूटै वान राति दिन भोरे घर के धीर मवासा
घट घट में अैसे भट करते कलि में षूव तमासा
॥ ६८ ॥

॥ दोहा ॥
ज्ञान विवेक मुदित हो रचे मंत्र हरषाइ
करिये येक प्रयोग कलि जाते पाप नसाइ
॥६९ ॥

॥ छप्पै ॥
सकल वेद मथि सार मंत्र के वान संधाने
नारायन गोविंद नाम रसना रट ठाने
चक्र धरन नरकारि करन कारन व्रज मंडन
वासुदेव विस्वेस विस्व के आपद षंडन
अद्भुत अनादि आनंद मनि सुमन सुमरि तव सज्जियो
राजत नृसिंह रन सिंध नरसु अद्य गज गज्जित भज्जियो
॥ ७० ॥

॥ कवित्त ॥
ध्यान के धनुष धरि सांधे वाज राम हरि
भरि भरि प्रेम ही के सीस सरसात हैं
गोविंद गुरज कुंत सवहि सकति स्याम
फरसा परस राम देषत सकात हैं

वासुदेव व्रज वलदेव हल मूसल लैं
चक्रपानि चक्र के चलाये वितताये हैं
अच्युत अनंत षग वेलि कै भिरत षेत
षैल भैल पातक दिगंत भागे जात हैं
॥ ७१ ॥

॥ चौवोला ॥

अभय नाम नरसिंघ लेत हि पातक गज भहराने
व्रज धारी कै धरत वज्र पै पर्वत पुंज सकाने
ज्यों सुपर्न त्रासहिं तें पन्नग जित कित ढूंढे वासा
यातें कलि हरि नाम भजन करि देषै षूव तमासा
॥ ७२ ॥

दीन बंधु दामोदर सुंदर हरि गोवर्धन धारी
गोकुल नायक गो सुषदायक गोकुल मंगल कारी
सजल नेन करुनामय के सव करिये कै विसवासा
सावधान हरि नाम भजै तौ देषै षूव तमासा
॥ ७३ ॥

इहि विधि अस्तुति करत पुण्य वहु पाप पुंज वितताने
तपी जपी महि साधु संजमी यहै मंत्र मति ठाने
औरउ पाइ येक नहि कल मैं जोगन ज्ञानहि आसा
अभै येक श्री राम नाम भजि देषै षूव तमासा
॥ ७४ ॥

॥ दोहा ॥

नाम प्रताप प्रकास तें पातक जात दिगंत
दान येक आतम दया भजिवै कौ भगवंत
॥ ७५ ॥

राम नाम से तत्त्व को जिन नहिं पायो भेद
तिनही कों संतत लगै जम के जोर लवेस
॥७६ ॥

॥ सवैया ॥

तीरथ कोंटि कियो न कियो
न दियो न दियो सत गाइ भला को
सीषि सुमंत्र लियो न लियो
न दियो तजि कामिनि काम तलाकों
गंग सुनीर पियो न पियो कहु
कौन कहै गुनि लच्छि कला को
नेकु कियो सु दियों सो लियो
सु हियो हुलस्यो जव राम लला को
॥ ७७ ॥

॥ चौबोला ॥

नौधा भगति नाम नव कानौ भग सारंग प्रभु डारे
विनु अवलम्ब कह्यो किहि भाँतिनि तारहिं पतित विचारे
अैसे निलज लाज नहिं तम को तऊ निकट नहि आयो
तिनकौ षोरि नहीं कछु षलवै आपुहि नरक सिधायो
॥ ७८ ॥

वेद पुरान सुमृत सत मारग पतितन कौं प्रभु कीन्हें
अपने करे जान निस्तारन तऊ न तिनको चीन्हें
अति ही अपत जपत नहिं प्रभु को अंत झूठ पछितैहैं
जव जालिम जम दूत पूत कौ षूव गरदनी दैहैं
॥ ७९ ॥

जैहै अधम कहो करि ऊधम देषि धाम घन फूल्यो
जो साहेव सव दयो सहिबी ता सहिव को भूल्यो
अजहूँ भयो कहा किन चेतै जो कबूल करि आयो
देषि षलक का खूव तमासा सव षूवी विसरायो
॥ ८० ॥

॥ सवैया ॥

आठहु जाम रस्यो रस काम
अकाम कियो सव काम विगार्यो
कूर कुसंगित कै वहु भाँतिन
चातुर ह्वै कहूँ चेतना राष्यो
माति रह्यो धन जोवन के मद
झूठ अनेक अकारथ भाष्यो
पैठि न प्रेम प्रवाह कहू
रसना नहि राम सुधा रस चाष्यो
॥ ८१ ॥

हाँस विलास निवासनि सो रसि
आनंद कंद हिये अधिकारे
भाँति अनेगन भोग करै सुष
सम्पति दम्पति प्रेम सदा रे
अंतर प्रीति प्रतीति प्रतापनि
पावत लोकनि के प्रभु तारे
क्षौल भये विसरे सव देषत
राम सुधा रस चाषन हारे
॥ ८२ ॥

॥ करषा ॥
राम हित राम वित राम पर राषि चित
राम रस गाइ के सुरसना सुधारे
राम करै काम अरु राम धन धाम है
राम अभिराम सो तो सव तें महान रे
राम श्री राम श्री राम हैं सीतापते
राम भजि राम भजि राम भजि प्यारे ॥ ८३ ॥
॥ दोहा ॥
पुन्य चमू वहु भाँति के कीन्हें मंत्र विचारि
मारि दयो पातक दलै भागे भट्ट जुझार ॥ ८४ ॥

॥ चौवोला ॥

सत जुग सवै चलै सत मारग सत मष से करि भारै
त्रेता भये महा तप धारी द्वापर हरि के प्यारे
कलि अधार येकनि ही केवल रामनाम का छाजा
जो निरभै अव भजे राम सों देषै षूव तमासा
॥ ८५ ॥

नाम प्रताप प्रवल सव ही तै त्रिविध ताप तम नासै
लागै तिमिर दिगंत जाइ ज्यौं उपरि पतंग प्रकासै
यातै येक चित्त निहि केवल कलि हरि भजन विसेषे
संतत सकल सिद्धि ते तृभुवन षूव तमासा देषै
॥ ८६ ॥

॥ दोहा ॥

यहि प्रकार सुकृत सवै करि प्रयोग हरि नाम
भहराने पातक लगै सव पूजे मन काम
॥ ८७ ॥

॥ छप्पै ॥

पाप पुण्य संवाद स्वाद रसना नर धारै
निह केवल हरि नाम सुधा मुष वचन उचारै
हित विवेक मन सार ज्ञान करि सुमति उपावै
तृभुवन वंदन होइ दंद कोइ निकट न आवै
सुंदर सुजान समरत्थ सोइ दशरत्थ कुमार हित
पूरन प्रताप प्रति दिन अमित सुहोत सुफल मन काम नित
॥ ८८ ॥

॥ चौवोला ॥

पूरन भगति प्रताप प्रवल ते विघन विमुष है नाहीं
ज्यों पतंग तम भंग करत कर कमल वंद सरसाही
हरल हठी कंठीर वजै से मद गज पुंज विलासा
मंगल महा भागवत भूतल लषते षूव तमासा ॥ ८९ ॥

कलि केवल हरि नाम तरन को नहि अवलम्बन दूजा
भाव भगत ते हिलत मिलत है जोग्य जज्ञ नहिं पूजा
नामदेव रैदास कवीरा साधन घना हुलासा
रंका वंका सैना पीपा देषा षूव तमासा
॥ ९० ॥

रामनाम के वान चलत ही पाप वृंद भहराने
गाजत सिंह जिते कित मानों ते गज गहन पराने
भजन प्रताप भागि दुष दीरघ भ्रमत दिगंत उदासा
कलि आधार भगति निह केवल जिसमें षूव तमासा
॥ ९१ ॥

॥ दोहा ॥
मन औरे मुष और कछु नैननि और षुसाल
नरा नरी में क्यों मिलै नागर नर गोपाल
॥ ९२ ॥

मन औरे मुष और कछु नैननि और षुसाल
नरा नरी में क्यों मिलै नागर नर गोपाल
॥ ९३ ॥

॥ चौवोला ॥
यह कलिकाल व्याल जग षायो महा विषै विषधारी
जिनके सदा सुधारस रसना ते निरभै भुव भारी
निसि वासर हरि कथा प्रेम भरि भजन प्रताप प्रगासा
तिनके त्रास डरत जम जलिम षूव तमासा देषा
॥ ९४ ॥

वरखत सुधा नाम रस रसना रसिक संत सुषदायी
तिनके त्रास डरत त्रैतापक जिनतै जगत भलाई
देत सदा उपदेस सवन कौ हित हरि नाम विलासा
मंगल सदा विस्वहित प्रगटे दिन दिन षूव तमासा
॥ ९५ ॥

॥ दोहा ॥

जिनके रसना देहरी दीपक गुरुवर नाम
तिनके रहत प्रकास नित आगन भीतर धाम
॥ ९६ ॥

॥ चौवोला ॥

जे नर महा विषय रस भूले मन मन फूले डोलै
भाव न भगति प्रेम के द्रोही द्रोह कथा मुष बोलै
महा कठोर काठ पाहन तै स्वारथ भोग विलासा
निहचै नरकवास तिनहिन को अैसा षूव तमसा
॥ ९७ ॥

॥ दोहा ॥

जिह केवल करतार सो ह्वै रहते कलि माह
सहिव के दरवार मैं ज्यौं न गहै कोइ वाह ॥ ९८ ॥

॥ सोरठा ॥

रमा रमन अभिराम रसना राम रमाइये
काम वाम सुष धाम करे भोग कछु पाप नहिं ॥ ९९ ॥

॥ चौवोला ॥

इहि विधि पाप पुण्य निरवारा प्रगट करै महि माही
चानक लगै कवहु जो काहू कहू कछु भै नाहीं
वेद पुरान ज्ञान मथि काढ़े करी सुकृत की आसा
षूव षूव नर परै ष्याल तौ देषै षूव तमासा
॥ १०० ॥

वाहै धर्म राज रजधानी राजनीति मति भारी
कीरति दान कृपाल पैजपन सुष सम्पति अधिकारी
आनंद मोद विनोद दिनहि दिन सकल वृद्धि की छाजा
सकल प्रतापवान महि मंडल राजसिंघ श्री राजा
॥ १०१ ॥

।। इति श्री हैहय कुल कमल प्रताप भास्कर प्रताप राजा राजसिंघ चूड़ामणि चानक गोपाल विरचिते पुण्य शतकं समाप्तम् ।।

७

राज शतक का प्रतिपाद्य

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि कवि गोपाल ने अपने आश्रय-दाता राजा राजसिंह की इच्छा का पालन करते हुए यह ग्रंथ 'खूबतमाशा' लिखा है।कथित राजा के आश्रय में रहते हुए भी उन्होंने राजा के गुणों व दुर्गुणों का निर्भीकता पूर्वक उल्लेख किया है। किंतु,राज शतक में तो धर्म और सदाचार की प्रशंसा करते हुए इस कसौटी पर राजाओं को मानो आईना ही दिखाया है। वांछनीयसामान्य आचरणों की उन्होंने खुलकर प्रशंसा की है। कवि का वर्ण्य केवल राजाओं का स्वभाव व आचरण है। कवि का वर्ण्य केवल राजा की अच्छाइयाँ ही नहीं,उसके दुर्गुण भी कवि की दृष्टि से ओझल हीं हुए हैं। राजा के साथ प्रजा भी कवि की समीक्षा का विषय बना है। इस ग्रंथ में कवि की दृष्टि अन्य प्रदेश व नगरों की ओर भी गयी है। इस ग्रंथ में जम्बूदीप, काश्मीर, लाहौर, खुरासान, कांधार, जैसे मुगल राज्यों का उल्लेख मिलता है। इसी संदर्भ में कवि ने अपने आश्रयदाता राजा राजसिंह के रत्नपुर राज्य का भी उल्लेख किया है। तीर्थ-स्थलों में बद्रीनाथ अयोध्या आदि के नाम उपलब्ध होते हैं। दक्षिणी राज्यों का विवरण देना भी कवि नहीं भूला है। नासिक, गंगा, सिंधु, कावेरी, गोदावरी, अलकनन्दा आदि पवित्र नदियों के उल्लेख हैं। तीर्थों में जगन्नाथ, का उल्लेख है। तत्कालीन काशी,चित्रकूट,अमरकंटक, मेकल, राजीवलोचन, नैपाल, आदि का नामोल्लेख कर कवि ने अपने भूगोल-ज्ञान का विस्तृत परिचय दिया है।

७

राज शतकम्

जै जै वृज सुंदर घृत कर मंदर मान पुरंदर मद दरणम्
कंसादिक तारन भवभय हारन विघन विदारन अघ हरणम्
जदु कुल वर नायक सव सुष दायक सव लायक कारन करणम्
नव वारिद वरनं धरनि उधारन तव चरनं असरन सरनम्
॥ १ ॥

॥ चौबोला ॥
वरनत राज राज राजन कौ राजसिंघ मन भाये
जम्बू दीप समुंद वार भरि जितने देस सुहाये
कहत जथा मति भेव प्रगटि कै जिहि विधि जौन विलासा
सावधान होइ सुनहु सभा सव जितने षूब तमासा
॥ २ ॥

॥ दोहा ॥
आदि राज राजनि में हैहव राज महीप
येक येक ते आगरे उद्दित जम्बू दीप
॥ ३ ॥
धर्म धीरता विनयता सत्य सील आचार
चरचा अरचा जग्य विधि विद्या वेद विचार
॥ ४ ॥
तीरथ जिनके राज्य मैं राजित राजिव नैन
सँवरी नारायन जहाँ सुर नर कौं सुष दैन
॥ ५ ॥

॥ छप्पै ॥

पापहरन नरसिंह हरत सव पाप नरक के
सुंदर गिरि सवरीस करे सुर सेव चरन के
राजै रजिव नैन नैन देषत ही रहियो
वेलपान सिव सदन नर्मदा सदा सु लहियो
अति विचित्र चित्रोत्पला करि सुरसरि केवल अमल
इमि राजसिंघ नृप राज्य मह सुजुग जुग विष्णु विलास पल
॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥
वत्तिस गढ़ गाढ़े जहाँ वड़े गठोई जानि
सेवा स्वामित कों रहे सवै अैड को ठानि
॥ ७ ॥

॥ चौवोला ॥
आसपास के वड़े देस पति देत करार सदाही
पटना पति वल्लूर आदि दै साजि अनेक सजाही
जिनके भुजवल महा भार ते रहत भरोसे राजा
महाराज राजाधिराज मन राज रतनपुर छाजा
॥ ८ ॥

वरनत सकल राज श्री भूतल वड़े भूप भुव जेते
दिक्षरीत षत आदि के माने कहे कहूँ लौं केते
अपने ठौर वड़े सव राजा करे राज मन भाये
जहाँ तहाँ सालिम राजा के षूव तमासा छाये
॥ ९ ॥

राजा राइ वड़े उमराइन नाक चना विनवाये
मारि गनीमत जेरदस्त करि हिंदू तुरक कहाये
दिक्षिनि तषत वषत वल वैठा किया मौज वहुतेरा
अव औरंग रंग ऊपर दच्छिन जब तब देत घमेरा
॥ १० ॥

जो रन गहन दहन जिमि पावक गरुड़ उरग परमानो
दानव दल पर महा प्रवलता चक्र सुदर्सन जानौं
अंधकार पर मारतंड ज्यौं गज ऊपर हरि सत्ता
यो वरगीन करे छय दच्छिन औरंग साहि चकत्ता
॥ ११ ॥

गाठे गठन ठाहि साहिव कै मगज साफ करि डारे
पकरे वंदि मवास अैंड पर वड़े जालिमी मारे
जोर अराविन जवर कूदि दल घने उड़ाये छाजा
पात साहि औरंगजेव अव दच्छिन लेत लहाजा
॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

राजत जम्बूदीप पर दिल्ली तषत सुवेस
चढ़े साहि कै दफ्तरै सोई देस नरेस ॥ १३ ॥

॥ चौवोला ॥

औरंगसाहि चकत्ता अैसा जालिम टोपीवाला
रागरंग नट नटी चेंटिकी करे दूरि मतवाला
यो सतभाग जुवा कुफ राजा कीन्हें दूरि दिवाले
अजमतिदार अजव है सवसों लेत लहाजा लाले
॥ १४ ॥

तिनके करे देस पति राजा आदि आदि चलि आये
पंडव राज कहे हथिनापुर अजहूँ तषत सुहाये
अैंडदार तिनहू के केते कूटे कटक मवासा
साहेव का कुछ अजव षेल है जिसमें षूव तमासा
॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

राज राज राजा वड़े यह जानै सव कोइ
दीरघ तैं लघु होत हैं लघु ते दीरघ होइ ॥ १६ ॥

॥ चौवोला ॥

परजा कैं अमनैक गोउ प्रति वसे छतीसो जातें
परजा देहि सदा साहेव को अमनै को सम यातें
कोई जाति चालि अपनै तै वढ़त वढ़त वढ़ि जाहीं
सो पुनि पांच पचास गाउ के ठाकुर येक कहाहीं
॥ १७ ॥

ठाकुर पाँच पचास ठीक तें ·वड़े वड़े उमरावे
ते उमराउ पचास पाँच तें राजा येक कहावे
राजा पाँच पचासक ऊपर वड़े येक नो छाजा
सो देषै सव षूव तमासा ते राजन पर राजा
॥ १८ ॥

महाराज राजाधिराज सो राज काज में जाने
पाठक पुरान पुनीत वंस पति दिल्ली पति जो माने
प्रबल प्रतापवान सो राजा राजसिंघ हम देषा
सोई अटल देस पति राजा ने राजन मे लेषा
॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

राजा जम्बूदीप के जितने देसनि माह
सवके भगति प्रताप से रघुवर वनते छाँह ॥ २० ॥

॥ चौवोला ॥

कासमीर लाहौर मुलुक मुलतान सुलुक जें कहतें
षुरासान षंधार वीच जें मुगल काविली रहतें
ठट्ठर भकुवर रूम साम जे वस्त थोरही लीजै
ते वसतें सव राज राज में कहैं अमोलक चीजै
॥ २१ ॥

अटकवार अनुपार वसत जें वंग सवल कवि हारे
देस रीति नहिं सवै यैक से भाषा भेस निहारै

मारवाड़ मानू हाडौ ती वागड़ अरु में वाड़ै
सोरठि अति गुजरात सुंदरी देषि रसिक को छाँड़ै
॥ २२ ॥

देस ढुंठार मालवा सम्भरि गुन ग्वारे सिर दाहैं
दिल्ली आस पास के देसनि रहते सूर सिपाहैं
सहर आगरा या महि मथुरा व्रज मंडल थल कहिये
परम पुण्य ते वन उपवन के वेलि वृच्छ ह्वै रहिये
॥ २३ ॥

कासी सरस प्रयाग पुन्य थल वाधौ देस विमोहैं
देस रतनपुर राजसिंघ कौ सहर राजपुर (रायपुर) सोहैं
धरम करम कुल सरम सिंधु सम देत दान अनलेषा
तषत सिंह कौ वषत वली नृप षूव तमासा देषा
॥ २४ ॥

उत्तर सवा लाष परवत में वद्रीनाथ विराजें
चार्यों तरफ वरफ सव वरसे गांगी गहिरी गाजें
षसिया वसे निपट षोहनि में सीरि नगर में राजा
कुल्लू भोट देस के वासी चहै आपने छाजा
॥ २५ ॥

हषीकेस हरि द्वार औ गया अवध भयो रघुवर को
क्षोठे वड़े राज प्रति राजा करै भगति हर हर को
रंगा माटी राजमहल लौं वरद वान छवि छाला
नवो लाष भरि देत काँवरू वसत गौड़ वंगाला
॥ २६ ॥

पूरन ब्रह्म प्रगट भये भूतल नील सिषर गिरिवासी
बौद्ध रूप अवतार प्रगट कलि भये अजर अविनासी
हिंदू तुरक सवै इक कीन्हा अैसा अदल चलाया
हाथन थाप समाय काठ में अैसा रूप बनाया
॥ २७ ॥

उत्कल देत नरेस जगत पति देस देस में जाना
वैठक कटक कोटि मैं अव है दिल्लीपति का थाना
भाषा वरन भेष कछु औरै वोडिया भये मवासे
मुलुक कलिंग वसत करनाटक करते षूव तमासे
॥ २८ ॥

दषिन भाग नगर बीजापुर वड़े तषत पति राजैं
रंगराइ श्रीराम नाथ जहँ सेत बंध छवि छाजैं
वारह वसत मलार वंदरनि वड़े जहाजै आवैं
दीप दीप के वड़े पदारथ देसन देस विकावै ॥ २९ ॥
वेदरु विद्या नगर आदि जे वसै देस बहुतेरे
द्वारामती सकल सुषदायक तरते पतित घनेरे
कावा निकट टिके नहिं पारथ सव गोपी जिन लूटे
वड़े मवासी उमरावन के घने कटक जिन कूटे
॥ ३० ॥

देस वुंदेल और वगुलना मरहठ चांदा कहिये
देव गढ़ा ते सव सुष सवको अवनतहा दुःष लहिये
केते देस वसै वसुधा पर जम्बूदीप मझारे
षलक मुलुक का षूव तमासा भाषा भेष नियारे
॥ ३१ क ॥

॥ दोहा ॥
वावन गढ़ सालिम महा राज धर्म नृप धीर
तीरथ यग्य विलास सवहु है रेवा तीरन तीर ॥ ३१ ख ॥
॥ चौबोला ॥
माकल (श्रेष्ठ) देस उजैन भेलसा सहर सिरोज सराहे
कहे देस पंजाव आदि दै अरु चित्तौर सिपाहे
दच्छिन प्रवल दच्छिनी जालिम नहि काहू को मानै
लूटे घने मुलुक वसुधा के अैड साहि सों ठाने
॥ ३२ ॥

देस देस के वेस वषाने जथा सुमति उनमानै
सव तें सदा कलपतरु हमको राजसिंघ के वानै
जिनके देस सुधामय सवको करि सहिव की आसा
षूवी करै षलक मै अच्छा देषै षूव तमासा
॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

महिमंडल के देस सव वरने सवकी रीति
अव वरनौ तीरथ सवै राजसिंघ के प्रीति
॥ ३४ ॥

॥ चौवोला ॥

गंगा सिंधु गिरा कालिंदी कावेरी अघ हरनी
गोदावरी अलकनंदा कहि विदित वेदिका वरनी
सरजू सरस वेतवे रेवा क्षिप्र चाल जे कहिअै
गंडक सुता गोमती पुष्कर वड़े पुण्य ते लहिये
॥ ३५ ॥

जै जै जै श्री जगन्नाथ प्रभु नील सिषर सुषकारी
निहि केवल नारायन कलि मै वौध नूप अवतारी
सुंदर स्याम कलेवर अद्भूत भुज विसाल परगासा
दीरघ पुंडरीक नैननि तै देषै षूव तमासा
॥ ३६ ॥

जाति पाँति कुलधर्म मेटि सव सकल मर्म भय हरता
महा प्रसाद प्रगट निस्तारन जीवन मुक्ति प्रदाता
मारग सुभग भगति नवधा रचि हरि भगतन कै छाजा
महिमा महा उदधि के तट मैं देषै खूव लहाजा
॥ ३७ ॥

॥ दोहा ॥

महिमा महा प्रसाद के केवल भक्ति अनन्य
महिमा महा प्रसाद के केवल भक्ति अनन्य ॥ ३८ ॥

केवल ब्रह्मा विष्णु सिव धरे कलेवर तीनि
विस्तारे निजु भक्ति है कलि निस्तारन दीन ॥ ३९ ॥

॥ सवैया ॥

जानत वेदन भेद रती भरि
ऐसे अगोचर ठाठ ठये हैं
चारिहु जाति सुजाति कुला तिन
आपने जाति मिलाइ लये हैं
को वरनै प्रभु की रचना रचि
आपु सवै मुष मौन भये हैं
हाँथ हजार दुराइ कितो कलि
टूटन कारन टूट गये हैं
॥ ४० ॥

॥ कवित्त ॥

षैवे को वड़ेई क्यों हु ओदर भरत नाहिं
भरतु कहाते सव भुवन विलासी हैं
देषिये को टूटे कौर लीवे को हजार वाहु
चाहि कै चकित भइ कमला सी दासी हैं
वरन विवेक अविवेक हू को येक करि
करत कहाते गति मुकुति निवासी हैं
आवत है हाँसी जाके थान कोटि कासी ऐसो
नीलगिरि वासी अविनासी रूप रासी हैं
॥ ४१ ॥

॥ चौवोला ॥

तीरथ देव देवाले देवी देस देस मैं छाजे
चरिहुँ दिसा महा महिमा सों राज राज में राजे
क्षाप द्वारिका नाथ मनोहर संष उधार निवासा
लूटि लेत उमरावनहूँ कर कावा षूव तमासा ॥ ४२ ॥
(कावा=परिक्रमा) (छाप= दगवाना)

दस अवतार मुद्रिका सीता समया पट्टन कहिये
रूप चतुर्भुज राइ विराजे चरन पुन्य ते लहिये
धन्य सुराज जहाँ हरि तीरथ धन्य सुराजा लेषे
षूवी करै षलक मैं अच्छा षूव तमासा देषै
॥ ४३ ॥

हिंगु राज कैदार विराजे मुकुति क्षेत्र महि छाजे
हृषीकेस हरिद्वार सुरमयी सुफल नरन के काजे
पुष्कर पुन्य निवास प्रगट ही पाप नरन के भागे
ज्वालामुषी जटाशंकर है बैजनाथ हर आपै
॥ ४४ ॥

ज्वालामुषी जटाशंकर है बैजनाथ हर आपै
कासीपुरी पुण्य ते पूरन जहाँ जात जम काँपे
चित्रकूट औ अमरकंटकै तीरथ मेकल नन्दा
राजिव नैन हमारे साहव ज्यौं तारिन मैं चंदा ॥ ४५ ॥

गो समाधि गोकर्ण विराजे पंछी तीरथ वरने
पद्मनाभ श्री रंग जनार्दन पाप वृंद भय हरने
गोदावरी अलकनंदा अरु पुन्य क्षेत्र छवि छाजे
सेस चाल पर षूव तमासा लछिमन जती विराजे
॥ ४६ ॥

नीलकंठ नैपाल वषाने जोति लिंग श्री हर के
धुस्मेर ईस्वर भुवनेश्वर जे हरत पाप सव नर के
सिद्धेस्वर कैलास विलासी रामेस्वर अविनासी
तीरथराज प्रयाग तृवेनी विस्वनाथ श्री कासी
॥ ४७ ॥

धर्मक्षेत्र कुरु क्षेत्र क्षेत्रपति क्षिति मंडल अघहारी
राम क्षेत्र भृगु क्षेत्र वषाने आदि कूर्म अवतारी
क्षेत्र वराह क्षेत्र पुरसोत्तम पूरन पुन्य विलासा
सकल क्षेत्र जिन चरन कमल तर जिनके षूवतमासा ॥ ४८ ॥

॥ दोहा ॥

पुन्य क्षेत्र वरने सवै जथा सुमति गोपाल
सदा प्रीति हर सो वढ़ै उपजत कथा रसाल
॥ ४९ ॥

सिद्धि साधु मुनि देव गण तीरथ प्रति नित प्रात
अर्चन वंदन विधि करे जप तप तें सरसात
॥ ५० ॥

॥ सवैया ॥

लाल हरे नित नील सिला
चहुँ ओर मनोहरता छवि छाजै
कंचन मीन सरोज मराल
सुधा जल केलि कुतूहल साजे
सिद्धि समाधि धरे जितही कित
देव वधू जुत देव समाजे
आनंद मोद विनोद भरे
सव सुंदर मानसरोवर राजे
॥ ५१ ॥

॥ दोहा ॥

वरने देस सुवेस बहु तीरथ कहै प्रमान
पुन्य वढ़ै पातक घटै कीन्हें हरि कै ध्यान
॥ ५२ ॥

॥ चौबोला ॥

दीप दीप कै वड़े पदारथ पातसाहि सुनि ललकै
उनहूँ को वैं वड़े अमोलक मोल लेन कों वलकै
डरै अस्त लौं करै साहिवी तऊ लालची भारे
तिनहू की नहिं मिटी कलपना राजा कहा विचारे
॥ ५३ ॥

जौन वस्तु जाके घर नाहीं तौन वस्तु सो चाहै
वहै वस्तु को वड़े वड़े सव दै दै मोल विसाहै
आवत जे अति वड़े दूरि ते तेई वड़े कहावै
निकट वड़े जे रहै वस्तु ते ससते मोल विकावै
॥ ५४ ॥

परवत राज चौर कस्तूरी षसियन के बहुतेरे
ते यह ठौर अमोल सवन कौ चढ़ते मोल घनेरे
जे लोहा घोरा अरु कपरा दिल्लीपति को जाते
ते वस्तन को देस देस के राजा घने ललाते
॥ ५५ ॥

जे षंधार वलक काविल ते घोरे लेहि षदाई
ज्यौं ज्यौं दूरि देस लै चढ़िते चढ़ै मोल अधिकाई
जौन ठौर में होत जौन कछु तौन ठौर सो हरुवौ
और ठौर कौ वड़ो औगुनी और ठौर को गरुओ
॥ ५६ ॥

(औगुनी = अवगुनी)

जे मोती मोती पट्टन में टकै चौकरी आये
ते मोती इस ठौर पहुँच के सौ के मोल विकाये
जे सेवा के नहिं काविल हैं ते गदहे मुरझाते
जे सेवा काविल के गदहे षुरनि षुंदि हरषाते
॥ ५७ ॥

॥ दोहा ॥

राज वरन राजा कहे तीरथ सकल जहान
अव सुमेर धरनी कहौ कच्छप सेष विधान
॥ ५८ ॥

रचना अद्भुत हरि रचै तीनि लोक जुग चारि
अपने अपने हद रहै सवै कौन को टारि
॥ ५९ ॥

॥ चौबोला ॥

आदि विष्णु के नाभि कमल ते जनम विरंची पाये
ढूँढत लच्छ लच्छ जुग वीते तप करि ध्यान लगाये
ज्ञानरु भक्तिन आयस पावन करे सृष्टि परगासा
धरनि अकास देव रचि दानव करते षूव तमासा
॥ ६० ॥

क्षिति जल पावक गगन समीर ते लोकनि ब्रह्म बनाये
पाँच तत्त्व मिलि मूल जीव जग हद वेहद उपजाये
सकल भुवन रचि देव दानवन मानव मनु परगासा
सागर सैल जोनि सव जितने वरने षूव तमासा
॥ ६१ ॥

है उनचास कोटि जोजन तै महि मंडल परवाने
ताके मध्य सुमेरु कनक को वरनै वेद पुराने
लषि चैरासी जोजन ऊँचो पर्वत महि ते कहिये
तेरह लच्छ गड्यो अध जोजन षूव तमासा लहिये
॥ ६२ ॥

॥ दोहा ॥

जोजन वीस हजार को है ऊपर विस्तार
अष्ट श्रृंग ताके कहे देवन को विस्तार
॥ ६३ ॥

॥ चौबोला ॥

हेमवंत नीलाचल कहियै मालिवंत है श्रृंगै
मर्दन उच्च भंग मर्दन ज्यौं कंज अग्र पर भृंगै
महा श्रृंग अरु सलिल श्रृंग है धारा धरस विलासा
नृत्य गीत गुन ग्यान ध्यान ते उपजै षूव तमासा
॥ ६४ ॥

लच्छ लच्छ जोजन के अंतर इक इक श्रृंग वषाने
मन मरकत मैं जोति जगति है सवदि मान के थाने

सिद्ध साधु गंधर्व देव मुनि प्रगटे विविध विलासा
नृत्य गीत गुन ग्यान ध्यान ते उपजै षूब तमासा
॥ ६५ ॥

॥ दोहा ॥
दच्छिन दिसा सुमेर के जम्बू वृच्छ विसाल
कुंजर लक्षि प्रमान फल सरसत महा रसाल
॥ ६६ ॥

व्रह्म जम्बु फल रसनि तै वहै नदी अवगाह
मानसरोवर सो लष्यो जिनके नीर प्रवाह
॥ ६७ ॥

जे जम्बू रस परसते जम्बू नद सव होइ
ताते जम्बू दीप यह कहत अहै सव कोइ
॥ ६८ ॥

॥ चौबोला ॥
महि मंडल नव षंड वषाने षंड इल्व वृच्छ कौ जानौ
रम्य हिरण्य कुरंच भद्र कहि केतु माल परिमानो
जम्बू षंड स्वस्त पुनि कहिऔ भर्थ षंड सविलासा
ऐनव षंड मेदिनी माही उपजै षूव तमासा
॥ ६९ ॥

॥ दोहा ॥
सात दीप तिनमें कहे कहत नाम गोपाल
सुनत श्रवन सानंद मति राजसिंघ भुवपाल
॥ ७० ॥

॥ चौबोला ॥
प्रगट दीप सव लक्षि वखाने दीप कुरंच प्रमाने
पुहक रसाल मली जम्बू अरु धान्य सुदीप वषाने
सिंघल दीप पद्मनी उपजै विलसै रसिक विलासा
॥ ७१ ॥

॥ दोहा ॥

वसुधा सात समुंद्र है जाहर तिनके नाम
वरनत उक्त विसेष ते वाल बोध के काम ॥ ७२ ॥

॥ चौबोला ॥

सात समुद्र क्षीर पुनि कहिये दधि समुद्र मधु भाये
रूप समुंद और इष जानौ स्वैत समुद्र सुहाये
सेस नाग पर जंग सैन जह श्रीपति करे विलासा
उठत अनेग तरंग तुंग लौ लागे षूव तमासा
॥ ७३ ॥

॥ दोहा ॥

पृथवी कूरम पृष्टि पीठ पर तापर सव संसार
ता कूरम के जानिये अद्भूत रूप अपार
॥ ७४ ॥

॥ छप्पै ॥

जो जनमें है कोंटि पचास पृष्टि कूरम के जानों
जोजन कोटि कसीस नेन श्रुति लच्छ वषानों
जोजन लच्छ प्रमान वदन विस्तार सुहाये
चारि चारि पुनि लच्छ चरन के वरन महाये
दस सुकोटि नष प्रवल गुनि सुकुनिन जाति निज भेव मति
तन वल प्रमान कहत न वने सु अद्भुत रूप अपार अति
॥ ७५ ॥

॥ दोहा ॥

वैठे पृथिवी दावि कैं दिग्गज वड़े वनाइ
हल चल मे कहु मेदिनी औचक कुलहि न जाइ
॥ ७६ ॥

॥ चौबोला ॥

जोजन कोंटिन हत अष्टादस इक इक दिग्गज भारे
लाष लाष जोजन के ऊँचे सुंड लाष इक सारे

जोजन तीस हजार दंत तिन महाप्रवल परगासा
पुंडरीक अरु सुप्रतीक गज तिनके षूव तमासा
|| ७७ ||

सेसनाग कूरम पर राजे फन सहस्र तिनकेरे
नैन सहस दोई तिन दीरघ जात रूप नहिं हेरे
पंद्रह कोटिक हत जोजन है इक इक फन परगासा
तिन सिर पर वाराह रूप हरि देषै षूव तमासा
|| ७८ ||

महावली वाराह डाढ पर सोहति धरनी कैसे
कोदव छीट समान गजन के धवल दंत पर जैसे
दावे धरा पहार अष्ट हैं सो न परै कछु वरनी
जाहर षूव तमासा देषैं उलटि जाइ जै धरनी
|| ७९ ||

रतनाचल विंध्याचल जानै उदयाचल अति राजैं
मलयाचल डोनाचल सुनिये धवलाचल से छाजैं
महा अचल अस्ताचल पर्वत कहि न जात तिन छाजा
अैसा षूव तमासा सुनिये राजसिंघ श्री राजा
|| ८० ||

|| दोहा ||
चारि पुरी सुम्मेर पर सुवस वसे सुर देव
अव तिनको परमित कहो सुनो सभा सव भेव ||८१||
|| चौवोला ||
चतुरविंस जोजन है सहसौं पूरव दिसा सुहायो
अमरावती पुरी अमरन की पदवी इंद्र कहायो
पूरन सकल प्रताप सिद्धि सुष सुर समाज सविलासा
सची आदि सव लसें सुंदरी देषै षूव तमासा
|| ८२ ||

जोजन तीस सहस्र दच्छिने वसै जमपुरी भारी
जम राजा तह राज करत हैं जो चौदह अधिकारी
विंधाचल जम कूर जानिये नील सोम से जानो
महाधर्म जम मृत्यु अंध जम कुंठ निघोष वषानो
॥ ८३ ॥

परम वृकोदर काल कंध जम महनीति के करता
चित्रगुपित्र कागदी तिनको सव लेषा के भरता
सरजन प्रलय गनत जीवन के करनी करम दिलासा
पापिन षूव गरदनी देते अैसा षूव तमासा
॥ ८४ ॥

जोजन सहस पचास पश्चिमें वरुनावली वषाने
गाजा वरुन राज तह राजे विलसत सकल विधाने
सकल प्रताप पुण्य वल पूरन विलसत सकल विलासा
अपने ठौर आप सव भारी अैसा षूव तमासा
॥ ८५ ॥

॥ दोहा ॥

जोजन सोरह सहस भरि उत्तर दिसा सुमेर
राजत राज समाज सों अलिकापुरी कुवेर
॥ ८६ ॥

॥ चौबोला ॥

येहि विधि अद्भुत चरित वषाने वेद पुराननि माही
रचना रच्यो अजब साहिव सो पालक विस्व सदा ही
तीनि लोक लीला को वरने विलसत सकल विलासा
सव में रहै सवहिं सों न्यारा जिसका षूव तमासा
॥ ८७ ॥

॥ दोहा ॥

अद्भुत रचना हरि रचे जिसमें षेल अपार
करम कमाई आपनो करत भोग संसार ॥८८॥

उतपति परले होत है जुग जुग जीवन हान
अजर अमर सोई सदा जिनके पूरन ज्ञान
(पूरन ज्ञान = आत्मज्ञान) ॥ ८९ ॥

॥ चौबोला ॥

आठ पद्म तैंतालिस नीलै चौसठ वर्ष वषानों
उनचालिसै अर्ब पुनि कहिअै कोटि सतावन जानौं
पाँचै लाष पाँच सौ जोजन अंतर धरत अकासा
जोति सरूप ब्रह्म तिन ऊपर अैसा षूव तमासा
॥ ९० ॥

येक लच्छि जोजन पुहमी ते भानु लोक छवि छाजै
जोजन सहस अठासी विस्तर सूरवीर थल राजै
चंद्र लोक तिहि ऊपर कहिये येक लच्छि भरि लेषा
चंद्र लोक ते येक लच्छि भरि मंगल लोक विसेषा
॥ ९१ ॥

॥ दोहा ॥

जोजन कहि संता वने विस्तर मंगल लोक
लच्छ येक तापर कहै वुध जन व्यध के ओक
॥ ९२ ॥

विस्तर जोजन तीस भरि वुध के लोक वषानि
तारा मारग यो लसै वरनत नेति वषान
॥ ९३ ॥

॥ चौबोला ॥

वुद्धलोक ते येक लच्छ भरि लोक वृहस्पति छाजे
विस्तर येक लछछ सह जोजन जगमग रूप विराजे
तापर लच्छ येक जोजन पर सुक्र लोक परगसा
विस्तर सहस कहत अष्टादस अैसा षूव तमासा
॥ ९४ ॥

तापर लच्छ येक सनि मंडल अष्ट लाष विस्तारा
तापर राहु लोक पुनि लच्छक असी लच्छ भरि सारा
तापर महा सुन्य पुनि कहिये सात रिषिन के वासा
तीनि लच्छ भरि जोजन विस्तर अैसा षूव तमासा
॥ ९५ ॥

तृविध पुन्य ता उपर जानों कोटि लच्छ विस्तारा
तापर आदि विष्णु विस्तर तें जगमग जोति उज्यारा
पुरुष अषंड अनादि अगोचर परम तत्त्व परगासा
वेद विरंचि भेद नहि पावे जिनका षूव तमासा
॥ ९६ ॥

राति न द्योस चंद नहि सूरज उवै न एको तारा
जहाँ न दूजो रूप देषिअै येके रूप उज्यारा
वरसै रिमिझिमि अमी मेह ते अनहद वाजा वाजै
जीवन मुक्ति फलै अंत मैं शेष नहीं कछु काजै
॥ ९७ ॥

इह विधि सकल राज श्री रचना तृभुवन वरनि वषाने
जथा सुमति गोपाल सुकवि नृप राजसिंघ हित ठाने
वाढ़ै पुन्य पाप सुनि नासै वहु इतिहास विलासा
आगम निगम भेद सव भाषे जितने षूव तमासा
॥ ९८ ॥

॥ दोहा ॥
राजन वाढे राज श्री राजधर्म सुनि हेत
राजन के रचना कहे कारन सुमति समेत ॥ ९९ ॥
राजसिंघ नृपराज कौं संतत राम कृपाल
पूरन सकल प्रताप वसु कहे वरनि गोपाल ॥ १०० ॥
वरनि कहे तिह लोक मति तीरथ राज समेत
अव वरनत श्रृंगार रस रसिक कृष्ण निजु हेत ॥ १०१ ॥

।। इति श्री हैहय कुल कमल प्रकास भास्कर प्रताप
राजा राजसिंघ चूड़ामणि चानक गोपाल विरचितं
राजसतकं समाप्तम् । अथ श्रृंगार शतकम् ।।

क्रमशः

८

श्रृंगार शतक का प्रतिपाद्य

इस शतक में कवि गोपाल मिश्र ने अपना साहित्य-ज्ञान उंडेल दिया है। 'श्रृंगार' का साहित्य के अंतर्गत नवरसों में प्रथम स्थान है। साहित्य के आचार्यों ने श्रृंगार रस को नव रसों में 'रसराज' की उपाधि दी है। भरत मुनि का कथन है कि संसार में जो कुछ पवित्र, उज्ज्वल एवं दर्शनीय है, वह 'श्रृंगार' के भीतर परिगण्य है। केशव ने नवरसों में 'श्रृंगार' को नायक कहा है। इस तरह, साहित्य के नव रसों में कतिपय विद्वान ने श्रृंगार को 'रसराज' कहा है, जबकि साहित्यदर्पणकार करुण रस को रसराज कहते हैं- 'करुण एव रसः' । अस्तु, श्रृंगर रस के विषय में हम साहित्यिक मान्यताओं को छोड़ कवि गोपाल मिश्र के श्रृंगार चित्रण पर आते हैं। कवि ने श्री कृष्ण को रसिकराज कहा है। कवि ने नायिका-भेद का विशद वर्णन किया है। श्रृंगार रस के परिप्रेक्ष्य में कवि ने नायिका के विविध भेदोपभेदों का विस्तृत वर्णन किया है। उनके कतिपय नाम प्रस्तुत हैं- पद्मिनी, हस्तिनी, चित्रणी, संखनी। भेद सोदाहरण बताये हैं। एक दृष्टि से- मुग्धा, मध्या, प्रौढ़ा, स्वकीया, अधीरा, धीराधीरा, सुरतांत, परकीया आदि भेद सविस्तार तथा सोदाहरण प्रस्तुत किये गये हैं। इस तरह, कवि अपने वर्ण्य में सीमित रहते हुए सम्पूर्ण श्रृंगार शतक का मनोरम वर्णन किया है। यह उल्लेखनीय है कि कवि गोपाल मिश्र ने इस विशुद्ध साहित्यिक विषय में भी अपनी दक्षता का अच्छा परिचय दिया है।

क्रमशः

८

श्रृंगार शतकम्

॥ अरिल्ल ॥

जै वृज सुंदर स्याम महा अभिराम है
काम विलास विमोहित गोकुल वाम है
नेननि रूप निहारि हिये हरषाइअै
परहा आनंद मोद विनोद भरे गुन गाइये
॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

रसिक राइ गोपाल है नव रस के रस लेत
अति रूपक श्रृंगार ते वृज वालनि सुष देत
॥ २ ॥

॥ चौबोला ॥

श्री नृप राजसिंघ अति हित ते कहे सुकवि गोपालैं
अव वरनौ कछु भेद नायका नौ रस सरस रसालैं
तिन हित जथा सुमति तें लच्छन कछु इक कहत विलासैं
है श्रृंगार सतक इहि विधि ते रचना षूव तमासैं
॥ ३ ॥

प्रथम कहत श्रृंगार वीर रस करुना अद्भूत हासैं
और विभत्स भयानक रुद्रहि सुकहे सात प्रकासैं
सव ते वरन कहौं श्रृंगारहि जाति नायका जामें
सव ते वरन कहौं श्रृंगारहि जाति नायका जामें
॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

प्रथम पद्मिनी जानिये वहुरि चित्रनी नाम
वहुरि हंसिनी संषिनी वहु विधि लच्छन वाम ॥ ५ ॥

।। अथ पद्मिनी कवित्त ।।

कुंदन सरीर नव कुंकुम सो वदनु है
कैधौं रूप ओपि काठी सेनिक मदन है
सुमन सुगंध गंध वह को अहार रुचि
मंद मुष हांस कुंद कलिका रदनु है
अैसी मन भावती को भावते गोपाल लाल
देष्यो किन जाइ वृषभानु के सदन है
गुंजत भवर मोद माते हैं विनोद जहाँ
सोभा मकरंद अरविंद सो वदनु है
।। ६ ।।

।। चित्रनी ।।

आजु हों गई थी वृषभानु के भवन माँह
देषन के हौस चढ़ी औचक अटारी मैं
कैधों है पठाई कोक कारिका को कामदेव
नीठि पहचानी जानी देवकी कुमारी मैं
सुष भाव पानिवे कौ येकै मुष रसना है
तरुनी जितेक सव वारि वारि डारी मैं
चित्रति तिहारौ रूप परम विचित्र तासो
चित्रनी सी मोहि चाहि राधे चित्र सारी मैं ।। ७ ।।

।। हस्तिनी ।।

महा मदमाती छहराती सी फिरत अति
टेरत हसन तोरि आँटू लोकलाज की
रस की चलाये वात रोसनि सों रस मसि
वोलति कटे की वात कनि न समाज की
जैसी वह नायका कौं तैसे तुम नायक हो
गोकुल में गोपाल को है वाको तुम ताज की
झूमति झुकति झहलाति रूप झलकति सी
सीषि सीषि लेति गति माते गजराज की ।। ८ ।।

।। संषिनी ।।

सबते ततेनी तानगी सी डोलैं दिन राति
षाति मन भाई अंग भूषण करति है
निपट हठीली हठ ठानति पलहि पल
पाइहूँ पलोये अैठि आग सी जरति है
सोइ जोइ कहति कहवति सहेलिनि सो
आठो जाम कामना की कोह सोल रति है
अैसे तुम नागर नवीने नेह पालौ वाहि
जनति हौ नैननि तें नेक नहि रति है
।। ९ ।।

।। दोहा ।।

चारि जाति नारी कहै नर ते चारि विवेक
वाढ़त जोवन रूप गुन लक्षन होत अनेक
।। १० ।।

।। चौवोला ।।

नायक सों अनुकूल जानिये येक नायका जानै
दच्छन सवै येक सम लेषै हित येकहि सौ मानै
कपटी कुटिल कठोर काठ ते कहा वसाये सठ सों
कपटी कुटिल कठोर काठ ते कहा वसाये सठ सों
।। ११ ।।

।। अनकूल दोहा ।।

आदि अंत भरि नेह के समता साधु सुभाइ
नाइक सौ अनुकूल कहि वरनत रसिक वनाइ
।। १२ ।।

।। कवित्त ।।

सीता जु को मनु मान सर में मराल राम
सीता रूप घन वन राम भये भोर हैं
सीता दुति सलिल सफर फूले राम फिरे

सीता के नयन भयो राम चित चोर हैं
सीता स्वाँति बुंद राम चातिक गोपाल भनि
सीता गुन गीता राम पठन को भोर हैं
सीता नैन कंज गुंजै भोरे गुंजै राम जू हे
सीता मुख चंद राम लोचन चकोर हैं
॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

सव से येक सनेहता सुचि रुचि परम पवित्र
महा मनोहर जानिये दच्छिन लच्छ विचित्र
॥ १४ ॥

॥ कवित्त ॥

येकै हवि येकै भाव येक ही सुभाव चाव
येक ही समान रूप अंग अभिराम है
येक ही विलोकनि विलास रस हाँस येक
येक ही उलास देषि हुलसति वाम हैं
येकै रीति येकै प्रीति येकै ही प्रताप प्रेम
येकै नेम सोहै जनु कोटि रति काम है
येक ही समान चित्त चोरि रास मंडल मैं
सोरहो सहस मोहै येकै घनस्याम है
॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

लोक लाज कुलि कानि डर नहिं सुहेत पहिचानि
छल वल रस लम्पट निपट यहै धृष्ट की वानि
॥ १५-क ॥

॥ कवित्त ॥

येकै हवि येकै भाव येक ही सुभाव चाव
येक ही समान रूप अंग अभिराम है

येक ही विलोकनि विलास रस हाँस येक
येक ही उलास देषि हुलसति वाम हैं
येकै रीति येकै प्रीति येकै ही प्रताप प्रेम
येकै नेम सोहै जनु कोटि रति काम है
येक ही समान चित्त चोरि रास मंडल मैं
सोरहो सहस मोहै येकै घनस्याम है
॥ १६॥

॥ दोहा ॥
लोक लाज कुलि कानि डर नहिं सुहेत पहिचानि
छल वल रस लम्पट निपट यहै धृष्ट की वानि
॥ १६-क ॥

॥ धृष्ठ ॥
जाके ताके षात जाही ताही सो करत हित
जोई सोई कहत हैं व कौन कौन रौरवी
विसनी वड़ेइ जाहि ताहि के घुसत घर
सुंदर सुघर औरे अैसि अैन औरई
आपने हि छवि ते छकेइ हौ छवीले लाल
छल ही सो मावत सनेह सव ठौरई
तवही सो जाने हम नीके पहचाने स्याम
सवही सो नेह कहा हम ही सो वैरई
॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥ सठ ॥
कोटि भांति रीझै नहीं कहा रिझाये होइ
कपटी महा कठोर को तिहि समुझावै कोइ
॥ १८ ॥

॥ सवैया ॥
जिन हेत तजी कुल कानि भटै
भरि जोवन काम की पाठ पढ़ी

गुरु लोगन की गुरुता विसरी
सुष ऊपर वारि घरी इकठी
इतने पर हूँ न कहूँ तजि वानि
मिल्यो नहि यो हठि छोड़ि हठी
रस हाँस विलास निहारि रही
पै तहू सठ की सठता न हठी
॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

नायेक सहचर जानि के पीठ मर्द विट जौन
चैटक चतुर विंदु कहि वैसिक वरने कौन
॥ २० ॥

॥अथ नायक चौवोला ॥

स्वकिया पतिव्रता को कहिये परकीया पर नारी
गनिका गनिये सामान्या कौ धन भावै जिहि भारी
मुग्धा मध्या तिन कहिये जे समै रूप सरसाही
रसिक राइ रस लंकाधिप को निरखि वंक विहसाहीं
॥ २१ ॥

॥ स्वकिया ॥

वोलनि हसनि चितौ न माधुरी लषै सषी नहि कोइ
भूषन वसन विलास सहजता सहज होइ सो होई
भावत येक सदा मन भावन पूरन प्रेम विमोहे
नहि स्वकिया सम और सुंदरी सुंदरता सव सोहे
॥ २२ ॥

॥दोहा ॥

मुग्धा मध्या प्रौढ़ता स्वकिया रूप समान
वाहिर लषै न प्रीति कोई अंतर प्रीति निधान
॥ २३ ॥

॥ सवैया ॥

पेलति वाल वधू लषि लाल सुकंचन सीतन धूरि भरी है
सूधिये वोल विलोकनि सूधिये सूधिये हास सुधा लहरी है
मोहि रहै मन मोहन जू कव होहिंगे जोवन की सुघरी है
ज्यौं अरविंदनि नाम करंदनि भोर विलास की आस धरी है
॥ २४ ॥

॥ सवैया ॥ नवढ़ा ॥

अंग अंग आभूषण भूषित रंग रंगी सव सारी
झनक मनक झनकार ने वारनि धुनि कल हंस विसारी
वाल वधू छवि नवला लल लषि ललक सुरति रस आसा
दसन दामिनी दमनि ऊपरै उपजत षूव तमासा
॥ २५ ॥

॥ मध्या ॥

लाजनि वाल लषै नहि लालै लषै लषै लव कोई
काम ललक तें कलन लेति कहु लाज काम रस भोई
दुहूँ भाँति मन भावन भावत सुरति रंग तल वेली
दूलह कान्ह वने है तुम्हरे दुलहिन रूप दुहेली
॥ २६ ॥

॥ प्रौढ़ा ॥

जोई रसनि रसिक मन मानै सोई रसनि रसीली
रूप प्रेम रति आदि कला विन छवि ते महा छवीली
नित नव नेह नवल नागर सों विलसति सकल लहाजा
पूरन भाग सुहाग आगरी चढ़ी मदन की छाजा
॥ २७ ॥

॥ धीरा भेदे ॥

नायक कहूँ मानि रति आवे नेह जनावे प्यारी
धीर वचन ते धीरा कहिये भेद वषानै न्यारी

धीरज छोड़ि अधीरज होते कहे अधीरा तासौ
धीर अधीरा धीरी धीरी वरनत कवि हे वासो
॥ २८ ॥

॥ धीरा लच्छन ॥ सवैया ॥

भोर वड़े उठि नंद किसोर भले हित मानि इतै पगु धारै
पौढ़ि रहो परजंक निसंक कहा भये नेन षरे रतनारे
आनंद चंदहु ते अति सोभित भावति मोहि सुभाव तिहारे
भूलि कितै वनमाल गोपाल हिये गज मोतिन हारि विहारे
॥ २९ ॥

॥ अधीरा ॥

देषि हिये नष रेष नितम्बनि वे न कछू नहि जात कहे हैं
मेहि रही मनमोहन सो मुष धीरज येक न जाइ गहे हैं
घूंघटु षोलि अली समुझावति तेरी सों तेरी अनेह नहे हैं
वातन यों वहकावत ही दृग नीरव लाह कसे उमहे है
॥ ३० ॥

॥ धीराधीरा ॥

जाहु चले अजहूँ लों भूले इत काज कहा इनको सजनी
तव ही उठ आवत है इत कों जव सीतल लागत सीप जनी
धीर मयंक मुषी कहियो धनि ते सुष जात जिन्हे रजनी
इनसे रसियानि रिझावति हैं वजती जिनको विछिया वजनी
॥ ३१ ॥

॥ अथ सुरतांत दोहा ॥

दम्पति सुरति विचित्रता तरुन रूप श्रृंगार
जब जब उठत विलास करि तव तव सोभ अपार
॥ ३२ ॥

सुरत अंत श्रृंगार जो सो सुरतांत वषानि
तिन वरनत गोपाल कवि उपमा उपजत आनि
॥ ३३ ॥

॥ मुग्धा कौं सुरतांत सवैया ॥

येक समै वृषभानु सुता हरि केलि किये रस आनंद भारे
प्रीति को रीति परै न कछु कहि घूमति सी अषियान उच्चारै
छूटि रही लट अंग को राइनि सो छवि देत गोपाल विचारे
कंचन सैल के संधनि सों जनु फैल रही जमुना जल धारै
॥ ३४ ॥

॥ मध्या कौं सुरतांत ॥ छप्पै ॥ वीर श्रृंगार ॥

जुरत सुरत संग्राम घुरत ते वर निसान जहँ
कुच स भट्ट कंचुकि सनाह टुट्टै जुहार तहँ
गति गयंद फर फरति हय सुदी पतितन छज्जित
सर कटाक्ष वरषंत मान गढ़ पति गढ़ पति भय भज्जित
गोपाल वीर श्रृंगार रस सुविवस भोर भरिने हरत
अलसात गात सरसात अति सुप्रेम रे झूमत झुकत
॥ ३५ ॥

॥ प्रौढ़ा को सुरतांत ॥ कवित्त ॥

जागे हे किसोर दोउ आजु भोर भये लाल
अरस परस भूलि भूषन कौ धारे हैं
उन वनमाल इन हार लीन्हों हिये मोल
झलके करन माहि कुंडल नवीने हैं
ओढ़े नील अम्बर पीताम्बर के धोषे अरु
धोषे पीत अम्बर नीलाम्बर को धारे है
॥ ३६ ॥

॥ अथ परकीया दोहा ॥ (नीयिका परकीया, छंद दोहा)

परकीया पर पुरुष सो सदा रमै रस रंग
सोरह कला विचित्रता वरनत पाइ प्रसंग
॥ ३७ ॥

॥ मुग्धा ॥ सवैया ॥

षेलति वाल वधूनि मिली वनि
भूषन अंगन रूप समाती
भावति काहु की हाँस विलासन
आप विलासनि को ललचाती
काहू की वात सुनै न कहै कछु
लाज भरी अति रंगत राती
घूंघट घालि रही सव में मन-
मोहन हेरि हिये विहसाती
॥ ३८ ॥

॥ मध्या ॥ दोहा ॥

सव रस रंग विचित्रता लाजनि लषी न जाइ
गुरजन पुरजन जानही महा कुलवधू आइ
॥ ३९ ॥

॥ सवैया ॥

सुनि वात अचानक मोहन की
झुकि आवति हैं सवसों तरकी
करि भौंह कमान चढ़ाइ रही
रुचि राचि रही गुन काजर की
रस हास विलास चितौ न तजी
नत हूँ सुष वैन कहूँ घर की
मुष मोरि मयंक मुषी सवसों
धरि ध्यान रही मुरलीधर की
॥ ४० ॥

॥ प्रौढ़ा कवित्त ॥

आवत गोपाल देषि गोपिका मे गोपि वाल
लाजनि सलजि रही भूषन वनी ठनी
षेलती न षेल चोप चातुरी सौं आतुरी ह्वै
षोलि कै कसत हँसि लाल कंचुकी तनी

काहू को कहति गाउ काहू को कहति आउ
काहू हेरि हेरि हरषति है घनी घनी
काहू को उतार देति हार गजमोतिन की
काहू सेत ओढ़नी दै वोढ़ै नील ओढ़नीं
॥ ४१ ॥

॥ चौबोला ॥

वाक् विदग्धा क्रिया विदग्धा सुरत गोपना जानों
मुदिता कुलिटा और लच्छिता अनुसैना पहिचानों
रूप गर्विता प्रेम गर्विता गुनि दुषिता संभोगै
ये परकीया चतुर नायका वरनत विरह प्रयोगै
॥ ४२ ॥

॥ वाग्विदग्धा ॥ सवैया ॥

देषि गोपाल लला ललना कहि वैन सुनावति टेरि सहेली
न्योते हे नंद के भोजन को सव जैहै रहो गिहो भोन अकेली
आवहिगे चरना युध वोलत हो गुरु लोगनि लाज सहेली
सोवहिगे सुक सारिक हु सषि तेउ चली कहैं कोन पहेली
॥ ४३ ॥

॥ कृपा विदग्धा ॥

जमुना तट वाल गोपाल विलोकि कही तुमने करि होरि अली
विसरी उर हार हो घाटहुं में कहि आतुर चातुरता निछली
पुनि जाइ तहाँ सुष मानि सवैं फिरि आइ मिली वह गोप लली
॥ ४४ ॥

॥ सुरत गोपना चौबोला ॥

चली आजु हो कुंज गली प्रति ढूँढति फिरी लवाई
सघन गुलाल केतुकी कंटनि तन की देषु दसाई
कवरी देषि जितेकित झपटै जानि भूजंगनि कारी
षैंचि चोंच ते चहूँ ओर सो मोरनि सारी फारी
॥ ४५ ॥

॥ मुदिता कवित्त ॥

चंदनी में आजु व्रज चंद सुनि चंद मुषी
नंद जू के अजिर विछाई पौढ़े पालिका
मह मह मोदन की उठत तरंग तहाँ
गुंजत फिरत फूले आली आली अलिका
सोवत गोपाल लाल गये उठि ग्वाल वाल
सेज ही मैं सुंदरी सुम्न फूले मलिका
सुनि वृषभान की कुमारिका रसनि भरि
फूल उठी रोमनि कदम्ब कै सी कलिका
॥ ४६ ॥

॥ कुलटा सवैया ॥

वारिअैं वै सर है विरुझी विरहानल तौं नहि जति बुझाई
हारि रहे रसिया रस तें सव होहु थकी करिकै उधमाई
कुंजर के हरि कूर करे विधि कों पुजवै रति काम कलाई
लाजनि लातनि मारि विदा करि गोकुल गोपन येक वचाई
॥ ४७ ॥

॥ लच्छिता कवित्त ॥

कोने रूप ढाई कोक कारिका कहति कौन
कोन कोन अंगनि अनंग चतुराई है
उमग उरोज रूप ओप की झलक और
जानि सीप रति प्रेम हमही दुराई है
जैसी ते नवल वाल तैसे हैं गोपाल लाल
दुहुनि विचित्रता की जोरी वनि आई है
वैठी जीति सकल सयानता की सार सवै
ऐसी व्रज में न व्रज सुंदरी सुहाई है
॥ ४८ ॥

॥ अनुसयाना ॥

देषि वृषभानु जू की नंदनी श्रीनंद नंद
मंद मंद हास मुष माधुरी विसाल कों
भूषनि करति भूलि चातुरी परी है चोफि
कोपनि ते ठेलि झुकि वैठी व्रज वाल को
पीरी पीरी आई मुष मंडल कपोल झल
मंजुल अवनि पेषि मन की रसाल को
होन गयी कुंजनि गोपाल आये कुंजनि ते
चाहि मुरझानी नव मालती के माल को
॥ ४९ ॥

॥ रूप गर्विता ॥

कोकिल वोलि सुनी उठि चोकि
वुलावत मो न गह्यो सुविचारौ
राति कुहूँ कहि आंगनि आवत
जात भयो कित धौं तम भारौ
है सु अचम्भित वात कहो
कहि धौं सजनी यह वेल निनारो
दीपक जोवन भौन गयी
विनु दीपक भौन भयो उजियारो
॥ ५० ॥

॥ अन्य कवित्त ॥ (॥ ५१ ॥)

कैसे करौं आली वनमाली के विलोकन कों
जुगत वताइ तोसो हा हा हो करति हौं
लागत श्रवन वाद मुरली मधुर नाद
होत उन्माद दूनी विरहै जरति हौं
कहि धौ उपाय मिल्यो कैसे री रसिक राई
अनही मिले ते इन नैननि लरति हों
दिन को दसहु ओर भोरनि को भीर जोर
राति को चकोरन कै चोवनि डरति हो

॥ प्रेम गर्विता ॥ जथा ॥

जोई हो कहति सलास ही ते सविलास
मौन ही ते मौन मनमानी करि मानी है
आली यह कौन रीति वूझति हौ ताहि प्रीत
अैसी विपरीत रसरीत की कहानी है
गोकुल में सुंदरी सलौनी है विचित्रतानि
अैसे का गोपाल लाल मोही पहिचानी है
॥ ५२ ॥

॥ सम्भोग दुखिता ॥ सवैया ॥

आवति देषि दसा तिन भामिनि
भाँति अनेगनि रोस भरी है
वाहि न लाजनि तोहि कछू डर
डाहति मोहि षरी निदरी है
लै अपनी वगवीस उतारे
भूषन अंग जराइ जरी है
पौढ़ि रही पलिका पर कोपनि
दूतिहि मारि कै दूरि करी है
॥ ५३ ॥

॥ इति परकीया अति मामान्या ॥ दोहा ॥

घरी घरी प्रति भमिनी वानि सजत श्रृंगार
वित कारन चित कौ हरै नागर नरनि अपार
॥ ५४ ॥

॥ सवैया ॥

वैठि अटा पर छोलि घटा पर
लाल लषे छवि वार वधू की
मंजन ते तन ज्योति जगी
उमगी उपमा सिगरी रति जू की

धार किधौ मष तूल की तार
सिवार मिली जमुना जल जू की
मानो सुमेर के श्रृंगनि संधि ते
फैलि चली निसि स्याम कुह की
॥ ५५ ॥

॥ दोहा ॥

लच्छन वरने नायका के सव ग्रंथ रसाल
अष्ट नायका भेद अब वरनत कव गोपाल
॥ ५६ ॥

॥ चौबोला ॥

प्रथम षंडिता प्रोषित पतिका स्वाधिन पतिका सोहै
वासक सज्जा कलहंतरिता विप्रलब्धिका मोहै
उक्ता कहत और अभिसारिक आठ नायका कहिये
तीनि तीनि तिन वैस वषानत भेद अनेगनि लहिये
॥ ५७ ॥

षंडिता दोहा

रति रस रंग विलास करि मिलै रसिक जिहि प्रात
ताहि षंडिता जानिये निरषि चीन्ह अनषात
॥ ५८ ॥

॥ मुग्धा ॥ सवैया ॥ (॥ ५९ ॥)

उठ भोरहिं आइ मिले मन मोहन
आवति ही झपकी पलकैं
कहु लागि रहे तन चंदन वंदन
कुंद कली उरझी अलकैं
अवलोकि मयंक मुषी निरवारति
नेह गोपालहि ये ललकें
जनु सीस भुजंग षचे मनि कंचन
यो अनुराग छला छलकैं

।। मध्या ।। सवैया ।।

लाज ते वोलि सकै न कछू
लषि लोचन लाल के लाल भये हैं
काजर ओंठ हिये नष रेष
छला अंगुरी अध छोर नये हैं
जाम जगे कितहू सिगरे इत
तौं विरहानल वीज वये हैं
और के भौनहि भोरे गोपाल
सुभोरहि भोरन आइ गये हैं
।। ६० ।।

।। प्रौढ़ा ।। कवित्त ।। (।। ६१ ।।)

औढ़ि आये कार्के नील ओढ़नि कहो गोपाल
काजर अधर माल जावक से लागे हैं
विषुरे अलक लोल कुंडल झलक लषि
वोलतु हू वोल औरे रुप अनुरागे हैं
झूमत झुकत झपको हैं से पलक लाला
रति के उनींदे नेन प्रेम रस पागे हैं
जैसे अरुणोदय प्रकास अरविंद कोंस
करि मकरंद पान भोर उठि भागे हैं

।। अथ प्रोषित पतिका ।। दोहा ।।

प्रीतम प्रीति वियोग ते विरह व्यथा तन होइ
भावैं भूषन भोन नहिं प्रोषित पतिका सोइ
।। ६२ ।।

।। मुग्धा ।। सवैया ।।

चौंक परी पटजंक परै
उर संकनि सूकि गयी सकुचाने
हूलि उठी विरहानल ते
तन भूलि गयी सुधि त्यौ वितताने

जौ लगि अंग उतारहि भूषन
तौ लगि लाहहि से उफनाने
स्याम विना घनस्याम निसा
जव ही घनघोर घटा घहराने
॥ ६३ ॥

॥ मध्या ॥ सवैया ॥

आइ गये वन वेलनि मंजुल
कुंज लता फल फूल सुहाती
कोकिल कीरति की वकि धौ
सजि ल्याइ है कानन काम वराती
क्यों उर धीर धरो सजनी
रजनी दिन देषि सदा अकुलाती
हाइत हाइ वसंत गयो उत
आये न कंत पठाये न पाती
॥ ६४ ॥

॥ प्रौढ़ा ॥ सवैया ॥

सोर चहूँ दिसि भोरन की सुनि
भू परकंज परै न रहाई
फैल उठी विरहानल अंग
तपै तन भूसन ज्यौं उतराई
जौ लगि मोतिन हार उतारहि
तौ लगि फूटि भये जनु लाई
सावन मेह सुहावन से मन
भावन आवन की सुधि आयी
॥ ६५ ॥

॥ अथ स्वाधिन पतिका ॥ दोहा ॥

प्रेम प्रीति रस रीति तैं रहै रसिक रसलीन
स्वाधिन पतिका जानिये पति जाकौ आधीन ॥ ६६ ॥

।। मुग्धा ।। सवैया ।।
येक समय वृषभान सुता
सुष सोवत सेज सुभाइ अटारी
आइ गये तिहि धाम गोपाल सु
भूलि रहे छवि देषि घटा री
सूर मयूष झरोषनि पेषि
करी पट ओट तवै गिरधारी
प्रेम प्रताप प्रियाहित ऊपर
मानहु मोर पषानि पसारी
।। ६७ ।।

।। मध्या ।। कवित्त ।। (।। ६८ ।।)
येकै गति येकै मति प्रेम नेम येकै अति
देषति हौ येकै गति अंग तरुनाई की
येके तन येकै मन दामिनी सघन घन
वन उपवन संग सोहे मन भाई की
कहत गोपाल यैके संग संग कुंजन में
अंग अंग सोभा आली देषु सरसाई की
सोरहो सहस में न प्रीति अैसी काहू पर
जैसी प्रीति माई आजु राधिका कन्हाई की

।। प्रौढ़ा ।। कवित्त ।। (।। ६९ ।।)
आगे आगे चलत सँवारत सुभग मग
कोमल कमल पग जावक सुहायो है
आछे आछे भूषन विछौना आछे कीजियतु
सोइ कछु हमरे जहाँ लौं मन भायो है
अैसी सूनि पावे ज्यों ही नंदलाल ताहि ठौर
कहत गोपाल घेरु वालनि मचायो है
येते मानि लीन्हों मोहि अैसी वूझि अैन तोहि
नंद के ठिठोला सिर टोना पहिरायो है

॥ अथ वासक सज्जा ॥ दोहा ॥

भूषन वसन विलास हित सजै सैन सुष माहि
वासक सज्जा जानिये प्रीतम आवै नाहि
॥ ७० ॥

॥ मुग्धा ॥ सवैया ॥

भूषन अंग विभूषित कै व्रज
भूषन आवन आस धरी है
सैन प्रसून सवाँरि सुगंधिनि
सोचत वाल वधू सुघरी है
आहटु लेति गयी निसि वीत
सु मोतिन हार लगी सिगरी है
वोलि सकै न सषीनि कछू
नव नैननि नेहनि नीर भरी है
॥ ७१ ॥

॥ मध्या ॥ सवैया ॥

सुंदरता नहिं जाति वखानी
सुंदरता नहिं जाति वखानी
दीप कौ जाइ वुझावति है फिरि
आहटु लेति रहै चुपधानी
षोलत देति किवार पलै
पलकान पदी चरना पुछवानी
मोन भई मन सोच कहै
मनमोहन आजु भये अभिमानी
॥ ७२ ॥

॥ प्रौढ़ा ॥ कवित्त ॥

सुमन सिंगार साजि वैठी रुचि अंजि आँष
लाजन दुराई भेद काहू न जनाई है

मंदिर विचित्र चित्र सारी में विछोना करि
कुंदन की कालिका में पालिका सुहाई है
दीपक अगर जोति महर महर होति
हेरि हेरि हरिनी कहति अकुलाई है
भोर देषि वोली वृषभानु जू की नंदिनी यों
आजु नंद नंदन के कहा मन आई है
॥ ७३ ॥

॥ कलहंतरिता ॥ दोहा ॥ (॥ ७४ ॥)

रस उपजावै रसिक जो करै जो रति की हानि
जान रसिक विरहा वढ़ै कलहंतरिता जानि

॥ मुग्धा ॥ सवैया ॥ (॥ ७५ ॥)

षेलत ही वृषभान सुता
हरि आये हैं षेलन षेल सलोने
षेलति जी हठि वैठि रही
तव षेलन स्याम गये मुख मौने
ता पल ते कछु षेल सुहाति न
वात कहै अव जौनहि तौने
आजु ते षेल षिलावत ही यह
कालि धौ षेलि कहा अव होने

॥ मध्या ॥ सवैया ॥ (॥७६॥)

आये री नंद कुमार वड़ी रुचि
मंदिर माह रहे हम दोइ
लाल कै हारि रहे अपने भरि
अैसे धनी न भये नहिं कोई
लाजनि हो रस हानि करी
हठि आवहिगे कव धौं सषि ओई
षोरि कहा मनमोहन कौ
इहि मानहि मान में ते सव खोई

॥ प्रौढ़ा ॥ कवित्त ॥

मदन गोपाल आये सदन सलौने रुप
वदन सरोज मकरंद रुचि पान कों
हा हा करि हारे हो न आनन उघारे नेक
जानि हौ न भेव उन दीनी पुनि जान कौ
विनु घनस्याम अव लागत गहन धाम
डोलत है काम देषि साधे धनु वान कौ
वोलति पपीह पीड़ पीड़ है निगोड़ी आजु
प्रानपति देषौ विन कैसे राषौ प्रान कों
॥ ७७ ॥

॥ विप्रलब्धा ॥ दोहा ॥

करि सिंगार संकेत थल पहुँचे जाइ जु वाम
ताहि विप्रलब्धा कहै लहै न कामिनि काम
॥ ७८ ॥

॥ मुग्धा ॥ सवैया ॥

सांझ समय सुख धाम सखी
निरषी नहि नंद किसोर किसोरी
पीरि परी झल जोति कपोल
सिरी सकुची मुष घूँघट मोरी
वोलि सकै न वियोग भरी
मन मौन भरी रिस भौंह मरोरी
चाहि चहूँ दिसि चौंकि परी जनु
चंद विना निसि चंद चकोरी ॥ ७९ ॥

॥ मध्या ॥ कवित्त ॥

आज वृषभानु जु की नंदनी निनोद भरी
नंद जू के मंदिर सिंगार पगु धारी है
सलजी सुभाइ वहकाइ वृज वालनि कौं
मोहन के हेत चढ़ी ऊपर अटारी है

क्रमशः

चौंकि चौंकि चौंकि परी चौतुरी सो आतुरी ह्वै
हेरति गोपाल हारी सारी चित्रसारी है
लागि रही नेह की ठगौरी ताहि ठौर मानौं
रूप कैसी मंजरी मरोरि मैन डारी है
(मैन=कामदेव) ॥ ८० ॥

॥ प्रौढ़ा ॥ कवित्त ॥ (॥ ८१ ॥)

स्याम सुषधाम हेरि सूनी घनस्याम विनु
विरह वियोग अंग भूषण सवै जरे हैं
तैसिऔ तरंगिनि की तरल तरंग मंद
मंद मंद गंधवाह तृविधि मनोहरै
तोरि तोरि डारति है फूलन की फूली माल
जित कित हार से मराल मुकुता चढ़ै
चौंकि चौंकि चाहति चकोरन के औरन त्यों
कुंज कुंज कोकिला कुहू कुहू कुहू करै

॥ उत्कंठिता ॥ दोहा ॥ (॥ ८२ ॥)

अति चिंता अति विरह तै वोले वचन उदास
सो कहिये उत्कंठिता चित राषै पिय पास

॥ मुग्धा ॥ सवैया ॥

सोचत साँझहि ते सलजी मन
वालवधू सव सोच पठानी
षेल सुहाइ सुहाइ नसै न
कहै न सुनौं कछु प्रेम कहानी
आये न काहे ते आजु गोपाल
सु जोवति मारग ही अकुलानी
जानि परै न कछू विरहा तन
मालति माल ही सी मुरझानी ॥ ८३ ॥

॥ मध्या ॥ कवित्त ॥

हेरि हेरि हरि नीको वोलति हरिन नैनि
हरि जू न आयेन कोन नैन अनुकूले री
कौन हेत वीतत विभावरी विहग मोह
कैधों काहू भामिनी के रसनि वितूले री
चाहत उड़त अलि हूँ तो अरविंदन ते
परसि मयूष इंदु इंदीवर फूले री
जानति हौ ग्वालन कै साँथ ते गोपाल आज
आली वनमाली कहि कौन वन भूले री
॥ ८४ ॥

॥ प्रौढ़ा ॥ कवित्त ॥

छोड़ि सव षेल वृषभानु की कुँवरि आजु
सोरहों सिंगार साजि मोती मनि माल है
वीतति विलोक राति त्यों ही अनुकूलाति कहै
कैधौं रस रति कहु रसिक रसाल है
कैधों है कपट कैधों निपट अटक कछु
भटकत कैधों कहू लीन्हें सांथ ग्वाल है
लागे होन चंद के मयूष मंद आली चाहि
आये न सदन तउ मदन गोपाल है
॥ ८५ ॥

॥ अभिसारिका ॥ चैवोला ॥ (॥ ८६ ॥)

रस ते जाइ रसिक पर सुंदर करि साहस चतुराई
महा निसंक मनोहर छवि कै सरै आपु मन भाई
कामकला ज्यों कोक निवरनी को कहि सकै विलासा
करि अभिसार सिंगार तरुनि सौं विलसै षूव तमासा

॥ मुग्धा ॥ सवैया ॥

सोवत श्री मन मनमोहन जू वनि
नंद के आंगन चंद उज्यारी

फूलि रहे मलिका कलिका है
सुगंध सुवासिन कारी
औचक संग सहेलि निकेत ते
आइ मिली वृषभान दुलारी
आवत भोरहि वैठि गयी
मुसुकाइ उठे रस ते गिरधारी
॥ ८७ ॥

॥ मध्या ॥ सवैया ॥

लाज तजे सव होत पराजय
काम तजे विरधै विरहाई
सोच सकोच परी जिय में
निकसी निसि मै विसरी चतुराई
चौकति वाल चलै चितवै छवि
छाँह तमालहि देषि लषाई
भूषन प्यास विभूषन भूलि
सु यो व्रज भूषन पै चलि आई
॥ ८८ ॥

॥ प्रौढ़ा ॥ कवित्त ॥

हारे घन वरषत पवन झकोरि हारे
भरि नारे अंधकार निसि तहँ भारी है
हारे घेरि निसिचर उरग लपटि हारे

कामिनी है आइ वांधि काम की कठारी है
हारे हरि नागरनि हारे नेह हेरि कहे
हारे सव येते अभिसारिका न हारी है
॥ ८९ ॥

॥ दोहा ॥

इहि विधि नाइक नाइका वरनी मति अनुसार
हाव भाव ते होत है लच्छन भेद अपार
(॥ ९० ॥)

॥ नवरस वर्णन । श्रृंगार रस ॥ कवित्त ॥

सजि के सिंगार वृषभानु सुता रहे ठारी
औचक परी है दीठि मदन गोपाल की
अंग अंग भूषन विभूषित सरस अति
षंजन दृगनि सोहै अंजन सुवाल की
सुंदर सुभग स्याम पाटी विच मोती मांग
उपमा है आई मन येकै नंदलाल की
करिकै विलास वन पंकज पुलिन मानों
जमुना को पैरि चले पंगति मराल की
॥ ९१ ॥

॥ वीर रस ॥ छप्पै ॥

गति गयंद दीपति तुरंग पैदल सुभावहि
कुच सुभट्ट कंचुकि सनाह नेवर निशान बहु
दै अंचल उर ढाल ढिकिल वल सैनहि सज्जित
कै वर कहर कटाक्ष धनुक भृगुटी छवि छज्जित
गोपाल वीर श्रृंगार रस निरषि रसिक हरषत अति
सोभा अनेक सोभित तरुनि सु कामदेव दल छत्रपति
॥ ९२ ॥

॥ करुना ॥ सवैया ॥ कवित्त ॥

पति जौ कहे तो पति तुम ही रसिक राई
मति जौ कहे तौ मति तुम ही रहत हौ
सुत जौ कहे तौ नंद सुत ते न और सुत
स्वारथ कहे तौ तुम स्वारथ महत हौ

सज्जन समाज सुष सम्पति सकल लाज
तुम व्रजराज लाज काहे ना गहत हो
टेरि तव आहु आहु घेरि है मदन दाहु
अव तुम जाहु जाहु काहे कौं कहत हो
॥ ९३ ॥

॥ अद्भूत रस ॥ छप्पै ॥

विनु वसंत पिक रवहि विना घन दामिनि दमकहि
विनहि कमल विन भोर सुरस वा ऊपर मलकहि
विनहि चंद कौमुदी विना अहि पियत सुधारस
विनु गयंद विनु हरि विनु सर सफर सुरस वस
गोपाल कहत अचरज्ज इमि विनहि समर भट परहि धर
विना धनुक विन गुन चलत अचरज इमि जानहु सुघर
॥ ९४ ॥

॥ हास्य रस ॥ सवैया ॥

दामिनि सी दमकै कवहूँ
कवहूँ करि भोइ सुभाइन है
हास हुलासनि सों हुलसै
मृदु पंकज प्रात प्रकास भये हैं
यो अधरानि के अंतर में
रदन द्युति पंति तमोर रवै है
मानहु वंदन सों विधु में विधि
दंत कै दाड़िम वाजि वये है।
॥ ९५ ॥

॥ वीभत्स रस ॥ सवैया ॥

भावत भूसन रूप न रंग न
अंग मलीन हिये हरषावै
प्रीति कुभोज न भौन कुभाँति
कुसंगति वैठि षरी इठलावै

ताहि सों नेह निवाहत लाल
कहा कहिये कछु लाजनि आवै
जाहि सुगंध सदा हित लागत
क्यों करि ताहि सुगंध हितावै
॥ ९६ ॥

॥ भयानक ॥ छप्पै ॥

जलद नील घन पील पेलि व्रज ऊपर छच्चिय
विसद पंक्ति वत् दंति घोर ध्रुनि सो गल गज्जिय
चमकत चपला षग्ग मोर चातकि चकोर रटि
वरषत वान विसार वुंद वहुधा मनोज भट
तजि मानि मालिनि विजय ठिठिके मदन महीप दल
सुनि संकित सुधाधर आनिनी मिली रसिक गोपाल थल
॥ ९७ ॥

॥ रुद्र रस ॥ कवित्त ॥

फारि डारै षम्भ को फराक दै दनुज उर
गारि डारै गौरव मदोन्मत्त गारिये
हारि डारै सरवसै तंदुल के परवस हो
टारि डारै वलिदेव संकट विचारिअै
मारि डारै सग्गर के साठिहूँ हजार सुत
तारि डारै नृगु ते असेस निरधारिअै
जैसे रंग भूमि माह मल्लन दरेरे तैसे
दावादार दारिदै दरेरि किन मारियै
॥ ९८ ॥

॥ सांत रस ॥ कवित्त ॥

येक समै स्यामा स्यामसुंदर सुहाये रूप
राज तरसनि कुंज सोभा सरसात हैं
मोहे मौर मोरनी चकोरिनी चकोर मोहै
मोहै हंस हंसिनी विनोद दरसत हैं

फूलि फूलि फूलन सों भूलि भूलि वेलि रही
भूलि भूलि भोर मकरंद परसत है
हेरि हेरि माधुरी विलास को गोपाल वलि
देव वधू प्रेमन प्रसूनि वरसत है
॥ ९९ ॥

॥ दोहा ॥

वरनत नायक नायका वाढ़ै ग्रंथ अपार
राधा माधव माधुरी ताते रस श्रृंगार
॥ १०० ॥

जुगल किसोर विलास रस वरने कवि गोपाल
हरषे सदा विनोद सुनि राजसिंघ भुवपाल
॥ १०१ ॥

॥ इति श्री हैहय कुल कमल प्रकास भास्कर
प्रताप राजा राजसिंघ चूड़ामणि चानक
गोपाल विरचिते श्रृंगार सतकं समाप्तम् ॥

क्रमशः

विनोद शतक का प्रतिपाद्य

इस शतक का प्रारम्भ कवि ने 'गणनायक' की वंदना से किया है। पश्चात्, अपने प्रतिपाद्य विषय पर कवि अपने चरण रखता है। उसने मान, विरह व संयोग का उल्लेख किया है, जो श्रृंगार रस के अंग हैं। कवि ने 'मान' के तीन अंग प्रकार कहे हैं- लघु मान, मध्यम मान तथा गुरु मान। कहना न होगा कि ये मान-प्रकार प्रमुखतः, श्रृंगार रस से सम्बंध रखते हैं। पुनश्च, कवि ने उक्त भावनाओं का आलम्बन नायक-नायिका को निरूपित किया है। कवि ने इस काव्य में भी अधिकाधिक स्थलों पर प्रसंगानुसार कृष्ण व राधा को नायक-नायिका रूप में प्रस्तुत किया है। दोनों का विरह व मिलन एकाधिक बार हमारे सामने आता है। कवि लीला में राधा-कृष्ण के साथ गोपियों को भी सम्मिलित करने से नहीं चूकता। श्रीकृष्ण को रूपवान के रूप में प्रस्तुत किया है। श्रीकृष्ण की सहचरी रूप में ललिता, राधा, सेव्या,पद्मा, विशाखा, लघुप्रिया आदि उल्लेखनीय हं। इसी तरह, राधा की भी सखियों का भी नामोल्लेख मिलता है; यथा, चंद्रावली, चित्रा, ससिरेखा, मधुमती, श्रृया, चंद्रावली, चंद्रिका, आदि। इन लोगों के पस्पर वार्तालाप में साहित्य के तत्त्व समाहित हैं। एक सखी का दूसरी सखी से रोचक वार्तालाप के अनेकानेक दृष्टांत मिलते हैं। इस शतक की विशेषता यह है कि सखियों का एक-दूसरे के प्रति हुआ वार्तालाप शतक का एक प्रमुख अंग बनकर उभरा है। कृष्ण की भूमिका मनोहर रूपमें उभरी है।

क्रमशः

९

विनोद शतकम्

जय जय गननायक आयुर दायक
मंगल लायक सुभ करनम्
मंडित मनि जालं मुकुति प्रदायक
छंदन भालं सति धरनम्
कर कठिन कुठारं विघन निवारं
अपरंपारम अघ हरनम्
जय सुंदर वरनं आपद हरनं
भवभय हरनं तव सरनम्
॥ १ ॥

॥ चौबोला ॥

जुगल विनोद सरस रस वरनत करते विविध विहारै
पूरन प्रेम प्रीति प्रति वासर रचे सषी सुकुमारै
मान विरह संजोग सुरति तें सुंदर सदा विलासा
वारह मास छ रितु नव कुंजनि उपवन षूव तमासा
॥ २ ॥

॥ अथ मान ॥ चौबोला ॥

तीनि भांति को मान कहत कवि लघु मध्यम गुरु जाने
लघु छूटै कछु ष्याल परस ते मध्यम वुद्धि वषानै
गुरु गरिमा पिय दोष देषि कैं छूटै कठिन हिलासै
जोरि तोरि दूती उपजावै रसिकिनि रसिक विलासै
॥ ३ ॥

॥ लघु मान ॥ कवित्त ॥

हेरत विहारी येक काहू गोप नारी तन
राधिका निरषि मनमोहन सो ठानी है

तव ही रसिक राइ भेद उपजाइ कछु
ष्याल में आये तहाँ वोले मृदु वानी है
इंदु के प्रकास फूले आजु अरविंद वृंद
ऐसी सुनि चंदमुषी मंद मुसक्यानी है
विनु अवलोके नैन वैनन पत्यायो जाइ
अव लौं न सुनी ऐसी अकथ कहानी है
॥ ४ ॥

वैठे वसंत निनोद विलोकत
नंद लला वृषभान दुलारी
आइ अचानक नाउ लयो मुष
मोहन के इक गोपकुमारी
रूठि कै पीठि दै मौन गही
तव और के और कहे गिरधारी
(नाउ = नाम) ॥ ५ ॥

॥ गुरुमान ॥ चौबोला ॥
येक समै वृषभान भोंन को नंदकुमार सिधाये
राधा नैन निरषि हर लोचन अधिक अरुनता छाये
काजर अधर करज छत छाती छके प्रेम कछु आने
अनषि अटारी वैठि रही हठि ठानि महा गुरु माने
॥ ६ ॥

फिरि आये मोहन मन पँचिकै अति ही विरह सताये
छल वल विनैं भाँति सो वहु तै सषी सिषाइ पठाये
सुमन सुगंध सषा नहि भावै कुंज कुंज प्रति डोलै
चौंकि चौंकि चहुँ ओर निहारे अलि कोकिल को वोलै
॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥
सिंघ पौरि वृषवान के गई सहचरी जानि
छलवल सौं भीतर गई अतिहि चातुरी तानि ॥ ८ ॥

।। कवित्त ।।

सोवत अटारी वृषभान के दुलारी सुनि
औंचक ही जाइ कर चरन पलोई है
वोलि न सकति भोन अति ही सयानी जानि
तन को तपनि जाति नेक नहिं गोई है
चीन्हीं भहरानी भरि कोप महरानी वाहि
काठ सी कठोर रस जानि न निचोई है
वैठी निठुराई की धनुक सर भौंह साधि
मान की जिरह कसि विरह की भोई है
।। ९ ।।

।। दोहा ।।

रुष ही रुष मुष निरषि कै कहै सहचरी वैन
आजु कछू क्यों अरुनता सरस रसीले नैन
।। १० ।।

।। सवैया ।।

मानसरोवर मैं मनमोहन
के मन सुंदर मीन विहारे
तो मुष चंद मयूष सुधा हरि
नैन चकोरन ओर निहारे
तो हित ही हित तो चित ही चित
तो वृत छोड़ि न और विचारे
तोर सरूप विलोकि गोपाल
सु गोकुल की तरुनी सव वारे
।। ११ ।।

।। तृभंगी ।।

सुनि सुनि सषि वानी झुकि झट रानी
अति अनषानी मन राधा

इत को न वुलाई कहा चलाई
लाज न आई रस साधा
तोही डर छूटी कोई न कूटी
चारिहु फूटी उठि धाई
लूटी सव गावै भेद न पावै
वितहि चुरावै हित दायी
॥ १२ ॥

॥ चौबोला ॥

साम दाम अरु दंड भेद ते उठी कोप करि दूती
तेरे रसनि राति दिन राधा होत नींद भरि सूती
इतनी कहा होति तूँ ताती कहौ नंद वृषभानै
ह्वै जो कछू जाइ हरि कौ तौ करे आन की आनै
॥ १३ ॥

॥ सवैया ॥

है अवली जु भली विधि राधिक
कालहि ते फिर के पछितैहै
मानहि तै अपमान वड़े पुनि
प्रीति घटै ते कहा रस रैहै
आषिर मोहनि हो रहिगो जब
मैं न महा विरहानल वै हैं
भोन सुगंध सुधाधर वंधु
विरोध किये हि कहा भरि पैहैं
॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

जो भावै सो जाई करि कही नितू का तोरि
मोहि निडर इतनी कछू रही कमल मुष मोरि
॥ १५ ॥

चली रूठि उठि सहचरी मन मोहन के पास
मिली जाइ नव कुंज मै वोली वचन उदास
॥ १६ ॥

॥ कवित्त ॥

राधा के विरह वियोग हरि कुल व्याहवे
हेरि हेरि कुंजनि को धीर न धरत हैं
सीतल समीर लागे तीर से जितहि कित
चौंकि चौंकि कोकिला कै कूंकन परत हैं
फूलन सुगंध सैन नाहिने लगत चैन
भूलि भूलि वैन मुष औरे उचरत हैं
राते पीरे पल्लव लतानि के ललित मानों
दसहूँ दिसानि व्रज दवा से जरत हैं
॥ १७ ॥

॥ चौबेला ॥

कहूँ मुकुट गल माल मनोहर कहूँ पीत पट डारे
मुरली कहूँ श्रवन रवि कुंडल डरे लकुट कहु न्यारे
कहूँ गाइ कहु सषा सुहाये कहूँ न काहू वोले
राधा विरह भरे मनमोहन कुंजन विह्वल डोले
॥ १८ ॥

देषि दसा मन डरी सहचरी कही बहुत उपचारै
अैसे कहा होत मन व्याकुल करै जु आपु सम्हारै
गोकुल कहा गोपिका थोरी तऊ मदन की वाधा
आजु विलास और सौ विलसों काल मिलावहु राधा
॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

सषी वैन सरसे लगे ते पुरई सा धाहि
राधा राधा नाम के रट लागी राधाहि
॥ २० ॥

॥ कवित्त ॥

काहे कौ कहति ऐसी जोरि कै जरनि वात
जाति हैं न वेगि क्यों सवेर ही के पहरैं
कोकिला को मारि मोर हंसनि निडारि भोरि
भीरन को टारि फूले फूलन में फहरैं
डारि दै सिवारि जारि वारि दै री धनसार
सीतल समीर ते सरीर दूने थहर
ललित लवंग लता लागत भुजंगन से
आवत लहरि देषि जमुना की लहरै
॥ २१ ॥

॥ श्री कृष्णाय ॥ चौबोला ॥

तै किहि भाँति राधिका निरषी कहै क्यों न हरि प्यारी
कहा दोष तें इतौ रोषि करि निपटै नेह विसारी
का पुनि कही कहै किनसो तौ हमहि दरस की आसा
अवही कहा भूलि सव बैठी रस की षूव तमासा
॥ २२ ॥

॥ सषी ॥ चौबोला ॥

कहौं कहा गोपाल लाल जू गई नीठि तिहि पासै
सोवत चरन पलोइ जगाई वोली वचन उदासै
जो उनि कही काहि कहि आवैलाज कानि सव नासी
मुंड चढ़ाइ वैर तुम विसरे इक दुःष दूजे हाँसी
॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

कछु कह ते कछु वै कहें विरह भरे व्रजराज
कुंज कोकिला काम ससी सोभित मदन समाज
॥ २४ ॥

॥ सवैया ॥

उर माल मृतासन व्याल लसै

जिहि ते तुम वैर सम्हारत हौ
कुवलै नवनील दलै लषि कंठ
हलाहल है न विचारत हौ
घनसार मलै रज अंग विभूषन
कोपि कहा सुनि हारत हो
हर कै भ्रम ते हरि को कुसुमेस
कहा सर पंच प्रहारत हो
॥ २५ ॥

॥ कवित्त ॥
जानत है तपत तिहारो पितु तेजवंत
ताही के गुमान भरी सोभा मटकति हौ
भ्रातनि के त्रासनि भ्रमति भुव लोक जनि
तिनहूँ सो रूठि कै रसहि भटकति हौ
काहे ते कमान कोई कोपती कलिंद जाहो
कहत गोपाल कुंज जानि लटकति हौ
राधिका विरह तप करत तिहारे तीर
तरल तरंगन कों क्यौं हटकति हौ
॥ २६ ॥

वाम्हन कहाइ कछु वेद न विचारत हौ
आपने वियोग हम वन ही विहारिअै
जानत हौ जानत भलाई हौ न देह धरि
वाधक विरोध साधु समता न धारिअै
माने कलिकाल माँहि केवल कलप तरु
कहत गोपाल ताते उर ते न टारिअै
स्यामल सरीर तुम राज के भरम करि
काहे को सुधाधर मयूष सर मारिअै
॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

छिन छिन मोहन लाल की कही विरह नहि जाइ
प्रेरत काम वसंत को रस ते भेद उपाइ
॥ २८ ॥

॥ कवित्त ॥

जाहु रे चकोर चाहौ चंदमुषी माधुरी को
वोलत मधुर कलहंस आपु जाइअै
कुंजनि ते सारि काम कोकिला जगाओ जाइ
जाहु रे भँवर वासु लै लै वहु धाइअै
जाहु लै लै सीतल सुगंध मंद गंधवाह
कहत गोपाल चंद चंडिके सुहाइअै
वेग ही सिधारौ साधि सायक हो पंचवान
मान कौ जिरह तोरि विरह जगाइअै
॥ २९ ॥

कवहूँ रहत मौन वोले कहू जौन तौन
मोहन के मोह कछू जानि न परत है
कवहूँ चलत धाइ कवहू उठत गाइ
कवहूँ रिसाइ द्रुम वल्लिन तरत है
कहत गोपाल सुनि कोकिला की कुहकुनि
आई जानि कुंजनि में चौंकि से परत है
सुंदर वदन मकरंद कोइ नैन राधा
कृष्ण-मुख कमल कै ध्यान वै धरत है
॥ ३० ॥

॥ दोहा ॥

मनमोहन छवि माधुरी निरषि निरषि मुरझाइ
सोचि मनै मन सहचरी लागी करन उपाय
॥ ३१ ॥

॥ सवैया ॥

देषि दसा हरि की सजनी
अकुलाति घनी रजनी अव आई
मोहन को वहु भूषन भूषि
सु चातुरता इनि रूप सुहाई
तौ लगि स्याम सषीनि लिवाइ सो
लै वृषभान के भौन सिधाई
मान महा मदमत्त मनो गज
अंकुस मैन दियो विरहाई
॥ ३२ ॥

॥ चौबोला ॥

निरषी जाइ सषी राधा कौ विरह मान की वाढ़ी
छिन सोवै छिन जगै जगावै छिन वैठे छिन ठाढ़ी
छिन छिन कहै और की औरें विरह वियोग उदासे
धरि धरि निठुर ध्यान गिरधर की सहचरि करै दिलासै
॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

आवत स्याम सषीनि कौ स्यामा सषी निहारि
वैठाई हठि ठानि के रूठि चातुरी धारि
॥ ३४ ॥

॥ श्रीकृष्ण की सखी ॥ चौबोला ॥

ललिता स्यामा और श्रीमती सेव्या सषी सुहाई
पद्मा भद्रा कहत विसाषा हरि सुप्रिया मन भाई
ये गोपाल सहचरी आठों परम विचित्र वषानी
मान विरह करुणा रस वरनै इनते कौन सयानी
॥ ३५॥

॥ राधा की सखी ॥ चौबोला ॥

चंद्रावली चंद्रिका चित्रा रूप विचित्रा सोहे

ससि रेषा मधुमती मृयंका मन सुंदरी विमोहे
ये आठों है सषी राधिका दोऊ इन्हें निहोरे
प्रीति परस्पर मान विरह करि प्रतिदिन जोरे तोरे
॥ ३६ ॥

॥ ललिता चंद्रावली प्रति वाक्य ॥ कवित्त ॥
चंद सों रिसानी कहू चांदनी सुनी है कान
चांदनी सो चंद कहू रूसि रस मानी है
रूसे कहू जल सो तरंग री कुरंग नेनी
रूसे कहू रोस कै तरंगनि सो पानी है
रूसि के सुमन हू तें जातन सुगंध कहूँ
मुमन सुगंधन सों रोस कहू ठानी है
से ही रसन राते रसिक गोपाल सषि
राधिका कुवँरि तैसी रस पहचानी है
॥ ३७ ॥

॥ चंद्रावली ललिता प्रति ॥ कवित्त ॥
काहे ते घटत सषि सोरहो कला को चंद
काहे ते अमल वपु कालिमा धरत है
काहे ते तरंग रस भंग ह्वै ह्वै कूल जात
कोन हेत पाई नीर नीच ही ढरतु है
काहे ते सुगंधित सुमन निसुगंध होति
कोन हेत गंध वायु संगति करतु है
काहे ते वराह मेरी राधिका कुवंरि कों
रावरे गोपाल को तो सौंह विसरतु है
॥ ३८ ॥

॥ स्याम चंद्रिका प्रति ॥ कवित्त ॥
सुंदर सघन वन सुमन समूहन कों
हेरत फिरत कोटि भाँति करि छंद कों

सेवती नेवारी वेलि मालती कुमुद कुंद
केतुकी निहारि डरे कोटिकनि नंद कों
औदर भरतु कैसे जाहिऔ जुही की रस
हेरत कहूँ न नेक चम्पक अनंद कों
॥ ३९ ॥

॥ चंद्रिका स्यामा प्रति ॥ सवैया ।
जो मुख मालति वेलि चमेलिनि
चूमि गुलावन हूँ सच मानें
सो मुष आव धतूर कनेरहि
कानहि जे द्रुम जाति वषानें
क्यों करि धारि रहै पन पंकज
वानि गोपाल परी कछु आने
देषत कौ मुष कोमल भोर सो
वेधत काठ कठोरनि वाने
॥ ४० ॥

॥ श्रीमती चित्रा प्रति ॥ कवित्त ॥
हंसनि को छोड़ि कहू हंसिनी रहति सुनि
मोर छोड़ मोरिनी क्यों उपमा लहति है
छोड़ि कै कुरंगन कौं जाति है कुरंगी कहुँ
छोड़ि कै चकोर को चकोरिऔ गहति है
कोकिला को कोकिल विसारैं क्यौं वसंत रितु
विरह परेवा को परेइ क्यों सहत है
कहत गोपाल कवि कौतुक सुनी न कान
मोरन को छोड़ि कहू मोरनी रहति है
॥ ४१ ॥

॥ श्रीमती चित्रा के प्रति ॥ सवैया ॥
हंस तजै नहिं हंसनि को छिन
मोरनि को नहिं मोर विसारै

रंग कुरंगि कुरंग तजै नहिं
नाहि चकोर चकोरिन भारै
भोरनि हूँ नहिं भूलत भोर
गोपाल सुप्रीति की रीति निनारे
काम वड़ो कपटी सषि है सच
प्रेमहि मारि वियोग विगारे
॥ ४२ ॥

॥ सेव्या विचित्रा प्रति ॥ जथा ॥

दामनी तजै न घन नलिनी तजै न वन
प्रीति को तजै न प्रेम जोग को जुगति है
तरु को तजै न छाँह छाँह ज्यों मुकुर माह
कहत गोपाल जैसे मन ही को मति है
जल कौ तजै न मीन मीन को चपलता हि
वीज को तजै न मंत्र सिव को न सक्ति है
काम को तजै न रति कामिनी तजै न पति
भाव कौं तजे न भगवंत की भगति है
॥ ४३ ॥

॥ विचित्रा सेव्या प्रति ॥ सवैया ॥

येक महा नवनील घटा विच
दामिनि येक घनी छवि छाजै
येकही प्रीति प्रतीति हि प्रेम सु
येकहि दर्पन मूरति साजै
येक रसै रस रूप गोपाल सु
येक सिवा सिव सुंदर ताजै
येकहि वीजन मोहन मंत्र सु
येकहि कामिनि काम विराजै
॥ ४४ ॥

॥ पद्मा ससि रेषा प्रति ॥ सवैया ॥

नव कुंजनि कुंज लषी सिगरी
वन मंजुल मंजुल भाँति भली
कहुँ स्यामल नीलनि लाल हरी
लपटी सु लवंगलता निगली
मन ही मन सोचि विचारि रही
अति रम्य गोपाल की रंग थली
अपने रस फूलनि फूलि सवै
तरु छोड़ि कहू नहि वेलि चली
॥ ४५ ॥

॥ ससिरेषा पद्मा प्रति ॥ सवैया ॥

वहई नव कुंजनि होहु गई
अवलोकि जितै कित भाँति भली
अपने रस फूलि रहे सिगरे
विगसी न कहू रस ही नकली
तहँ छाँड़ि सुमाधवि के मकरंदहि
रूसि चल्यो अलिनी सो अली
अव होत वसंत समागम जानि
घने रुचि हेत प्रियाहि छली ॥ ४६ ॥

॥ भद्रा मधुमती प्रति ॥ सवैया ॥ (॥ ४७ ॥)

वूझति कारन येक अली तोहि
चाहि अचम्भित भाँति भरी
जाति जितै तितही तित जाति
तजी न कहूँ गहि रीति नई री
वैठहु ठाढ़ेहु ठौर समीपहु
पास गोपाल निवास भई री
काहे को चंद निसा मह संग
सुछाँह कहू नहि छोड़ि गई री

॥ मधुमती भद्रा प्रति ॥ सवैया ॥

वाढ़त प्रात हि ताप वढ़े पुनि
पाइ तरे छवि दोष न आने
येक समान रहै न दिनोदिन
देह दसा न कछू पहिचाने
है प्रभुता रवि ते सिगरी
तम ते सम तार सरोसन ठाने
जानि गोपाल लये हित को
हम छाँह सनेह हि छीकरि जाने
॥ ४८ ॥

॥ विसाषा सृया प्रति ॥ सवैया ॥

येकनि ते पठये सुक सारिक
प्रीति अनेगनि प्रेममयी री
येकनि हंसनि हंस पढ़ै कल
वैन सुधाहुनि कानि दयी री
येकनि मोर चकोर पठाइ
पढ़ावत कोकिल गान नयी री
औसिये गोकुल गाउ गोपाल
सु ते चकवी चकई पठई री ॥ ४९ ॥

॥ सृया विसाषा प्रति ॥ सवैया ॥

रैन वियोग रहै इकही टक
नेक टरै न कहू टक ताकी
मोहन बाँसुरि वैननि ही मनु
मत्त रहै कहै को उपमा की
येक हि प्रीति प्रतीति गोपाल
सुजात कहा निसि अंतर ताकी
प्रात समै सुष को विलसै
रस को न लषै चकही चकहा की ॥ ५० ॥

।। हरिप्रिया मदन सुंदरी प्रति ।। कवित्त ।।

फूले है सघन वन मंडप हरित कुंज
वेदी रची रास थल मंगल समाज की
तोरन ललित लता लसन लवंगनि की
मोर मन कार भेरि तूर पूरे वाज की
वेदन पठन कलहंस से पुरोहित है
बंदीजन कोकिला वराती सुभ साज की
व्याहन को दूलह गोपाल आये कामदेव
राजति है दुलहिनि वेटी रितुराज की
।। ५१ ।।

।। मदन सुंदरी हरिप्रिया प्रति ।। सवैया ।।

है यह कौन की संग कुमारि
सरूप की रासि कहा पगधारी
देषि सुनी नहि आजु लौं गोकुल
सोहति है तुम साँथ सिंगारी
वूझति राधिक की सषियाँ
सुनि मोन गोपाल हिये सुषकारी
जानति काम वसंतहि के हित
आइ है व्याह की न्यौतनहारी ।। ५२ ।।

।। मदनसुंदरी सषि रधिका प्रति ।। कवित्त ।। (।। ५३ ।।)

आइहैं लिवावनु को वेटी रितु राजहू की
काज के उमेद महा सोभा सुष कारिअै
न्योतति निहोरि कर जोरि जोरि पाइँ परि
साजन समाज कौ सनेह न विसारिअै
गाइअै सुमधुर गीत रंजन सुगंधनि ते
गोपालहित सोरहो सिंगारन सिंगारिअै
गाइये सुगारी गीत भाँवरि कै साथ साथ
राधिका कुँवरि कुंज धाम पगु धारिअै

॥ राधा मदन सुदरी प्रति ॥ चौबोला ॥

सुनि मुसुक्यानी मधुर राधिका मदन सुंदरी वानी
है रितुराज कुँवरि यह कैसी हौं न कहू पहचानी
अति ही रूपवती यह सुंदरि कहा वसंत दुराई
षेली हंसी साथ नहि कबहूँ अब तो होत पराई
॥ ५४ ॥

॥ ललिता राधा प्रति ॥ कवित्त ॥

केसरि कुसुम पीत मंजरी रसाल रूप
रस की गोराई प्रति अंग सरसति है
पल्लव सुरंग रंग रंगति अधर कर
चरन सुरंग चहि जावक नसति है
स्यामता अनिल हूँ सुसोहति है केस पास
कलिका दसन कुंद भेद विहसति है
राषी नव कुंजनि गोपाल सो दुराई देषु
काम वर कुँवरि वसंत की लसति है
॥ ५५ ॥

॥ दोहा ॥ (॥ ५६ ॥)

राधा माधव मिलत ही लाग्यो विरह दिगंत
मानहुँ नव पल्लव भये रस तक मास वसंत

॥ कवित्त ॥ (॥ ५७ ॥)

कुँवरि सलोनी जानि राधिका कुँवरि उठि
प्रेम ते विवस रस अंकनि भरत है
मोरि मोरि दै दै मुष अंचल अली ये हंसि
जाने मति भेदन कौ कहत हि डरत है
उछली है मानि सुधानिधि की तरंग अंग
अंगनि अनंग आगि सीतल परत है
माधुरी अधर मंद हास लषि सो गोपाल
सोभा मकरंद भरि फूल से झरत है

॥ अन्या ॥ कवित्त ॥

अंक में भरत हँसी निरषि गोपाल सषि
सलजी सयानी रही छलके विचार कों
उमगी तरंग अंग रस की उमंग जानि
लागि है करन आली सोरहों सिंगारि कों
जगर मगर जोति जुगल किसोर रूप
लाजे रति मार कोंटि सोभा सुकुमार को
नासन विरह त्रास माधव सुहाई मास
कुंजनि सिधारे राधा माधव विहार को
॥ ५८ ॥

॥ चौबोला ॥

लै माधव राधा को युवती कुंज भवन को आई
सीतल मंद गंध मलयानिल उठत तरंग सुहाई
कुहु कुहु कुहु चहुँ ओर कोकिला जनु गावै रस करषा
कुंद मलिंद फूलि वन यह ते मकरंदनि की वरषा
॥ ५९ ॥

गहन गहन गये गह धुनि सुनिये मदन वराती मानों
मह मह महकि मनोहर मोरनि सरस विनोदिनि जानों
लह लह लता ललित नव पल्लव मंडप मनहु विराजे
भननन भँवर भेरि से पूरित कलरव वाजन वाजे
॥ ६० ॥

॥ कवित्त ॥

ललित ललित लता पल्लव लवंगनि की
मंडप हरित कुंज फूलनि सों छाये हैं
सुमन विनोद सेज सोहत सुभग वेदी
वेद से पठत कलहंस वहु धाये हैं
सुक पिक चातिक चकोर चहुँ ओर मोर
उमहे वराती भोर भेरि से वजाये हैं

गावती है कोकिला गोपाल रस नारि गारि
नवल सनेह राधा माधव सुहाये हैं
॥ ६१ ॥

॥ चौबोला ॥

वेदी सुमन सैन नव कुंजनि सुंदर सुरस सुहाये
जोरी जुगल किसोर मनोहर सकल रूप छवि छाये
अंग अंग श्रृंगार सषी जनु रवि रुचि के पहिराई
सोभा नवल कला तृभुवन की मनहुँ चढ़ाइ चढ़ाई
॥ ६२ ॥

॥ कवित्त ॥

वैठे कुंज मंडप विराजमान श्री गोपाल
रस की सरस गाँठि जोरि विधि ओर की
कुंडल करन फूल फूली छवि सीस फूल
पाटी घन घटा हे मुकुट माथे मोर की
मेतिन के हार बीचि जटित जराई चौकी
कंठ कंठ माल वनमाल चित चोर की
नील पीत मेघ रंग दामिनी विहार संग
सोंचति सिंगार जोरी जुगल किसोर की
॥ ६३ ॥

॥ चौबोला ॥

अरस परस रस पानि ग्रहनि करि प्रेम सुभावरि दीन्हीं
चरन पषारि सषी राधा की मनहु पुन्य फल लीन्ही
कुहवर कुंज रंग थल सोहै जुगल किसोर किसोरी
समै जानिके चली अली उठि येक येक की चोरी
॥ ६४ ॥

प्रथम समागम सुरति रंग रस अरस परस रस भारे
आलीगन चुम्बन परिरम्भन मान विरह के मारे

कला विचित्र काहि कहि आवै नहि को कहू न वरनी
काम केलि को कामदेव कौ का कामिनि मन हरनी
॥ ६५ ॥

॥ छप्पै ॥

हाव भाव चतुरंग सैन सज्जित सनेह पर
गुन कज्जल भृगुटी कमान छूटत कटाक्ष सर
वकतर आगी आँग जिरह सारी सुरंग छवि
उरज उतंग सुभष्ट रहे गहि अैड ठौर कवि
इमि तरुन वीर श्रृंगार राजि सुरति सेज संग्राम हित
दल मदन मल वल प्रवल अति सु मोहन मदन गोपाल चित
॥ ६६ ॥

मुष मुरली घनघोर विरह निसान सुसज्जित
तानि भृगुटि कोदंड काम चितवनि सर सज्जित
मोर मुकुट सिर छत्र श्रवन रवि कुंडल झलकत
तरुन रूप चतुरंग सैन सम रहि रस वलकत
गोपाल वीर श्रृंगार रस तरुन मानु गढ़ षंडियउ
नव कुंज सुरति संग्राम थल सुरसिकराइ रस भंडियउ
॥ ६७ ॥

॥ चौबोला ॥ (॥ ६८ ॥)

राधा माधव रसलीला को वरनि काहि कहि आवै
सुरति प्रेम श्रृंगार रूप रुचि सरस सरूप सुहावै
अरस परस लोचन सव जाने कमल भृंग से सोहै
पुलकित अंग पीत पट ओढ़े विवस विलास विमोहे

॥ कवित्त ॥

स्यामा के वदन श्रम सीकर की कल दुति
निरषि गोपाल नेन प्रेमरस पूरे हैं
कुंकुम की आइहू ते वीच ली जराइ वेदी
विषरे अलक तम घेरे जनु सूर है

सोहत कपोल पर अधर सुरंग तर
अमिय फुटी सी फैली सुषमा की मूर है
प्रसेन की छिटकी झलक विच चमकत
मानो गजमोतिन सुंदर से चूर है
॥ ६९ ॥

॥ चौबोला ॥

श्री मनमोहन मान त्रास तें डर के मनहि दुरावै
मुष प्रतिबिंब निरषि मति उबरै और तरुन के नावे
उरझि रहे कुंतल अरु कुंडल हार ललित वनमाला
अटके प्रेम प्रीति रस रंगनि रसिक रसिकनी वाला
॥ ७० ॥

॥ कवित्त ॥

कुंतल कुटिल छुटे पंकज वदन पर
मानो ष्याल ही ते ऐसे व्याल वलकत है
लोचन अरुन असिताई की निकाई पर
पीवत भँवर मकरंद मनु छले हैं
सुंदर ललित कुंज मंदिर सुरति रंग
निरषि गोपाल नेन अति ललकत हैं
साँवरे सरीर पर सीकर लसत कैधों
स्याम घन विच विच तारे झलकत हैं
॥ ७१ ॥

॥ चौबोला ॥

जुगल किसोर विलास अंत जनि समै सषी जन आई
लज्जित नेन माधुरी दम्पति निरषि हरषि सुसुक्याई
भूषन वसन सुगंध साजु चह नव नव साज सिंगारे
सदा ध्यान गोपाल सुकवि मन वृंदा विपिन विहारे
॥ ७२ ॥

॥ छप्पै ॥

इह विधि कुंज विलास दास गोपाल वषाने
पुलकित प्रेम प्रताप सुधा रस पान अघाने
स्यामा स्याम विहार कुंज कुंजनि प्रति सोभा
रितु वसंत सरसंत जहाँ संतत मन लोभा
रसि रंग विविध परिहास कहि मान विरह श्रृंगार गनि
जय रसिक जन मन हरन जुगलि किसोर विलास मनि
॥ ७३ ॥

॥ दोहा ॥

नवल कुंज नव राधिका नवल कान्ह सरसंत
हर मधुवन की सुधि करा आवत सरस वसंत
॥ ७४ ॥

सुनि राधा माधव सषी वोली वोल रसाल
अैसे समय उदास मति करत कहा गोपाल
॥ ७५ ॥

॥ श्रीकृष्णं प्रति ॥ दोहा ॥

ललित लता लहि होति सुखद सुमन सुगंध लसंत
अलि कोकिल कलरव करै आयो सरस वसंत
॥ ७६ ॥

॥ छप्पै ॥

ललित पत्त लहलहति मत्त मधु रत्त मधुप गन
प्रफुलित लति वल्लीसु मंजु मंजरिय अँववन
सुमन सुगंध लसंत तृविध मारुत जुत मह मह
सुक सारिक कलरव अपार वागनि धुनि गहगह
कहि गोपाल वृजवाल इमि प्रवल विरह मन मथ्य डर
कहु कंत कंत कोकिल सुहंत सुकंत वसंत घर
॥ ७७ ॥

॥ चौबोला ॥

वासर वढ़त वढ़त नर होरी षोरि षोरि घचमाचे
सरस मसखरे करहिं मसषरी भांड नचावे नाचे
झूलहि डोलि गुविंद लाल भये ललित गुलाल उड़ावै
लोचन ललित गोपाल लाल के लोचन सकल दुरावै
॥ ७८ ॥

फूले फूल ललित वन वीथिन सेत पीत अति राते
अमल कमल आमोद मोद ते अलि मकरंदनि माते
सीतल मंद सुगंध पौन पिय परसत वढ़ै विलासा
चेत रसिक मनि चंद मुषिन सौं देषै षूव तमासा
॥ ७९ ॥

॥ छप्पै ॥ (॥ ८० ॥)

तपत तेज अति तरनि जीव व्याकुल जल थलथल
अनिल अनल सम वहत चहत सव सीतल पल पल
सर सूषत दरषत अनेग दुष होत पथिक पथ
तजत भोन इन दिनहिं कोन मोहत मन मनमथ
आधार येक राधा रवन वाधा विरह विहंडिये
कर जोर कहत गिरधर सुनौ सुग्रीषम गेह न छंडिये

॥ चौबोला ॥ (॥ ८१ ॥) + (॥ ८२ ॥)

वैसाष ललित लहलहति लहि तव वन वरन वन वाँती
मंह मंह फूल महकि चहुँ ओरनि इक आवति इक जाती
कुहु कुहु कुहू कुहुकती कोकिल आप आपनी मौजें
यह वैसाष रसिक रसिकन को रस रस की जनु फौजें
जल थल अगिन समान घाम ते जेठै जीव विचारे
सीतल सवै चहत अति हित को देह दाह के मारे
तरवर सूषि सूषि जल सरवर वासर निपट निराटै
जेठ दुपहरी कठिन पथिक कोइ चलत जीव के सांटे

॥ पावस छप्पै ॥

प्रवल वात आघात चलत चहुँ ओर चपल गति
घुमड़ि घटा नभ नील उमड़ि घहरात घोर अति
तड़ित तरपि झुकि झरपि वुंद वर जोरनि वरषत
हरित भूमि सर भरति मोर वन वन मै हरषत
अव झूलहु लाल हिंडोरने नवल नेह नित मानि हितु
यह समय रसिक कोइ चलत नहिं सुपावस विविध विलास रितु
॥ ८३ ॥

॥ चौबोला ॥

धावत जलधर प्रवल पौन चढ़ि घुमड़ि घटा घहराते
घररर रोर घोर घन घूमत घर घर नर विततातें
कुहकत मोर जोर जल वरषत वन दरषत छवि वाढ़ै
देषि षलक का षूव तमासा रसिकनि चलत असाढ़ै
॥ ८४ ॥

वारिद प्रवल वारि ते गाजत वरषत पवन झकोरै
सर सरिता भरि चलत जोर जल हलकि तरंग हलोरै
दादुर मोर और झिल्लीगन दमकत दामिनि दरसै
यह सावन का षूव तमासा रसिकनि को रस वरसै
॥ ८५ ॥

॥ सरद ॥ छप्पै ॥

अमल नीर नद नदिन सजल सर सुंदर सोहे
सरद काल कै ठिठुरुन भी तनमन कौ बहुत विमोहै
कुमुद रूप चम्पक कनैर वन विविध फूल फल
दान भोग सब करहिं करहिं सव आस पितर जल
इहि समय सदन कोई तजत नहिं तुम तो मदन गोपाल हो
रितु रसद रास मंडन रसिक सुव्रज वालनि उरमाल हो
॥ ८६ ॥

|| चौबोला ||

मिलि दामिनि घन घोर घोर जल झकरि करत झरि भारी
भरि भरि उमगि चलत सर सरिता अधिक रीत अंधियारी
झिल्लीगन झनकार करत अति हित दादुर कों कांदो
सुनि मनभावन रस उपजावन तजी भौन ना भादो
|| ८७ ||

जलधर सेत सोत तजि घुरवा कहु वरसत कहु नाहीं
अथ वत सूर प्रगट नभ लाली चंद निसा सरसाही
पिंड प्रदान देहि पितरन को विप्र भोग कौं चस्को
तजि पिय भौन गौन नहिं कीजै क्कार कलपतरु रसको
|| ८८ ||

|| छप्पै ||

वन उपवन छवि देत विविध फल फूल ललित तरु
तपत भान नभ मंद दिवस लघु निसा वहत अरु
अमल चंद कर प्रवल कमल दल दलित सरनि सर
कुमुद वृंद आनंद निरषि सानन्द निसाकर
इहि समय मदन दारुन दवन तजत भवन कह रसिक पति
हरसंत सकल सरसंत सुष यह हेमंत विनोद अति
|| ८९ ||

|| चौबोला || || ९० || + (||९१||)

जल थल अमल चंद कर सुंदर मंदिर चित्त चितेरे
न्हान दान करि ध्यान करत नर दीप दान के हेरे
ठाठि जोरि पिय करि बहु मंगल श्री राधा वर भजिये
काम भवन मनरमन मास यह कातिक कंत न तजिये
परम पुण्य दिन प्रगट अंस हरि रवि दच्छिन दिसि आये
सीतल सलिल प्रान सुष उपजत वन उपवन छवि भाये
राज चहत राजनीति पर सर लगि लेत मवासा
अगहन गहन काम मनमोहन देषौ षूव तमासा

॥ छप्पै ॥

सीतल सलिल सुभाइ सीत जुत वायु वहत अति
वरषत चारिहु तरफ वरफ निसि सरस सुनहु पति
तूल दुकूल सनेह देह सुष गेह सकल हित
वासर वढ़त विनोद होत रस रंग विविध नित
इहि समय सुरति मंडन रसिक सुरसिक राई तिन लेहु रस
गोपाल सु जोवन छत्रपति सु सिसिर सनेहनि होहु वस
॥ ९२ ॥

॥ चौबोला ॥

वरषत ओस घनै अति सीतल पास अनल हित लागै
दिन लघु दीरघ राति कटत नहिं कवहूँ काम जगावै जागै
तूल तमोल तेल तरुनी हित अधरामृत किन चूसै
छूटा चाकर पेट दारिदी पूसै चलै न झूसै
॥ ९३ ॥

सीतल सलिल सीत जुत मारुत तरनि मंद तपकारी
न्हान दान जप नेम धरम दिन राग रंग निसि भारी
भावत सैन सुगंध सुंदरी सुनत वसंत सुहाये
नाह माह नहिं गवन कीजिये भवन रवन मन भाये
॥ ९४ ॥

होत वसंत माघ आध तै ग्रीषम चैत सु आधे
षटरितु भेद जानि इहि भांतिन विलसत रस हरि राधे
तिन प्रताप गोपाल सुकवि रुचि राजमिंघ हित भाषे
जुग जुग जन अरविंद सुजस को ताहि विरदरस चाषे
॥ ९५ ॥ (॥ ९६ ॥)

वारह मास छरितु वहु भाँतिन छके रसिक रस छाजा
समा विलास लेत सव षूवी राजसिंघ श्री राजा
वरने विविध कृष्ण रस लीला ललित सुकंज विलासा
दिन दिन जय गोपाल सुमति सौ देषै षूव तमासा

।। दोहा ।।

षट रितु षड पद से रमे नव कुंजनि गोपाल
षट विधान छवि माधुरी निरषि छके व्रजलाल
।। ९७ ।।

।। छप्पै ।। ।। ९८ ।।

घन दामिनि वग पंक्ति मोर पंकज मराल गन
तन पट सीप जमाल मुकुट लोचन गति मोहन
नील चपल इक भेल नचत प्रफुलित सुमंत रस
पावस अति चल सुभ्र मंजु गम्भीर प्रेम रस
आरम्भ अमित प्राविट अभय सु प्रातःकाल कलरव सहित
षड्रिपु विघ्न हरन हरि ध्यान ध्यात कवि गोपाल नित

।। दोहा ।।

मनमोहन राधा निरषि रहे मनहि मन मोहि
अंग अंग पर वनि रहे षट् विधि सोभा सोहि ।। ९९ ।।

।। छप्पै ।।

मृदु मृग इंदु उरग हैं प्रगटे ते कराल अति
कच आनन दृग कांति कटिसु है अनुपम मति गति
स्याम सरस सिसु डाह चलति है चाल चलित भर
सरल अमल वन ओप क्षुधित वहु मंदर सुंदर
द्रुम चलति सुषोउ सचल द्रुति सुगति कंदर सुंदर गवन
षट विधि विधान गोपाल भनि सुरमहि रसिक राधारमन
।। १०० ।।

।। दोहा ।।

वरने कुंज विनोद यो मान विरह श्रृंगार
अव वरनत गोपाल कवि वीर सूर दातार ।। १०१ ।।

।। इति श्री हैहय कुल कमल प्रकास भास्कर प्रताप राजा राजसिंघ चूड़ामनि चानक गोपाल विरचिते विनोद सतकं समप्तम् ।।

वीर शतक का प्रतिपाद्य

कवि ने श्रीराम व उनके गुणों का स्मरण कर वीर शतक का प्रारम्भ किया है। वीर शतक में राजा राज सिंह को, जो गोपाल मिश्र के आश्रयदाता थे, गोपाल मिश्र ने वीराधिवीर की पदवी दी। कवि कहता है कि राजा राजसिंह राजधर्म का पालन करते हैं। कवि ने छः प्रकार के वीरों का उल्लेख किया है- सत्यवीर, दानवीर कामवीर, तपवीर, समरवीर तथा विद्यावीर। इस शतक में इन वीर-प्रकारों के राजाओं के दृष्टांत हैं; जैसे मोरध्वज को सत्यवीर के रूप में रखा है। राजा मोरध्वज ने सत्य की रक्षा के निमित्त अपने पुत्र ताम्रध्वज के शरीर का दान किया। इस शतक में कथित वीर पुरुषों के कई सम्बद्ध दृष्टांत रखे हैं। दानवीर के रूप में मोरध्वज की कथा सविस्तार वर्णित है। 'हिंदी ग्रंथ अकादमी' रायपुर से प्रकाशित 'छत्तीसगढ़ समग्र' में मोरध्वज की कथा आरंग से व प्रकारांतर से रत्नपुर से जोड़ा गया है। गोपाल कवि ने भी इसे रत्नपुर की घटना बतायी है।

कवि ने सभी कर्मों को तीन श्रेणियों में बाँटा हैं- सात्त्विक,राजसी तथा तामसी। राजा बलि के यज्ञ में भी श्रीकृष्ण ने वामन रूप धारण कर लीला की है। इसी तरह,राजा बलि को श्रीकृष्ण ने आशीष दिये। उत्तानपाद कामवीर के दृष्टांत हैं। दुरवासा, ध्रुव, दत्तात्रेय, कपिल, सनकादि, अष्टावक्र आदि श्रीकृष्ण द्वारा उपकृत हुए हैं।

क्रमशः

१०

वीर शतकम्

॥ चौबोला ॥

जय रघुवीर भीर भय भंजन धनु कमान धनुधारी
सीता वर सुंदर श्रीवर वर मंगल वर सुषकारी
सकल धर्म वर भूमि भूप वर समर सुभट वर सोहै
कलप लता वरदान मान वर तृभुवन वर मन मोहै
॥ १ ॥

वरनत वीर सतक वरदायक समर वीर रस वानी
साहस वढ़ै सदा सुभटन को पानी वढ़ै कृपानी
वीर भूमि भूवपाल भोगवत वल वीरज छवि छाजै
राजसिंघ वीराधिवीर नृप सदा राज श्री राजै
॥ २ ॥

जै जै वीर भये वसुधा में तिन कीरति है छाये
कह करतूति अभय रज तातें अपने साक चलाये
वाने विरद लाज तें भूतल वाढ़ै सुजस विलासा
सूरज मंडल वेधि सूर सव देषै षूव तमासा
॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

राजस तामस सत्त्विक होवै तृविधि विषै सव कर्म
धरे धरनि संसार है आप आपने धर्म
॥ ४ ॥

॥ चौवोला ॥ ॥ ५ ॥

सास्वत धर्म भोग सव भोगैं राज धर्म भुव पालै
तामस कर्म तेज ते अपने आधिक जात पतालै
तृभुवन तृगुन विलास करत नर वल वीरन के आसा
वीर भूमि भूव मंडल कहिये जिससे षूव तमासा

महावीर वीराधिवीर जे महिमंडल के भोगी
कोप उग्र तपसा वल तपते जालिम जुवती जोगी
कर रन रंग जोर रजता वल करति करत प्रकासा
मंडल मारतंड के वेधत अैसा षूव तमासा
॥ ६ ॥

महाराज राजाधिराज जे भये राजकुल भारे
भाँति भाँति पुरिसारथ करि करि अपने पैज सुधारै
तिनके चलत आज लौं कीरति कथा पुरान वषाने
सव देषा तिन षूव तमासा जिन षूवी पहिचाने
॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

धर्मवीरता सूरता रजता उत्तम धारि
राजनीति वल राज करि सकै पैज नहि हारि
॥ ८ ॥

॥ कवित्त ॥

धरनि के धरि अवतार धरा धीस हैं
सीसन को डारैं वगतीस कै सरम कों
रितु करि जाने तन पैज के गुमान ही में
हिम्मति समेत जाने रज के मरम कों
कहत गोपाल दुज धेनु प्रतिपाल हेत
दोउ लोक लीन्हें जीति पदवी परम को
दै सषि मारतंड मंडल को जात वेधि
धन्य महिमंडल मै छतृया धरम कों
॥ ९ ॥

जाह राज हान किरवान के गुमान करि
घोर घमसान जितै सुभट समाज ते
पैज के निधान जानि सकल निधान दै दै
दान वहु धान घरा कीरति के काज तें

सरवस हारे सत हारे ना समय पाई
कहत गोपाल राजे बीजी वं च वाजते
पुहमी प्रताप को प्रकास करि भीरी सूर
वीरन को वाधे वीरवाने राजे आज ते
॥ १० ॥

॥ चौबोला ॥

सात वीर सत्याधिक कहिये दानवीर व्रतधारी
कामवीर कामिक महिमंडल तपी वीर तप धारी
समर सूर संग्राम वीर कहि विद्यावीर वषाने
यो षट वीर और पुनि दम्भिक आडम्बर करि जाने
॥ ११ ॥

॥ सात वीर ॥ दोहा ॥

मोरध्वज राजा भये सत्याधिक तें वीर
जज्ञ समै दुज दीन कौं किय संकल्प सरीर
॥ १२ ॥

॥ चौबोला ॥

मोरध्वज राजा के मष में अर्जुन कृष्ण सिधाये
जज्ञ पुरुष अति वृद्ध रूप धरि भूप सभा मह आये
मधुर वेद धुनि सुमन मनोहर नृप सव भये हुलासा
वूझत भेव हेत कहि वहुतै औसा षूव तमासा
॥ १३ ॥

॥ छप्पै ॥ ॥ १४ ॥

दै असीस दुजराज मधुर धुनि वेद उचारैं
थकित भये सुनि विप्र हरषि आसन वैठारैं
कहे नृपति करि जोरि कहाँ ते आगम कीन्हें
सुफल भये सव काज आइ जव दर्शन दीन्हें
अव लेहु दान मन काम भरि दै आसिस संतुष्ट मति
निजु नाम कोन किहि देस थल सुवेद वृद्धि दिन वृद्धि अति

॥ सवैया ॥

काँपत देह जरा परिपूरन सेत तनू रूह सो सरसाये
आनन दंतन देषत लोचन देह तु चातु चकै वहुधाये
टेरि कहे श्रुति नीठि सुने अरु षाँसत विप्र हसै मन मोये
अद्भूत वेदनि वेद तहै लषि भूप महामन ही हरषाये
॥ १५ ॥

॥ दुज उवाच ॥ चौबोला ॥

नाम कृष्न सर्मा सव भाषै धाम द्वरिका जानों
प्रोहित जदु वंसी सव ही को सदा अचाजी मानों
कोटिन भाँति लोभ नहिं मेरे वेद वृत्ति की आसा
व्याहन पुत्र देस तजि आयो देषनि षूव कमासा
॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

व्याहन आयो पुत्र कों सुनि मोरध्वज राज
घेर्‌यो सुत को सिंघ है कारन भयो अकाज
॥ १७ ॥

॥ छप्पै ॥

वन मै घेर्‌यो सिंघ वालकहि षान विचार्‌यो
हो अपनो तन दै जुतहि वह भाँति न हान्यो
मोहि कह्यो ते वृद्ध तरुन श्रोनित है याकौ
जो मांग्यो वह भच्छक हौ मैं कहा सु ताको
यह वोलि विप्र सोकित भयेउ सुफिर फिर स्वासन
अव क्यों पहुँचो द्वारामती सु यह संकट नृप को हरै
॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

कहा वषानौं भूप सो वड़ी लाज की वात
मोहि दुहू दिसि कठिन भो कहत हिये अकुलात
॥ १९ ॥

॥ राजोचित ॥ सवैया ॥

भूप कहे दुजराज सुनों निजु
वात कहा तिहि आयसु दीजै
है सव देसरु को सज हाल
गिरानी औ पुत्र पदारथ लीजै
जौन उवारि सवै दुज गाड़ तौ
धीर कहा जग में धग जीजै
वेगि कहौ सुकरै अब ही
वह आपने काजहि लाज न कीजै
॥ २० ॥

॥ दुजौ उवाच ॥

भूप वड़े तुम भूतल मै यह
वात अगाध न जात कही है
काँपति देह सनेह भरे करुना
अति मोहि यमै उमहे है
देह धरे जग दुर्लभ जोगिन
ताहि उवारि रहे सव को हैं
यो कहि ब्राह्मन कौ बहु बहु भाँतिन
लोचन नीर प्रवाह वहे हैं
॥ २१ ॥

॥ राजोवाच ॥ दोहा ॥

भूप कहे दुज देव अव हिये धरौ तुम धीर
धन मन धन सव रावरो कहौ आपनी पीर
॥ २२ ॥

॥ सवैया ॥

है सत जज्ञनि को फल येक
सु वेदनि मै परमारथ गायो

सो हम नेम धरै मष ठानि
सु चाहत हौ तुम सत्तउ गायो
होइ सो होइ की येहि वनै विधि
कंक गोपाल न जात मिटायो
राज सनेह कहावहु देह जु
व्राह्मन गाई के का मनआयो
॥ २३ ॥

॥ दुजौ उवाच ॥ चौबोला ॥
धन्य सुवंस धन्य तुम राजा धन्य जज्ञ व्रतधारी
धन्य क्षत्रिया धर्म तुमहि मै को सम करै तुम्हारी
कहत संकोच होत अति हमको यहै वात सुनि लीजै
आधो देह सिंघ तुम चाहै दिये जाइ तौ दीजै
॥ २४ ॥

हंसि बोले राजा सुनि तवही सव कीजै मन भाये
यहै वात कों व्राह्मन हम सों येतक कहा छिपाये
धन्य कलेवर करे कृतारथ हमहि सुकृत की आसा
करे समर्पन भूप तवहिं तन अैसा षूव तमासा
॥ २५ ॥

॥ छप्पै ॥ ॥ २६ ॥
सुनत सभा हलकम्प भयउ अंतःपुर षल भल
वड़ अचरज भये वात सहर माच्ओ सव हलहल
व्राह्मन वृद्ध विरूप अर्ध राजा तन मांग्यो
श्रवन भनक के परत सवनि सायक सो लाग्यो
गोपाल चरित अद्भुत अमित सु परमारथ अति कठिन मत
महिपाल रतनपुर मुकुट मनि सो मोरध्वज धनि धर्म रत

॥ चौबोला ॥
मंतृन कहे सुनो हो राजा आपु कहि न कछु छाने
काया राषे धरम करन को वेदन यहै वषाने

दुर्लभ रतन देह भूपन के करत जाहि जग आसा
ब्राह्मन भेष सत्रु यह जानो षूवी करत विनासा
॥ २७ ॥

॥ राजोवाच ॥ कवित्त ॥
आदि हम राजा राजनीति मत जानत हैं
सवही को हेत अनहेत पहिचान्यौ है
साधत चलौगे अंत साहिबी के साँची तुम
धृग ऐसे नेह को रे धन्य करि मान्यों है
काहू के भरोसे सत सुकृत धर्‌यो न पैज
आपने गुमान करि जज्ञ हम ठान्यो हैं
दीन्हें है उठाई मष थल ते विमुष नर
कायर न काया रे अमर करि जान्यो है
॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥
सुनि रानी कुसुमावती कही सुनौ दुजराज
है अरधंगी भूप कौ लै करिये सुभ काज
॥ २९ ॥

ब्राह्मन माथ डोलावते वोले राजकुमार
पिता पुत्र कछु दुई नहीं करिये यहै विचार
॥ ३० ॥

ब्राह्मन चाहत छोड़ि मष गमन आपनो षूट
मष में सत्त डगाइ के ब्राह्मन चाहत लूट
॥ ३१ ॥

॥ चौबोला ॥ ॥ ३२ ॥
ब्राह्मन कहै सुनो हो राजा दुषित दान नहिं लैहौं
जामैं होइ कलपना तुमको का कीरति भरि पैहौं
वृद्ध समय पातक की गठरी धरौं मुंड सविलासा
दुहू लोक मै ठौर नहीं जग देषै षूवतमासा

।। दोहा ।।

राजा इह विध दान दै वाजै द्वार निसान
नाचै गावै पुर सवै कै मोहि दीजै जान
।। ३३ ।।

जोई विधि ब्राह्मन कहै मोहि मैं सोई करौं उपाय
कठिन धर्म गति जानि कै करवत लये मंगाइ
।। ३४ ।।

।। छप्पै ।।

मंडप हरित प्रसून विविध पुर मंगल ठानै
वाजन लगे निसान भूप मन आनंद माने
रानी राजुमार सीस नृप करवत धारे
कहे सभा सव कोपि दोषि नहिं ब्राह्मन मारे
नहि राजहिं रानीहि साष कछु सुकाल भूपहिं गिल्यो
कहिय काहि कहि जात नहिं सु जैसे कौ तैसो मिल्यो
।। ३५ ।।

।। दोहा ।। ।। ३६ ।। + ।। ३७ ।।

सुनि राजा अति कोप तै दुष्टनि दयो उठाइ
जग्य भंग क्यों कीजिये देह जाइ तो जाइ
अरुन उदय करवत लये करिकै रविहि प्रनाम
विप्र देव यह देव लै करिये पूरन काम

।। छप्पै ।।

तव रानी औ कुवँर सीस नृप करवत लीन्हें
पर्‍यो जु हहाकार भूप हरसित मन लीन्हें
धस्यो कंठ लगि सार धार जल लोचन वामे
ब्राह्मन चल्यो रिसाई अव नाना धर कामे
यह दुषत दान सव व्यर्थ फलसु यह कारन सव हम कहे
किय जज्ञ अडम्बर डंभ वहु सु अव निहचै हो सवल हे
।। ३८ ।।

तब रानी अकुलाइ धाइ ब्राह्मन कह रोके
सुनो देव यह भेव नयन जल इहि विधि मोहे
रोवत आधो देह नेह येकै संग पागे
धन्य सो दाहिन अंग जौन दुज कारज लागे
इहि भाँति कहत कुमुदावती सुनत विप्र संतुष्ट हुव
तव वोलि स्वस्ति आनंद मति सु मोरध्वज धनि जज्ञ तुव
॥ ३९ ॥

॥ कुंद छंद ॥

तब जज्ञ पुरुष जगदीस आप
धरि दिव्य रूप कीन्हें मिलाप
नव नील कलेवर स्याम अंग
अभिराम सकल सोभा तरंग
कर शंष चक्र भुज चारि धारि
छवि भूप रहे अद्भुत निहारि
॥ ४० ॥

॥ दोहा ॥

दरसन पावत कृष्ण के दिव्य रूप भये भूप
चरन कँवल गाठे गहे दम्पति अद्भूत रूप
॥ ४१ ॥

॥ चौबोला ॥

अति अद्भूत वदनारविंद दुति देषत दम्पति मोहे
संष चक्र धर गदा पद्मकर भुजा चारि सों सोहे
मंजुल मोर मुकुट रवि कुंडल उर वन माल विराजे
अंग अंग अभिराम मनोहर कोटि काम छवि लाजे
॥ ४२ ॥

॥ दोहा ॥ ॥ ४३ ॥

दिव्य ज्ञान देषत भये कोटिन जज्ञ समान
अस्तुति करे अनेग विधि जै जै कृपानिधान

॥ छप्पै ॥

सुनि अस्तुति देवाधिदेव दीन्हें वरदाने
महाराज राजाधिराज कहि आयु वषाने
सदा रहै भुव वंस विरद वानै निजु कीन्हें
काली कान्ह कहाई संष पंचानन दीन्हें
मम लोक अटल ध्रुव समर हहु सुजस जुग पठहि सुर
इहि भांति दये वरदान प्रभु सुराजहि प्रभुता रत्नपुर
॥ ४४ ॥

॥ दानवीर ॥ चौबोला ॥

राजा वलि के होत जज्ञ मै वावन रूप मुरारी
हरषित भूप सभा मह वैठे मधुर वेद धुनिकारी
सुनि संतुष्ट नृपति हँसि वोले लेहु दान मन भाये
अव लौं रहे कहा किन कहिये वहुत कृपा करि आये
॥ ४५ ॥

॥ कवित्त ॥

राजा के वचन सुनि वामन विहँसि वोले
निपट अजाची हम काहू के न जात हैं
कामना कलेस करि चाहत कछू न दान
थोरे करि भाव देत वहुत अघात है
हाथी घोरे राजपाट कोटिन कनक मानि
करन कौ हेत कहा सोभा सुष सो सकत हैं
पठिवे को वेद कुटी चाहत निरंतर है
वसुधा को औठ पैड मागत सकत है
॥ ४६ ॥

॥ दोहा ॥

वलि वामन के वचन सुनि कहौ सुनौ दुजराज
इतने को कह दीजिऔ कहत सुनतहू लाज
॥ ४७ ॥

॥ कवित्त ॥

रतन जराइ के सिंहन न मागे कोटि
कोटि हेम मेरु मनि मानिक सम लीजिये
लीजै नाग लोक नर लोक सातौ नाक लोक
लीजै सुष मानि हम देत जैसे दीजिये
लीजै प्रभुताई सव ऊपर गोपाल मनि
येक मति लीजै सति जामे मष कीजिये
थोरे मुष थोरे दान जाँचत वड़े न आइ
लाजहू न लागी हम याको कहा कीजिये
॥ ४८ ॥

॥ दोहा ॥

वलि राजा के वैन सुनि वावन कहे विचारि
चित भरि भोजन कीजिये वित भरि लीजे भारि
॥ ४९ ॥

॥ सवैया ॥

हैं हम सेवक मान मही मती
दान कहा हम ले सु करेंगे
वैठन हू नहि ठौर मिलै कहुँ
सम्पति जेरि कहा सुधरेंगे
काम न क्रोध न लोभ न मोह न
क्यों प्रभुता पद को विचरेंगे
व्राह्मन वेदनि वेद न हार
सु दानव देवन साथ लरेंगे
॥ ५० ॥

॥ चौबेला ॥

निपटै तनक देषि कै राजा करुना रस विहसाने
भावै जहाँ मायि महि लीजे सहित दक्षिना दानै

कौन सरूप जज्ञ मह आये ताते करत दिलासा
ना तरु दूरि सभा तैं करते लषिते षूव तमासा
॥ ५१ ॥

वावन घोरे दान वहुत दुष वहुत दान का करते
हम आधीन येक आदर के अभिमानी सो डरते
जाते जाहि कलपना उपजै ताते रहत उदासा
कहिये जग्य आपु मन मनमाने हम लषि चले तमासा
॥ ५२ ॥

॥ दोहा ॥

राजा वोले विहसि के लेहु माप दुजराज
दैहै तुम्हरे चरन भरि सरिअै अपनो काज
॥ ५३ ॥

॥ कवित्त ॥

बोले गुरु वलि सो विचारि भूपन को दीजै दान
कौन भेव देषो यह वेदऊ चतुर है
चातुरी सो मांगतु है आतुरी रतीक नाहि
वातन ही लाई महा मन ही हँसतु है
जाने यह कौन है कहाँ ते आयो जग्य माह
दोनिप तुमहि कछु छल सो करतु है
ठौर कौन टोरो टेक टारि किल पोटो आपु
छोटो मोटो षोटो अति जानि सो परतु है
॥ ५४ ॥

॥ दोहा ॥

सुनतहि वलि संकल्प कौं लये कुसोदक हाँथ
वावन बोलत स्वस्ति कौं गिरै न जल इकसाथ
॥ ५५ ॥

॥ छप्पै ॥

गुरुझारी मैं पैठि रोकि जलधारहि मोरे

हंसि वावन कुस वज्र छालि लोचन इक फोरे
वढ़ि कर तहि संकल्प अल्प वपु अद्भूत वाढ़े
आदि पुरुष गोपाल जज्ञ मै विहसत ठाढ़े
चकृत महीप मांपत भयेउ तीनि पैज तृभुवन दियेउ
जल थल समस्त हलवल मचत सुवामन जग पावन कियेउ
॥ ५६ ॥

॥ सवैया ॥
मापि रसातल सूतल भूतल
धूतल लौं धरि कै वपु धार्यो
मंडित कै सु अषंडित्त मंडल
ब्रह्म कमंडल ते जल धार्यो
चकृत चाहि चरित्र गोपाल
सुदेवनि हेत अदेवनि टार्यो
वावन पायन लोक करे हँसि
हाथ पसरत पाहु पसार्यो
॥ ५७ ॥

॥ चौबोला ॥
तृभुवन तीनि पैड करि वावन वलि सों वोले वानी
आधौ कहा देहुगे राजा नहिं तुमसे कोइ दानी
अद्भुत कर्म देषि कै भूपति कर्यो सत्त परगासा
मापहु पीठि ओडि भये ढाढ़े अैसा षूव तमासा
॥ ५८ ॥

धन्य धन्य ते सात्यिक राजा त्रिभुवन कीरति गाये
वावन पीठि मापि कै तवही नृपहि पताल पठाये
मांगु मांगु वर रघुपति वोले करि करि वहुत दिलासा
हम हारे जीतै तुम सबको जाहर षूव तमासा
॥ ५९ ॥

॥ छप्पै ॥

जै जै, जै जगदीस जगत चिंतामनि वावन
पार व्रह्म व्रह्मादि देव कीन्हें तन पावन
नारायन नरहरि अनंत प्रभु अंतरजामी
सर्वभूत सर्वज्ञ गर्व गंजन तुम स्वामी
गोपाल विरद वर देहु यह अभय द्वार पालन करहु
दैहो न जान अव और कहूँ येक धर्म धारन धरहु
॥ ६० ॥

॥ चौबोला ॥

हरष होइ तव वावन वोले मोल हिये सव ही ते
सुफल होइ मनकाम तिहारे हम हारे तुम जीते
दुहू लोक तुम अलं इंद्र पद सदा वढ़ै सविलासा
आये छलन छले होनी के देषै षूवतमासा
॥ ६१ ॥

॥ कामवीर ॥ चौबोला ॥ ॥ ६२ ॥

नृपति उतानपाद के सुनिये रानी द्वै मन भाये
जेठी पाट वर्धना जानौ धुवल हरी के जाये
षेलत राजकुमार येक दिन पिता सिंघासन हेरे
वैठत देषि गोद अनषानी तुम नहिं जाये मेरे

॥ सवौया ॥ ॥ ६३ ॥

ध्रुव के वैठत ही भूपति के गोद माहि
भरी अति क्रोध विलोकत रानी
जद्दपि राज कुमार कहावत
चेरि के जाये जनानहु जानी
यो कहि के तिन बांह मरोरि
करी तिन दूरि षरी रिस मानी
रोवत बालक जात भयो
लषि मात हिये करुना अधिकानी

॥ दोहा ॥

धृग जननी धृग जनम को धृग जीवन जग पाइ
वैठत राजा गोद मैं रानी दई उठाइ
॥ ६४ ॥

॥ छप्पै ॥

नैन पोंछि मुष चूमि मात भई गोदहि लीन्हीं
रह्यो पुत्र चुप ठानि हमें नहि सेवा कीन्हीं
परम पाप ते हौं जु भई आधीन पराई
क्यों तुमको अव होइ सकल भुव राज वड़ाई
गोपाल भगति पूरन विना प्रभुता पद दुर्लभ गुनौ
संसार सोक संताप कै सु हरनहार नरहरि सुनौ
॥ ६५ ॥

॥ चौबोला ॥

सुंदर राज कुमार मातु की सुष मनि छोभ की वानी
जननी चरन वंदि कै निकसे करनवास वन ठानी
सुनतहि भूप धाइ ध्रुव रोके बहुविधि करे दिलासा
मानत नाहि भूप की वातन ऐसा षूव तमासा
॥ ६६ ॥

अर्ध राज सव राजपाट दै राजा तनमन हारे
कोटि भाँति सिष सुने गुने नहि ध्रुव निहचे पगुधारे
जात जात वन षंड येक में नारद मिले हुलासा
तिन उपदेसन पाइ पठाने ऐसा षूव तमासा
॥ ६७ ॥

॥ दोहा ॥

मधुवन जमुना रम्य तट महा गहन निर्मान
मुनि के मंत्र प्रयोग करि ध्रुव धरि वैठे ध्यान
॥ ६८ ॥

|| सवैया ||

सुंदर मूरति वंत महामन काम कहा करि आसन मारी
नींद न भूषन प्यास न त्रासन नासन के सव नेह विसारी
येकहि तत्त्व गोपाल विलोकत लागि रही निहकेवल तारी
वीर महा सुकसार मनोहर राजकुमार वड़े तपधारी
|| ६९ ||

|| छप्पै ||

सात वर्ष कौ ध्रुव सुध्यान धरनी धर धार्‌यो
महावीर तप उग्र टेक कवहूँ नहि टार्‌यो
गरुड़ चढ़े गोपाल तहाँ आपुहि चलि आये
लौ लागी छूटै न संख प्रभु श्रवन वजाये
जागे विलोकि जगमगति मय सु सकल लोक सुंदर दरस
वदनारविंद मकरंद मय सु लोचन ध्रुव भृंगन सरस
|| ७० ||

|| दोहा || || ७१ || + || ७२ ||

ध्रुव धाये हरि चरन कौ हरि लीन्हें हिय लाइ
कहा चाहिये आपु को सो कहिये हरषाइ
सकल कामना कलप तरु प्रभुताई मनकाम
हो तपसी कामीक महा चाहत हो सुषधाम

|| कवित्त || || ७३ ||

तीनि लोक ऊपर प्रताप कों प्रकास करि
तिनके करी न वेदवानी उचरत है
कामना करत करें काम ना के चूड़ामनि
जाके मन कामना ते कारज सरत हैं
भनत गोपाल के ते विधि के कलप जात
जात वरदान देव ध्रुव ना टरत हैं
येते मान अद्भूत सु दीन्हें हैं अटल पद
जाकों ससि भानु परदच्छिना करत हैं

॥ चौबोला ॥

दुरवासा दत्तात्रय कहिये और कपिल मुनि जानौ
नौ जोगी सनकादिक कहिये सुक तपवीर वषानौ
अष्टावक्र आगस्त जानिये विस्वामित्र गनाये
ये तपवीर महा जालिम हैं कठिन किये तपसाये
॥ ७४ ॥

॥ अथ समरवीर ॥ दोहा ॥

समरवीर कोटिन भये होत जात जुग चारि
रजवल राजस धर्म वल सके पैज नहिं हारि
॥ ७५ ॥

॥ चौबोला ॥

महावीर लंकाधिप रावन समर राम सों माड्यौ
टूक टूक मनु भयो षेत पर टेंक नेक नहिं छाड्यौ
अंतहु काल काल मुष परतो सवै निघटतौ पानी
देषि षलक का खूव तमासा राषै जुगुति निसानी
॥ ७६ ॥

महावीर जालंधर कहिये देव दानवनि डाह्यो
सिवा हेत संग्राम सूर ह्वै शिव सों वैर निवाह्यो
षंड षंड ह्वै षस्यो षेत महराज राजवल आसा
साहसीक जोधा जग ऊपर देष्यो षूव तमासा
॥ ७७ ॥

॥ जथा ॥

पैज प्रति पाले उर साल उरसाले वोल
वोलत रसालै दीन ऊपर सहेत हैं
साहस न हारे सार झार के मुहारे पैलि
सुभट वितारे षैल भेल करि षेत हैं
सोइ सकवंधी महि मंडल गोपाल कवि
जिनकी चलत जस जुगन समेत हैं

रज के गुमान महि कीरति विराजमान
राजा रजपूत यों सपूत सोभा देत हैं
॥ ७८ ॥

॥ दोहा ॥

पूरन पैज प्रताप ते रज राजस परगास
दुहूँ लोक कीरति वढ़ै लहै अभै पद वास
॥ ७९ ॥

॥ कवित्त ॥

पीठ दै न जानै परस्वारथ ही ठाने
ठीक वात पहिचाने राषै वंस को सरम है
वांधे वीर वाने जहाँ घुरत निसाने वरे
घोर घमसान धाये पैजनि परम है
सोई सक वंधी सार झारन के झारे झेलि
वेधि वेधि जाने रवि मंडल मरम है
सवते कठिन येक कहत गोपाल कवि
धरनी में राजा रजपूत कौ धरम है
॥ ८० ॥

॥ अपरंच ॥

वंव के वजेते सूरवीर के गजे ते पर
फौज के सजे ते तेग वाहे वल जूत है
स्वामित सहेत जीति सुर षेत जोगिनी
जोगिनी अघावै नाचे भैरो अवधूत है
भार भुजदंतन के पैज कुल मंडन के
कहत गोपाल कवि कीरति अकूत है
धन्य धन्य राज धन्य धन्य ब्रह्म वंस लाज
धन्य धन्य राजा धूंन्य धन्य धन्य रजपूत है
॥ ८१ ॥

॥ चौबोला ॥

महावीर वीराधिवीर जे समर सूर भये राजा
अजहूँ चलत साक महिमंडल दुहूँ लोक छवि छाजा
छत्री धरम धरे दिठ कै दिन करि रजता की आसा
कीरति अटल पैज वल प्रगटे जाहर षूव तमासा
॥ ८२ ॥

॥ जथा ॥

सवतें अमोल अति बोल है वड़ेन ही के
याही तें वड़ेई प्रतिपाल कीन्हें जात हैं
रहिवे को कीरति अकीरति अवनि माह
और सब साहिवी के साथ ही विलात हैं
जोई कांछ कांछिये सो चाहिये गोपाल मनि
हेलिवे को सार झार छतून के गात है
राजन के वात गये राजन के दाँत ये तो
वाहिरे निकसि कहूँ भीतर समात है
॥ ८३ ॥

॥ दोहा ॥

मंत्रि वली काया वली महा तपी वलवीर
देव सक्ति वल नृप भये धर्म धीरता धीर
॥ ८४ ॥

अव यह समय महीप जे निराधार धरि धीर
साहस मंत्र विचारि तैं विचरे मति वल वीर
॥ ८५ ॥

॥ जथा ॥

राषन को राज साज साजत सकल भाँति
सहन भंडार वड़े राजा जोरि जाने हैं
पालि पालि घोरे जोर जंगल को वलकत
उमहे सिपाह झेले लोह मरदाने हैं

गठन गठोई गाठे भरिकै अरावे जोर
भरि भरि लेत पर फौजन के नाथे हैं
कहत गोपाल महिमंडल के भूप सुनौ
मामला के अवसर हि चाहिये षजाने है
॥ ८६ ॥

॥ दोहा ॥
अव राजन के वलय है प्रजा नीति भंडार
अव गढ़ गाढ़ लोहान सो पले सिपाह अपार
॥ ८७ ॥

॥ जथा ॥
मोती मन मानिक जराय जर वाफ फवे
कंचन के भूषन विभूषन उछाह है
आसन सुषासन सिंघासन अवास आछे
आछे साहिवी के साथी लेत षूव लाह है
कहत गोपाल सव ऊपर सयाने भूप
सोधि सोधि सवन सों लेत अवगाह हैं
सार के वजे ते नोन षाई नर नाहन के
सरम समेत काम आवत सिपाह हैं
॥ ८८ ॥

॥अथ विद्या वीर ॥ दोहा ॥
वरने सुर गुर असुर गुरु व्यासादिक कविराज
जिन विद्या तिहु लोक मैं प्रगटे सव हित काज
॥ ८९ ॥
इंद्रजालि विद्यानि के जे साधक मतिधीर
जंत्र मंत्र आराधित जिनसों होवत ते मन वीर
॥ ९० ॥

॥ चौवोला ॥
इंद्रजाल विद्या के साधक महावीर हठधारी
जपवल सिद्धि करत साधक है इष्टदेव अधिकारी
मृतक सजीवन जीव मृतक करि अजरा रचै विलासा
साहसीक संकेत मरद मन जाहर षूव तमासा
॥ ९१ ॥

॥ छप्पै ॥
मारत मोहन मंत्र जंत्र उच्चाटन साधे
वसीकरन विधि कोटि देव देवी अवराधे
त्राटक चेटक कोटि जाग वहु भाँति मसाने
साधत सिद्ध समस्त वीर विद्या विन जाने
गोपाल अमित अद्भुत चरित सु कहै वरन तिन कौन अव
भुवलोक सकल आगम कला सु राम भगति विनु भार सव
॥ ९२ ॥

॥ अथ दम्भ वीर ॥ दोहा ॥
वीर कच्छ जो काछि नर होत समर गुत भंग
स्वयं घरम ते हीन जे तिनके सुनहु प्रसंग
॥ ९३ ॥

॥ जथा ॥
साहस विहीन सार झारन के झार ते
व्याकुल कपूत रजपूत जे मुरत हैं
साइँ के हरामी सैंर सेरन रंग काजरे
होत वैढ़ा मारिये त झाड़ी में दुरत हैं
कीरति को सुकवि गोपाल तासो दानलेत
जेइ मरदाने मरदानगी जुरत हैं
तासो अभिमानी जाके मुष ते न पानी जौन
षाइ नोन पानी कूर नोन सो घरत हैं
॥ ९४ ॥

।। दोहा ।।

इहि विधि वरने वीर षट चार्‍यो वर्न विचार
रहे आपनो धरम सौ सोई धन संसार
।। ९५ ।।

।। चौबोला ।।

पढ़ै वेद विद्या परिपूरन जथा लाभ सुष माने
पत्नी येक तदपि इंद्री जित समै इंद्र रस ठाने
दयासील संतोष दान मति करै महातप जोगै
अैसो रहन विप्र रहि जाने षूव तमासा भोगै
।। ९६ ।।

विप्र होइ सतकर्म आपनै संध्या धरम न जानै
पर निंदक द्रोही संतन के दयासील नहिं मानै
कपटी चोर कुटिल परपंची पतित महाधन सोगी
ये अपराध अगाध विप्र करि होहि नरक के भोगी
।। ९७ ।।

।। क्षत्री ।।

साहसीक सत्याधिक जानो सुमति कंत मति मारी
दान पुन्य तप तेजवंत अति विरज पैज पतिधारी
सूर सुभट संग्राम सरोत्तर सदा स्वाम हित काजै
सो छत्री लषि षूव लहाजा दुहूँ लोक जस राजै
।। ९८ ।।

मंत्री सुमति विचित्र जानिये करि संग्रह सव जानै
लेन दैन कुलकर्म धर्म रत वेद विप्र मत मानै
ध्यान दान पूजा व्रतधारी गुरु उपदेस विसेषै
अैसे वैस रहति ते अपने षूव तमासा देषै
।। ९९ ।।

॥ सूद्र ॥

स्वामित भाव गुरू के वंदन विप्र भक्ति हितकारी
दान धर्म व्रत दया भावरत सुमति सदा सुविचारी
सूद्र हृदय अति सुद्ध चाहिए सत्यसील हित आसा
चारहि वरन राह चलि जानै देषै षूव तमासा
॥ १०० ॥

॥ दोहा ॥

इह विधि चार्यो वीर के वरनै वरन समाज
रचना कवि गोपाल किय राजसिंघ नृपराज
॥ १०१ ॥

॥ खूबतमाशा की रचना लगभग १३० वर्ष पूर्व हुई थी ॥

॥ इति श्री हैहय कुल कमल प्रकास भास्कर प्रताप राजा राजसिंघ चूड़ा मणि चानक गोपाल विरचितायां वीर शतकं समाप्तम् ॥
॥ १० ॥ (श्रावन वद१३ संवत १८८७)

खूबतमाशा के रचयिता गोपाल मिश्र का वीर शतक के बाद उक्त माह व संवत का उल्लेख ग्रंथ-समाप्ति का सूचक है। अतः, उसके बाद कीर्ति शतक का आना क्या कवि के पुनर्विचार का परिणाम है ? और वह भी केवल ३० छंद ? बिलासपुरी कीर्तिशतक में भी केवल ८२ छंद हैं। जबकि खूब तमाशा के प्रत्येक छंद में १०१ छंद रखे गये हैं । इस कीर्ति शतक में लेखन-शैली गोपाल मिश्र की शैली से भिन्न नहीं है। गोपाल कवि का नामोल्लेख भी है। पर, कारण समझ में नहीं आता कि ८० छंदों वाला कीर्तिशतक खूबतमाशा में सम्मिलित क्यों नहीं किया गया । मैंने अपने शोधग्रंथ में कीर्ति शतक को सम्मिलित किया है और इस ग्रंथ में भी इसे सम्मिलित कर रहा हूँ। - डॉ. चंदेले ।

क्रमशः

कीर्ति शतक का प्रतिपाद्य

किन कर्मों से मनुष्य को कीर्ति मिलती है, इसका वृहद् विवरण कीर्तिशतक का प्रतिपाद्य है। इसी परिप्रेक्ष्य में कवि ने अनेक मानवीय व मानवेतर प्राणियों के दृष्टांत प्रस्तुत किये हैं। कवि ने प्रथमतः अवतारों को इसका दृष्टांत बनाया है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश या रुद्र के कर्म कीर्तिदायी हैं। कवि उनका कीर्तिगान करता है। केवल, ब्रह्मादि नहीं, उनके अवतारों को भी उदाहरण रूप में प्रस्तुत किया है। मत्स्य रूप,दनुज रूप,वाराह रूप वामन रूप, व्यास रूप, परसराम रूप, सहस्राबाहु रूप, राम, कृष्ण और यहाँ तक कि कलियुग के बुद्ध रूप में भी ब्रह्म का प्रकाश देखते हैं। मनुष्य योनि पाकर भी जो पुण्य कर्म नहीं करता, उसकी निंदा करते हैं। पौरुष के बिना पुरुष निंद्य है। पुरुषार्थ के बिना पुरुष निंदनीय है। परमार्थ छोड़ स्वार्थ में रमा हुआ व्यक्ति कतई कीर्ति का अधिकारी नहीं बन सकता। राजा धर्म की रक्षा के लिए शासन करता है, युद्ध करता है। वह कभी अपने वचन से डिगता नहीं। ऐसा आदमी ही कीर्ति का पात्र बनता है। क्षत्रियों का कठिन धर्म है, युद्ध करना। जीत कर वह कीर्ति, यश का भागीदार बनता है। धर्म की रक्षा हेतु मृत्यु की स्वीकृति कीर्तिदायक है; यह मार्मिक बात है। ध्रुव, प्रहलाद, सगर, भगीरथ, नल, हरिश्चंद्र, रामचंद्र, हनुमान, आदि ने अपने प्रशंसनीय कार्यों से कीर्ति पायी। कवि कहता कि दान से कीर्तिवृद्धि होती है। पुरुषार्थी, परमार्थी, दयावान,उदार, पुरुष ही कीर्ति के पात्र होते हैं। सारांशतः, सत्पुरुष ही कीर्ति के हकदार होते हैं।

क्रमशः

११

कीर्ति शतकम्

(विलासपुरी प्रति)

।। सवैया ।।

पूरन ज्योति प्रताप जगै जग
नाक रसातल भूतल भारी
रूप अनंत कलामय मंडित
आपु अषंडित वेद विचारी
अंस असेषनि कौ परिवेष प्रकास
गोपाल विसाल विहारी
कीरति सूरज मंडित मंड
सुधा धरि मंडल है उजियारी ।। १ ।।

।। दोहा ।।

नारायन की जोति निज जगत जीव प्रति लाज
अति विस्तृत कीरति कला कहत वरन गोपाल
।। २ ।।

।। चौबोला ।। ।। ३ ।। ।। ४ ।।

येकै जोति अषंडित मंडित पंडित वरन विचारै
व्रह्मा भेदनि षेद भेद करि विस्नु रुद्र अवतारे
कीरति प्रगट प्रकास हेत करि हद वेहद परगासा
पूरन अंस माह सव ठानै जितनै षूव तमासा
कीरति अजर अमर नारायन लोक लोक प्रति राजै

।। दोहा ।।

है कीरत करतव्यता करि जानै जिन कोइ
जुग जुग तिनके हेत कों वरसत है सव कोइ
।। ५ ।।

॥ घनाक्षरी ॥

साधि साधि तपसा कौ करि करि जोग जज्ञ
धरि धरि ध्यान जोति जग मैं निवास है
पूरन प्रताप तेज पुंज ते भवन रवि
व्रह्मा की सकति भाव सकति विलास है
साषी कमलासन की सासन है महाँ मंत्र
भनत गोपाल वेद विघन विलास है
तीन गुन तीन ज्ञान मारग विभाग तातें
तीनि लोक कीरति विरंचि कौ प्रकास है
॥ ६ ॥

कीरति अमर जुगनि जुग दोषौ चतुरानन की राजै
जितने रचे जहाँ कहु रचना तीन लोक छवि छाजै
अगम अपार अमर अमरत तै करत जाहि सव आसा
सुजस निसान दान मरदन के जिसमें षूव तमासा
॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

कीरत पाई करम तैं सवके वढ़त वढ़त वढ़ जात
कसिक कसौटी ठाहरे तव सव चित ठहरात
॥ ८ ॥

॥ चौबोला ॥

कीरति अमर देषियै और न कछु देषै कोई
अगम अपार जिनहु की महिमा तिनहु वीज जस वोई
धरि धरि देह पैज वल करि करि महाँ महाँ तप धारे
राषि जुगुनि जुग षूव निसानी अपने गुन विस्तारे
॥ ९ ॥

कीरति आदि विष्नु के करनी वरनि वेद गुन गाये
मच्छ रूप धरि संष दनुज दर श्रुति सागर मथि ल्याये

करमहि प्रगट कलेवर धरि के श्रुती वृष्ट पगुधारे
मंदाचल वूड़त गहि राषे षूवी सव विस्तारे
॥ १० ॥

जग्य वराह रुप धरि आयो धरा रदन पर धारे
हरि हरिनाउ राषि छिन मंडल विधि संकट सव टारे
कीरति विसद ठानि करि करनी पूरन अभय विलासा
पूरन सुजस पुरान उपनिषद अैसा षूव तमासा
॥ ११ ॥

हित प्रहलाद षम्भ ते प्रगटे फारि असुर उर नाषै
विकट सरूप देषि व्रह्मादिक जै कीरति सुष भावै
संकट हरन करन जग कारन हरि भक्तन हित आसा
महि मंडल मंडन जस अजहूँ जाहर षूव तमासा
॥ १२ ॥

अद्भुत वावन रूप धारि हरि हरिहिं पताल पठाये
कीरति हेत आपुहीं संकट करे इंद्र मन भाये
द्वारपाल मकु भये हेत जस व्यास पुरान वषानै
जग जुग नाम राषि निज अपने षूव तमासा ठानै
॥ १३ ॥

परसराम पर चंद्र रूप धरि षंड सहस भुज डारे
छत्रिन छेद छत्रपति छै करि छिति कीरति विस्तारे
भजहु सुजस हेत रुचि भूतल कर तपसा का आसा
करनी आप प्रगट प्रतिपालन अैसा षूव तमासा
॥ १४ ॥

॥ सवैया ॥ ॥ १५ ॥
लै अवतार सिरोमनि सुंदर संकट देवन के सव टारे
भाँति अनेगनि सौ करनी करि भूतल भार अपार उतारे
सीय वियोग सरासन है मकु राज सिरी तजि के पगु धारे
कीरति कारन राम कृपा निधि लंक विधंस कै रावन मारे

सीय वियोग सरासन है मकु राज सिरी तजि के पगु धारे
सीय वियोग सरासन है मकु राज सिरी तजि के पगु धारे

॥ दोहा ॥

कृष्ण कलेवर धारि के किय कंसादिक नास
आपु सुकीरति आपुहीं जुग जुग करत प्रकास
॥ १६ ॥

वौध रूप अवगहि रहै दारु व्रह्म सुर ईस
कलकी हतन मलेच्छ कुल वपु धरिहैं जगदीस
॥ १७ ॥

॥ सवैया ॥

है सरवज्ञ सदा शिव जाहर पूरन ज्ञान प्रकास करे है
अंग विभूति दिगम्बर रूपनि व्याल कपाल की माल गरे है
अंग विभूति दिगम्बर रूपनि व्याल कपाल की माल गरे है
सीस जटा जुट गंग विराजत भाल सुधाधर सोभ षरे है
॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

कीरति मंडन सव चिंतामनि करौ ताहि सव हेत
सव सुख जीवन के हितै दूजो पुन्य निकेत
॥ १९ ॥

॥ चौबोला ॥

करनी सरस करम के वाजी जीतहि कोइ न जानै
रहवी ठीक रहै सव अच्छा तव कथनी कौ मानै
याते कर करतूति वेगि जो चाहै लषै लहाजा
षूव षूव कुछ परै ष्याल तौ षूवी कीरति छाजा
॥ २० ॥

कीरत हेत करै सव करनी आप आपने जानै
गुन विवेक मरजाद वेद मति पाप पुन्य पहिचानै

सीय वियोग सरासन है मकु राज सिरी तजि के पगु धारे
सीय वियोग सरासन है मकु राज सिरी तजि के पगु धारे

॥ दोहा ॥

कृष्ण कलेवर धारि के किय कंसादिक नास
आपु सुकीरति आपुहीं जुग जुग करत प्रकास
॥ १६ ॥

वौध रूप अवगहि रहै दारु व्रह्म सुर ईस
कलकी हतन मलेच्छ कुल वपु धरिहैं जगदीस
॥ १७ ॥

॥ सवैया ॥

है सरवज्ञ सदा शिव जाहर पूरन ज्ञान प्रकास करे है
अंग विभूति दिगम्बर रूपनि व्याल कपाल की माल गरे है
अंग विभूति दिगम्बर रूपनि व्याल कपाल की माल गरे है
सीस जटा जुट गंग विराजत भाल सुधाधर सोभ षरे है
॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

कीरति मंडन सव चिंतामनि करौ ताहि सव हेत
सव सुख जीवन के हितै दूजो पुन्य निकेत
॥ १९ ॥

॥ चौबोला ॥

करनी सरस करम के वाजी जीतहि कोइ न जानै
रहवी ठीक रहै सव अच्छा तव कथनी कौ मानै
याते कर करतूति वेगि जो चाहै लषै लहाजा
षूव षूव कुछ परै ष्याल तौ षूवी कीरति छाजा
॥ २० ॥

कीरत हेत करै सव करनी आप आपने जानै
गुन विवेक मरजाद वेद मति पाप पुन्य पहिचानै

न्याय नीति विद्या परिपूरन षलक करै को लेषा
स्वारथ लाग सकल जग प्रानी कोई परमारथ देषा
॥ २१ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

जाहर जहान ससि भानु लौं सुजस राजै
छाजै छिति मंडल मैं पानि मैं कृपान है
जीति जीति वाजी साक आपनै चलाये जो
वांधे मरजाद सौ तौ आजु लौ वषानि है
पूरन प्रताप तेज सिद्धि की सकति करि
मंडित प्रसिद्ध कला रूप के प्रवानि है
कहत गोपाल सुनौ भूतल के भारी भूप
कहिवे को मरवो की कीरति निसानि है
॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

कीरति साषी सवनि कौ सुनि सुनि सवन उमेद
तातै ताहि न भूलिये सकल सार कौ भेद
॥ २३ ॥

ज्यो करनी सव जग करै त्यों कीरति वस होइ
विनु करनी वातनि सिरफ श्रवनि सुनै नहि कोइ
॥ २४ ॥

॥ चौबोला ॥

जे नर पाइ देह वसुधा में करै न करनी जानै
तिनको जन्मजात ना जग में कौन केहि पहिचानै
विना करम के इहि वसुधा में जीवन होत अलेषा
निपट अलाल अधम अपराधन षूव अकीरति देषा
॥ २५ ॥

है कलिकाल कठिन अति करनी करन ताहि को जानै
आपुहि अधिकै मानि सिरोमनि सतगुरु सीष न मानै

जानै सुनै कहै सव वातैं आपुहि अधिक सयाना
होत षराब मगज तै अपने षूवी षेल न जाना
॥ २६ ॥

पचि पचि कोटि भाँति परपंचनि पच्यो मूर्ख सठ प्रानी पचत महा पाषंड डम्भ तै आडम्बर करि जानी
वढ़त न धीर धर्म तप साधन घटत सकल मन ऊवी करनीहीन कर्म गति विगरी लहै न करनी षूवी

॥ २७ ॥

आलस नींद भूष त्रिष्णा वस त्रिपत कबहु नहिं मान्यो
लालच जोर धरे घट विग्रो कपट सत्य करि जान्यो
विषम कलेस आपु करि लीन्हें को संकट को लेषा
अंतर नैन षोलि तिन अपने षूवी कवहुँ न देषा
॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

विन पौरुष पुरुषारथी सुने होत नहिं कोइ
पौरुष साहस सिद्धि तैं पुरुष सो कीरति होइ
॥ २९ ॥

॥ सवैया ॥

कौन करे परमारथ को करि स्वारथ पेट भर्‌यो परि सोयो
संगत ज्ञान विहीन कियो अति आगम वीज वहै फिर वोयो
हौंस कियो न वढ़ै सुष सम्पत राज मिलै न निसा दिन रोयो
कीरति कौ करनी न कर्‌यो कछु मानुष जन्म अकारथ षोयो

॥ ३० ॥

॥ घनाक्षरी ॥

अवनी मैं राजा रजपूत है रजीले तेके
राज सव धरम तरन मेल रत है
षसि षसि जात षेत संकन सरीर नेक
जीति जीति वाजै वाजै मरदानै लेत

जीति जीति वाजै वाजै मरदानै लेत
कहत गोपाल टेक टारे न टरत है
मामला परे तै मान राषत गोमान भरे
कीरति के हेत करतूति कौ करत है
॥ ३१ ॥

॥ चौबोला ॥

कीरति करत सवै करनी कौ कहाँ रंक कह राजा
जितने भरि परिमान जाहि कौं वढ़ै तितौ भरि छाजा
सव तैं कठिन धर्म छत्रिन कौं समर सार करना है
जात अवनि पर राषि सयानी लै षूवी कौ लाहै
॥ ३२ ॥

कीरति अमर अवनि पर सुंदर अधिक दिनौं दिल राजै
राज पाट धन धाम वाम नर नहि आवत कई काजै
तासों हेत सदा दिन करिये जासों वढ़ै दिलासा
रहै निसान धरनि दिल केते जाहर षूव तमासा
॥ ३३ ॥

कीरति सार तिनहिं के कहिये जिनहि सुकोविद गावैं
सुमिरत नाम निपट संकट मैं विघन निकट नहिं आवैं
ध्रुव प्रहलाद सगर भागीरथ नल हरिचंद विसेषै
रामचंद्र हनुमान हठीला षूव तमासा देषा
॥ ३४ ॥

॥ सवैया ॥

दान सुधा जल ते जिन सींच
सतोगुन वीज विचार जमायौ
वाढ़ि गयो नभ मंडल लौं
महिमंडल घेरि दसों दिसि छायो

फूल घने परमारथ फूलनि
पुन्य वड़े फल तै सरसायो
कीरति वृच्छ विसाल गोपाल
सुकोविद वृंद विहंग वसायो
॥ ३५ ॥

पूरन ज्योति प्रकास विलास
लसै जलहूँ थल मैं अधिकारी
मंडल सूरज मंडल की छिति
मंडल मंडप यूष पसारी
भूतल फैल रसातल सूतल
नाक तलातल लौछ विधारी
आनंद कंद गोपाल विराजत
कीरति गोकुल चंद तिहारी
॥ ३६ ॥

॥ चौबोला ॥
अति के वड़े करत चतुराई गये वड़े विष यामें
निकसे अंधकूप मैं कासौं महाँ कठिन भै जामें
गह्यो न राम नाम अवलम्बन काम वाम विसवासा
जालिम लागत वेद जनम के अैसा षूव तमासा
॥ ३७ ॥

॥ दोहा ॥
कीरति दान प्रताप ते होत विसद विस्तार
परकाजी पुरषारथी परम दयाल उदार
॥ ३८ ॥

॥ चौवोला ॥
परम दयाल दीन जन दाता परमारथ हितकारी
सत्या सरस सत्य उन संजुत सत्य सुलोक वहारी

विधि विवेक विद्या हित कोविद सकल ज्ञान गुनदाता
कीरति अवनि अमर तिन राजत षूवी दिया विधाता
॥ ३९ ॥

॥ कवित्त ॥

कीरति सौं जाकौ सनेह श्री गोपाल कवि
सोई तौ सभा मै वेस भागे सोभा देत है
थोरे उनमान थोरे दान सो सुमेर देत
रहत निसानी सो तौ जुगनि समेत है
तंदुल कित साक अरु वदरी मलय रज
कीन्हें धुज श्रीपति कहौ धौ कहेत है
केवल सुभाव सति भाई के प्रभाव करि
भवन अनेक भारी जीति जस लेत है
॥ ४० ॥

॥ दोहा ॥

वत्तिस लच्छन मै भये जे भुवपाल विचित्र
तिनके कहत प्रभाव को सुनौ सभापति मित्र
॥ ४१ ॥

प्रथम करै कुलधर्म कौ जातैं रहै कुलीन
कुल कौ हरे कलंक कौं सो कुलवंत प्रवीन
॥ ४२ ॥

जो जितने भरि सील कौं तितनौ भरि तिहि अच्छ
निरषत ही मन को हरै सीलवंत कौ लच्छ
॥ ४३ ॥

सुंदर अंग सुहावनो सदा सरीर निरोग
सुचि रुचि लच्छन सौं कहै रूपवंत सव लोग
॥ ४४ ॥

॥ चौबोला ॥

अंग अंग अभिराम मनोहर काम केलि रस रंगै

संजम नियम जुगति रुचि भोजन सुष मानै सतसंगै
सदा निरी रनि रोस सकल अरु धात पुष्ट मद छाजा
सो देषै जग षूव तमासा रूपवंत कहि राजा
॥ ४५ ॥

॥ दोहा ॥

जानै सव रस स्वाद कौ पर नर कैसे लीन
राषै सदा सनेह कौं सो गोपाल प्रवीन
॥ ४६ ॥

॥ सवैया ॥

जानत स्वाद सवै रस को भरि
भाँति अनेगनि सौ हित ठानै
राजस रीति समै हि सवै गुन
सार असार हिये पहिचानै
ज्ञान विवेक विचार गुनै गुन
प्रीति गोपाल प्रताप प्रमानै
ये सव लच्छन ते छित मंडल
जानहु भूप प्रवीन वषानै
॥ ४७ ॥

॥ दोहा ॥

सरवस हारै फिर भरै तजै न सत्य सरीर
चार्‌यो जुग गोपाल हितै सत्याधिक ते वीर
॥ ४८ ॥

॥ घनाच्छरी ॥

हारि डार्‌यो सर्वस सुमामला परै न जोर
राषै अति मान आप करत सुकाज है
साहस समेत फेर वरवाजी लेत लेत
लाष भाँति साहिवी तै कर्‌यो सुसमाज है

कीरति विसाल तिन कहत गोपाल कवि
कर करतूति घनै राषै कुल लाज है
सकल कलानि परिपूरन प्रताप सिधि
दासी मैं सत्याधिक सोइ नृप राज है
॥ ४९ ॥

॥ दोहा ॥

सकल सार संग्रह करै राषै सोच अपार
तसों कहिये संग्रही सेवै सव संसार
॥ ५० ॥

॥ कवित्त ॥

भूषन वसन बहु सिलह संजोह सार
हाथी औ सिपहसलार राजन कौ चाहिये
देस को सरैयत वन चोरौ अवर वल
जानि कै जहाँ सु जौन सोच निरवाहिये
जानै गोपाल कवि पारग सुवेद मंत्र
जोतिषी सुमंत्री मित्र सुभाते सुजाहिये
सवही को संग्रह सदाहि जे करत राज
सौंई राधा रानी राजा संग्रही सराहिये
॥ ५१ ॥

॥ दोहा ॥

मुँह ते जद कहि जाइ नहीं सो का जानै कर्म
पौरुष भर हारै नहीं पराक्रमी निज धर्म
॥ ५२ ॥

भ्रमन करै मन भ्रमर सम विविधै विषै अनंत
मति सो जीतै मेदनी सो मंत्री मतिवंत
॥ ५३ ॥

॥ कवित्त ॥

कहत गोपाल महाँ मंत्र जे महीप महाँ
राज परराज मै सु काजहि को जानि है
देस काल देषि कै विचारियै उदार वीर
दावादार दल मत वाजी ठीक ठानिहै
सालिम प्रताप तेज जालिम जगत पर
कीरति के हेत करतूति अधिकानी है
सावधान सुमति सुजान सव ठौरनि में
तेई महिमंडल मैं भूप मरदानी है
॥ ५४ ॥

॥ दोहा ॥
निद्रा छुधा अहार सुचि आतम तत्त्व प्रकास
सरसाधन जल पवन है अभ्यासित अभ्यास
॥ ५५ ॥

॥ सवैया ॥
जागत सोवत एक समान
अहार विहार सुभाइ भरे हैं
जीति जिनौ दस वार करै वस
जाहिर जेतक जान परे हैं
राज सिरी मय साज जितै
रचना रचने न कछू जु किये हैं
सोइ गोपाल धराधिप भूतल
साधि सवै जिन सिद्ध किये हैं
॥ ५६ ॥

॥ दोहा ॥
पर दारा सौ अति रस रसै वंस आदि वल नास
निजु भानिन सौं रस रसै वाढ़ै वंस विलास
॥ ५७ ॥

जे मन धरे सो सब करै महतन पावै जान
मानै महाँ मनात जै सो माली परिमान
॥ ५८ ॥

॥ चौबोला ॥
जो नहि पैर धरै धरनी पर सो पैजहि प्रति पालै
कबहुँ न होइ आपनो वैरी अरु सो महत न घालै
जिनके मान महाँतम बानै विरद लाज का छाजा
सो देषै जग षूब तमासा सजि राजन के राजा
॥ ५९ ॥

॥ दोहा ॥
सास्त्र भेद जानै सुनै कहै चलै तिहि चाल
ये लच्छन सास्त्रज्ञ के कहै रीति गोपाल
॥ ६० ॥

दुष्ट भाव ते दुष्टता दुष्टनि करै विनास
शुद्ध भावना देषि कै दुर्जन रहै न पास
॥ ६१ ॥

पति विचित्र नागर कला सब के चित हरि लेत
सो विचित्र मति जानियै अपनो भेद न देत
॥ ६२ ॥

॥ अरिल्ल ॥
सब रस नागर अंग विज छन जानिये
नैननि ही लषि प्रीति पहिचानिये
आपु अंत नहिं देहि लेइ सब अंत है
परिहा सो नरनाह महा मतिवंत है
॥ ६३ ॥

॥ दोहा ॥
सकल भलाई ते सबै करै सदा प्रतिपाल
सबको भावै सबै दिन सो सज्जन गोपाल ॥६४॥

॥ सवैया ॥

पालत पाल प्रमान प्रतापहि
हर दरदै जग को दुष दंदै
दीनन को कलपद्रुम होकै
दान विधान ते आनंद कंदै
भावत है सवको सव भांतिन
भाव अभावन को तजि छंदै
भज्जहिं दुर्जन सज्जहिं भूपहि
छाँड़ि कै मान सबहि कौ वंदै
॥ ६५ ॥

॥ दोहा ॥

काम केलि चतुरंग अति सुल्प सुरत रस रंग
विंदु अकत्थन षोइये सो कामिन चतुरंग
॥ ६६ ॥

नैन वैन चितवन चलत वसन होइ रस प्रीति
वल विद्या उद्वेग नहिं इंद्री जीत अजीत
॥ ६७ ॥

॥ चौबोला ॥

वोलन हसन चितौन माधुरी मन कौ सव हरि जानै
वसि न होइ काहूँ सो कबहूँ प्रीति रीति पहिचानै
वल विद्या उदवेग होइ नहिं हिंसै सकल विलासा
इंद्रीजीत अजीत भूप सो देषै षूव तमासा
॥ ६८ ॥

॥ दोहा ॥

भोजन रुचि सुचि सों करै रहै निरोग सरीर
अनषाये षाये वली अलप अहीरी धीर
॥ ६९ ॥

॥ चौबोला ॥

जानै सकल अहार हेत कौ रुचि रुचि सौहित मानै
सिंघ समान देहवल साहस सर औसर कों जानै
वपुनि रोग निहसंक सदा दिन लघु अहार वहु छाजा
प्रवल प्रतापवान सो राजा देषै षूव लहाजा
॥ ७० ॥

॥ दोहा ॥

जासो मति हित की लहै पूरन ग्यान प्रमान
चित राषै गुरु भक्ति मै सो गुरु भक्ता जान
॥ ७१ ॥

करै सोच परलोक कौं परमारथ सरवग्य
साधै धर्म सनातनै सो कहिये धरमग्य
॥ ७२ ॥

आतम दया उदारता सत साहस मत सार
देत साधु के धर्म को सो कहिये दातार
॥ ७३ ॥

॥ सवैया ॥

जीव दया जिनके सतसंगत
दोष विना नहिं रोष जनावै
सम्पति होइ कि जाइ सवौ कव
सत्य डगै न तजै न सुभावै
सातुक भावन तै हित संतत
राजस तामस चित्त न लावै
रीति गोपाल यहै जिनकी
सोइ भूपति भूतल दान कहावै
॥ ७४ ॥

॥ दोहा ॥

प्रनधारी माता पिता करै न अग्या भंग

ते कुलमंडन पुत्र हैं जिनके ज्ञान तरंग
॥ ७५ ॥

॥ चौबोला ॥
धर्म लोक कुल धर्म धीरता आतम ग्यान विचारै
मात पिता गुर भक्ति भाव नित पुरन प्रेम पन धारै
जग्य दान पूजा रस संतत सतसंगत हित रष्षै
सोई वंस सिरोमनि राजा षूव तमासा लष्षै
॥ ७६ ॥

॥ दोहा ॥
परपीरक परमारथी अति गोपाल सनेह
पर उपकारी जानिये परमेस्वर को देह
॥ ७७ ॥

॥ चौबोला ॥
परपीरक पूरन परमारथ कुपथ कवहुँ नहिं चालै
षंडन करहि सकल पार्षंडहिं षल सवकों उर सालै
सत्य दान विद्यारत संतत हरि भक्तिन सौं नेहै
सो भूपति जानै महिमंडल परमेस्वर को देहै
॥ ७८ ॥

॥ दोहा ॥
देव मंत्र आराधना साधन तत्त्व विचार
वरदायक गोपाल सों साँचे पूजन हार
॥ ७९ ॥

॥ चौबोला ॥
जंत्र मंत्र नाटक वहु चेटक साधि सिद्ध करि जानै
साधनवीर विविध वल पूजा यह जप निग्रह षानै
अैसे भूप भये विक्रम सों ये लच्छन जिन लेषै
साहसीक निहसंक धराधिप षूव तमासा देषै
॥ ८० ॥

|| दोहा ||

उद्वेगी वहु अर्थ कौ व्यर्थ न पीवै कोई
स्वारथ परमारथ लहै उत्तिम भोगी सोई
|| ८१ ||

|| कवित्त ||

जाहर जहान पर कीरत अमल राजै
राजै रजधानी रजताई कै गुमान है
कै करतूति भोग मेदिनी करत दिन
कामना के कामन कौं कल्पना वान है
कहत गोपाल प्रतिपालन कौ पैज करैं
स्वारथ के हेत परमारथ को दान है
अमित प्रयोगन ते अवनी प्रकासमान
उतपत भोगी सोई भूपति प्रवान है
|| ८२ ||

|| इति श्री राजा राजसिंघ मनि चानक गोपाल विरचितायां कीरतिसतकं समाप्तम् ||

योगाचार्य डॉ. शेषनारयण चंदेले का व्यकित्व व कृतित्व

डॉ. चंदेले का जन्म १० अपैल सन् १९३४ में बेमेतरा, तत्कालीन जिला दुर्ग में हुआ था। उनकी शिक्षा बेमेतरा, रायपुर, व नागपुर के हिस्लॉप कालेज में हुई थी। उक्त कालेज में उन्होंने संस्कृत विषय ले रखा था। उसी कालेज में श्री माधव गोविंद वैद्य जी संस्कृत विषय के प्राध्यापक थे। चंदेले जी संस्कृत विषय ले रखे थे। अतः, उनके सम्पर्क में आना उनके लिए स्वाभाविक था। श्री वैद्य जी आर. एस. एस. के प्रमुख भी रहे। कालेज से निकलने के बाद भी डॉ, चंदेले का कई वर्षों तक उनसेपत्र-सम्पर्क बना रहा। अखबारोंमें अभी भी वेकभी-कभार छपते रहते हैं।

योगाचार्य, डॉ. शेषनारायण ने सन् १९७४ में पी.एच. डी. की। उनका विषय था- 'गोपाल मिश्र की कृतियों का आलोचनात्मक अध्ययन।' डॉ. चंदेले जीवन भर शिक्षक व प्राध्यापक रहे। एक साल धमतरी में तथा अम्बागढ़ चौकी में२१ साल तक महाविद्यालय के प्रोफेसर रहे। वे आध्यात्मिक साधक हैं। क्रियायोग से जुड़े हैं। सन् ७० से उनकी साधना चल रही है। सन् २००४ से वे योगाचार्य हैं। वे हिंदी साहित्य के लेखक हैं। गद्य व पद्य, दोनों में उनका समान अधिकार रहा है। उन्होंने २० पुस्तकें साहित्य की व १३ पुस्तकें अध्यात्म की लिखी हैं। उनका गद्य काव्य 'प्रमदवन' सर्वाधिक लोकप्रिय रहा है। हिंदी साहित्यकार पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी ने उसकी भूमिका लिखी है। डॉ. चंदेले बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। संगीत में उन्होंने 'संगीत विद्' की उपाधि ली है।

ISBN : 978-93-82313-32-8

छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय परिसर
सामुदायिक भवन के सामने
रायपुर 492010 (छत्तीसगढ़) दूरभाष : 0771-2262015
ई-मेल :- cgrhga@gmail.com